द्वितीयो भागः
दशमकक्षायाः संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

सम्पादक
कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण ISBN 81-7450-156-8

फरवरी 2003

फाल्गुन 1924

PD 5T DRH

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	निकट : धनकल बस स्टॉप
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	पनिहटी, कोलकाता 700 114

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश

उत्पादन : डी. साई प्रसाद

अरुण चितकारा

चित्र : पी.के. सेनगुप्ता

आवरण : बालकृष्ण

रु. 40.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट, 132, मौहम्मदपुर नई दिल्ली 110 066 द्वारा मुद्रित।

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम–पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिक–विज्ञान–मानविकी–शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपम् संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमवर्गीयच्छात्राणां कृते प्रमुखेभ्यः गद्य–पद्य नाटक–ग्रन्थेभ्यः प्रतिनिधिभूतान् पाठ्यांशान् संकलय्य यथोचितं सम्पाद्य, वृक्षारोपणमहत्त्व, भूकम्पविभीषिका महापुरुष विषयकांल्ललितनिबन्धमयान् च पाठान् विरच्य भूमिका–टिप्पणी– प्रश्नाभ्यास–योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते **प्रज्ञा (द्वितीयो भागः)** नाम पाठ्यपुस्तकम्। अत्र संस्कृतसाहित्यस्य विविधविधानां गद्य–पद्य–नाटकानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलाना विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। छात्राः संस्कृते निहित जीवनोपयोगिज्ञान संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयुः तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेत् एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत–शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः

नवदेहली
फरवरी, 2003

1. प्रो विद्यानिवास मिश्र
पूर्व कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
उत्तर प्रदेश

2. प्रो आद्याप्रसाद मिश्र
पूर्व कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश

3. डॉ राजेन्द्र मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
उत्तर प्रदेश

4. प्रो मानसिंह
सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्ष
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
हरियाणा

5. डॉ योगेश्वर दत्त शर्मा
रीडर, संस्कृत
हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

6. श्रीमती सन्तोष कोहली
अवकाशप्राप्त उपप्रधानाचार्या
सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्क्लेव
रोहिणी, दिल्ली

7. डॉ विजय शुक्ल
शोध अधिकारी
इ गाँ रा क केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली

8. श्रीमती सत्या महे
पी जी टी, संस्कृत
रा क व मा. विद्यालय
शकूरपुर न 1, दिल्ली

9. डॉ छविकृष्ण आर्य
पी जी टी, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली

10. डॉ पुरुषोत्तम मिश्र
टी जी टी, संस्कृत
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

11. डॉ सुगन्ध पाण्डेय
टी जी टी, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, बी.एच.ई.एल कैम्पस, हरिद्वार

12. श्रीमती लता अरोरा
टी जी टी, संस्कृत,
केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर–IV,
आर के पुरम्, नई दिल्ली

13. श्रीमती रेखा झा
टी जी टी, संस्कृत
दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल
सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

14. श्रीमती आभा झा
टी जी टी, संस्कृत
सर्वोदय, कन्या उ. मा विद्यालय
जे–ब्लाक, साकेत, नई दिल्ली

15. डॉ रामप्रकाश शर्मा
टी जी टी, संस्कृत,
केन्द्रीय विद्यालय,
एयरफोर्स स्टेशन, बवाना, दिल्ली

16. श्रीमती उर्मिल खुंगर
सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर, संस्कृत

17. डॉ कृष्णचन्द्र त्रिपाठी
रीडर, संस्कृत

18. डा. कमलाकान्त मिश्र **(संयोजक)**
प्रोफेसर, संस्कृत

सस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। श्रद्धावश लोग इसे देववाणी या सुरभारती भी कहते रहे है जिसका अर्थ है देवताओं की भाषा। पुरातन काल से ही यह भारतीय संस्कृति, सभ्यता एव चिन्तन का मूल आधार मानी जाती है। धर्म, दर्शन, भूगोल, राजनीति एवं इतिहास का मूलस्रोत होने के साथ ही साथ सस्कृत भारतवर्ष का गौरव एव प्राण है। दर्शन एव साहित्य के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं वास्तु विज्ञान के मौलिक ग्रन्थ भी इसमे उपलब्ध हैं। यह मानवता के कल्याण के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सारी पृथ्वी एक परिवार है) की घोषणा करती है। इसमें कहा गया है --

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाक् भवेत्।।

सस्कृत साहित्य में सत्य, अहिसा, राष्ट्रभक्ति, परस्पर सहयोग, त्याग एवं विश्वबन्धुत्व की भावनाओं का अजस्र स्रोत प्रवहमान है। इसीलिए यह जनमानस की संयोजिका भी है। इसमें वैदिक काल से ही साहित्य का सृजन हो रहा है जो आज भी निरतर गतिमान है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे जितने ग्रन्थ इसमें लिखे गए हैं उतने किसी अन्य प्राचीन भाषा में नहीं मिलते है। जिन दिनों लिखने के साधन विकसित नहीं थे उन दिनों मे भी इसकी रचनाएँ मौखिक परम्परा से चलती रही हैं।

आधुनिक काल के भारतीय साहित्य का अधिकांश भाग संस्कृत साहित्य की देन है। इसीलिए इसे भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका भी कहा जाता है। संस्कृत के व्याकरण एवं वाक्य-रचना का प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं पर स्पष्ट परिलक्षित है। यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में सस्कृत का विशिष्ट योगदान है। अतः भारतीय भाषाओं को विकसित करने, राष्ट्रीयता को सशक्त

करने तथा विश्वबन्धुत्व की भावना को पुष्ट करने के साथ ही साथ भारत की आत्मा को समझने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है।

संस्कृत भाषा में उपलब्ध वाङ्मय अत्यंत विशाल एवं समृद्ध है। इसके साहित्य को दो भागों में रखा जा सकता है – (1) वैदिक वाङ्मय, तथा (2) लौकिक साहित्य। वैदिक वाङ्मय वैदिक भाषा मे तथा लौकिक साहित्य संस्कृत मे प्राप्त होता है। वैदिक वाङ्मय के विकास का समय 6000 ई. पू. से 800 ई. पू. तक माना जाता है। इस अवधि में विरचित वाङ्मय के अन्तर्गत **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक** तथा **उपनिषद्** ग्रन्थ आते हैं। संहिताओं में वैदिक मंत्रों का संग्रह है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** संहिता कहलाते हैं। संहिताओं मे जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्डपरक व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को **ब्राह्मण ग्रन्थ** कहा जाता है। चारों संहिताओं में संकलित मंत्रों की व्याख्या अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है। **ऐतरेय** तथा **कौशीतकि** ऋग्वेद से सम्बन्धित, **शतपथ** तथा **तैत्तिरीय** यजुर्वेद से सम्बन्धित, **ताण्ड्य** तथा **षडविंश** सामवेद से एवं **गोपथ** अथर्ववेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ है। ऋषियों के वैदिक कर्मकाण्ड से सम्बद्ध चिन्तनप्रधान ग्रन्थ **आरण्यक** कहे जाते हैं।

वैदिक साहित्य के ज्ञान-प्रधान अंश को उपनिषद् कहते हैं। वैदिक वाङ्मय के अन्तिम भाग होने के कारण इन्हें '**वेदान्त**' भी कहते है। इनमें आत्मा, जीव, ईश्वर तथा ब्रह्म विषयक प्रौढ ज्ञान का विवेचन है। प्रसिद्ध उपनिषद् 12 हैं किन्तु कालान्तर में शताधिक उपनिषदों की रचना हुई। वैदिक साहित्य से सम्बद्ध शास्त्रों को वेदाङ्ग कहा जाता है। यास्क के मतानुसार वैदिक मंत्रों को समझने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए वेदाङ्गों की रचना की गई। वेदाङ्ग छ: हैं – **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष।** उच्चारण शास्त्र को **शिक्षा** कहते हैं। यज्ञ सम्बन्धी **विधान** प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ **कल्प** कहे जाते हैं। वेदो के मुख को **व्याकरण** कहा गया है। इसमें पदों की व्युत्पत्ति बतलाई गई है। वैदिक मंत्रों के शब्दार्थ को समझाने वाले ग्रन्थ **निरुक्त** हैं। पद्यबद्ध वैदिक मंत्रों के नियामक वेदाङ्ग **छन्द** हैं और काल, ग्रह, नक्षत्रादि का निर्धारण करने वाला वेदाङ्ग **ज्योतिष** है।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु।।

वेदाङ्गों को वेदपुरुष के अङ्ग के रूप में इस प्रकार कल्पित किया गया है – शिक्षा को वेदपुरुष की **नासिका**, कल्प को हाथ, ज्योतिष को **आँख**, निरुक्त को **कान**, छन्द को **पैर** तथा व्याकरण को **मुख** कहा गया है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।।

वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य के बीच की कड़ी **पुराण** माने जाते हैं। पुराणो में वैदिक प्रतीक तथा पुरातन घटनाओं का वर्णन मिलता है। सामान्यरूप से व्यास को सभी पुराणों का रचयिता माना गया है। सम्भवतः पुराण साहित्य के समस्त रचनाकारों को **व्यास** कहा गया है। पुराण का लक्षण है –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

अर्थात् सृष्टि, प्रलय, वंशावली, मन्वन्तर (अर्थात् किस मनु का समय कब रहा तथा उस काल की प्रमुख घटनाएँ क्या थी) तथा राजाओं की वंश परम्परा का वर्णन ही पुराणों के वर्ण्य विषय रहे हैं। पुराणों को इतिहास के रूप मे भी देखा जा सकता है जिसका उद्देश्य समाज में सद्वृत्तियों की प्रेरणा प्रदान करना है। 18 मुख्य पुराण तथा 18 उपपुराण हैं। मुख्य पुराण –

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापल्लिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

अर्थात्

मकार से दो पुराण	–	**मत्स्य एवं मार्कण्डेय।**
भकार से दो पुराण	–	**भविष्य और भागवत।**
'ब्र' से तीन पुराण	–	**ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त एवं ब्रह्म।**
वकार से चार पुराण	–	**वामन, वराह, विष्णु एवं वायु।**
अकार से एक पुराण	–	**अग्नि पुराण।**
नकार से एक पुराण	–	**नारद पुराण।**

पकार से एक पुराण — **पद्म पुराण।**
लि से एक पुराण — **लिङ्गपुराण।**
गकार से एक पुराण — **गरुड़ पुराण।**
कूकार से एक पुराण — **कूर्म पुराण।**
'स्क' से एक पुराण — **स्कन्द पुराण।**

इसके अतिरिक्त **नृसिंह, कालिका, साम्ब, पराशर** तथा **सूर्य** प्रमुख उपपुराण माने जाते हैं। पुराण साहित्य भी परवर्ती कवियों के उपजीव्य तथा प्रेरक रहे है।

संस्कृत साहित्य के विकास की परम्परा मे नए अध्याय का श्रीगणेश आदिकवि वाल्मीकि से होता है जिन्होने मर्यादापुरुषोत्तम राम के चरित्र को केन्द्रबिन्दु मानकर **रामायणम्** की रचना की। यह भारतीय संस्कृति का दर्पण ग्रन्थ है। इसका वर्णन सात काण्डो (बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध तथा उत्तर काण्डो) मे हुआ है। इसी तरह कौरवो एव पाण्डवों के जन्म से लेकर स्वर्गगमन तक की कथा का वर्णन करते हुए वेदव्यास ने महाभारत नामक महाग्रन्थ की रचना की, जिसमें मानव जीवन की प्रत्येक स्थिति का स्पष्ट चित्रण है। अनेक आख्यानो एव उपाख्यानों से युक्त इस महाग्रन्थ में वर्णित तत्कालीन समाज की जीवन पद्धति आज भी जनमानस को दिशानिर्देश करती है। इसकी सम्पूर्णता के विषय में कहा जाता है कि **"यन्न भारते तन्न भारते"** तथा **"यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्"** अर्थात् जो कुछ इसमे है वह अन्यत्र भी है किन्तु जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है। 18 पर्व मे विभक्त इस महाग्रन्थ मे एक लक्ष श्लोक है। इसको **शतसाहस्री** भी कहा जाता है। रामायण और महाभारत उपजीव्य ग्रन्थ हैं जिन्हें आधार मानते हुए परवर्ती कवियों ने अनेक रचनाएँ की है।

इसी क्रम मे कविकुलगुरु कालिदास के अभ्युदय से लेकर 19वी शताब्दी के पंडित अम्बिकादत्त व्यास तक अनेक कवियों एवं महाकवियों की असंख्य रचनाएं (महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नीतिकथा, चम्पू, नाटक तथा शास्त्रीय ग्रन्थो के रूप मे) प्रकाश में आयी। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक कोश, छन्द, व्याकरण दर्शन, राजनीति, नीति, शिल्प, रत्न, चिकित्सा एवं काव्य ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की गौरवमयी परम्परा भी संस्कृत वाङ्मय को समृद्ध बनाती हैं।

19वीं शताब्दी के अनन्तर भी संस्कृत कवियो एव उनकी कृतियों की विपुल ग्रन्थराशि निरन्तर प्रकाश में आ रही है जो संस्कृत वाङ्मय को जीवन्त एवं समृद्ध कर रही है।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा 2000 के आलोक मे माध्यमिक स्तर पर (कक्षा 9 -10 के लिए) वैकल्पिक विषय के रूप में विकसित संस्कृत पाठ्यक्रम के अनुरूप कक्षा 10 के लिए **प्रज्ञा द्वितीयो भागः** का प्रणयन किया गया है। छात्रों के संस्कृत ज्ञान को पुष्ट करने, उनमे राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर नैतिक मूल्यों के विकास हेतु इसमें संस्कृत वाङ्मय की प्रसिद्ध रचनाओं पञ्चतन्त्र, विदुरनीति. (महाभारत), सुश्रुतसंहिता, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, भामिनीविलास, कादम्बरी तथा पञ्चरात्रम् से पाठ्यांश लिए गए हैं। **वन्दना** में ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद से मन्त्र सकलित हैं। संस्कृत कवियों के कतिपय सद्वचनों को **अमृतविन्दवः** नामक पाठ के अन्तर्गत संगृहीत किया गया है। **वृक्षारोपणमहत्त्वम्** नामक पाठ मे बृहदारण्यक उपनिषद् से दो मत्र उद्धरण के रूप में लेकर पाठ को विशेष उपयोगी बनाया गया है।

प्रस्तुत संकलन में कुल 12 पाठ रखे गए है जिनमें 9 पाठ उपर्युक्त ग्रन्थों से तथा तीन पाठ निबन्ध के रूप में समाविष्ट किए गए है। पाठ्यांशों को यथासंभव मूलरूप में ही लिया गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए उन्हें यथायोग्य सम्पादित कर सरल करने का प्रयास किया गया है। तीन पाठ (**स्वामी विवेकानन्दः, वृक्षारोपणमहत्त्वम्** तथा **भूकम्पविभीषिका**) ललित निबन्ध के रूप में लिखे गए हैं। संस्कृत वाङ्मय के जिन ग्रन्थों से पाठ्यांश लिए गए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. पञ्चतन्त्रम् – नीति की शिक्षा देने वाले संस्कृत कथा-ग्रन्थों में पञ्चतन्त्रम् का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी रचना विष्णुशर्मा ने महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरसिंह के तीन मूर्ख पुत्रो को छः मास में राजनीति और व्यवहार में पटु बनाने के लिए की है। मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक इसके पॉच तन्त्र या खण्ड हैं। इसमे कुल सत्तर कथाएं मिलती हैं। इस ग्रन्थ में कथाओ को परस्पर

गूँथकर इस प्रकार रखा गया है जिससे एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत हो जाता है। एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत करना इसकी प्रमुख विशेषता है। पञ्चतन्त्र का स्वरूप गद्य–पद्यात्मक है। सामान्य रूप से कथा गद्य में है तथा नैतिक शिक्षा पद्य में वर्णित है।

2. मुद्राराक्षसम् – विशाखदत्त द्वारा रचित इस नाटक में सात अंक हैं। **मुद्रा** के द्वारा राक्षस को वश मे करने के कारण इसका नाम मुद्राराक्षस है। नन्द राजाओं का विनाश करने के बाद चाणक्य चन्द्रगुप्त को राजसिंहासन पर आरूढ़ कराता है। अपनी कूटनीति के बल पर वह नन्दवंश के स्वामिभक्त अमात्य राक्षस को चन्द्रगुप्त का मंत्री बनने के लिए विवश कर देता है। इस कार्य मे चाणक्य की गुप्तचर व्यवस्था तथा राक्षस की मुद्रा से अंकित–एक लेख की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें चाणक्य की कूटनीति तथा राक्षस की साधारण नीति के बीच हुए राजनीतिक द्वन्द में चाणक्य की विजय होती है। चाणक्य के त्याग और राष्ट्रभक्ति का आदर्श अनुकरणीय है।

3. विदुरनीतिः (महाभारत) – संस्कृत साहित्य के उपलब्ध नीतिग्रन्थो में विदुरनीति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें महात्मा एवं ज्ञानी विदुर के लोकोपयोगी सद्‌विचारों एवं नीतियो का संग्रह है। इसमें नौ अध्याय हैं। महात्मा विदुर के वचन मानव-मात्र के दैनिक जीवन में आने वाली विसंगतियों का समाधान प्रस्तुत करते हैं। विदुरनीति वास्तव में महाभारत का ही अंश है। एक लाख श्लोकों में वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इसे **शतसाहस्रीसंहिता** तथा पंचम वेद भी कहा जाता है। यह धर्म, राजनीति तथा दर्शन का अद्‌भुत कोश है जिसमे कौरवों और पाण्डवों के बीच हुए युद्ध का सविस्तार वर्णन है। इसमें पाण्डवों की ओर से मन्त्रात्मक सहायता करने वाले कृष्ण की प्रमुख भूमिका थी। अतएव इस ऐतिहासिक काव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। यह ग्रन्थ 18 पर्वों में विभक्त है– (1) आदि, (2) सभा, (3) वन, (4) विराट, (5) उद्योग, (6) भीष्म, (7) द्रोण, (8) कर्ण, (9) शल्य, (10) सौप्तिक, (11) स्त्री, (12) शान्ति, (13) अनुशासन, (14) आश्वमेधिक, (15) आश्रमवासिक, (16) मौसल, (17) महाप्रस्थानिक, तथा (18) स्वर्गारोहण। इसके परिशिष्ट के रूप में **हरिवंश पर्व** है। इसकी पृष्ठभूमि पर आधारित आगे चलकर अनेक ग्रन्थों की रचनाएँ हुई हैं।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – यह महाकवि कालिदास की अमर नाट्यकृति है। सात अंकों वाले इस नाटक मे हस्तिनापुर नरेश दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। इसका चतुर्थ अंक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उसमें भी वर्णित चार श्लोक अतिविशिष्ट महत्त्व के हैं। अभिज्ञान शब्द का अर्थ है पहचान। दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त शकुन्तला को भूल जाता है। जिससे शकुन्तला को भारी कष्ट उठाना पडता है। अन्त मे अंगूठी (अभिज्ञान) के मिलने पर उसे शकुन्तला का स्मरण आ जाता है। सातवें अक मे इन्द्र के निमन्त्रण पर राक्षसों का वध कर लौटते हुए दुष्यन्त मार्ग में मरीचि-आश्रम मे रुकते हैं। वहाँ सिंहशावक के साथ खेलने वाले बच्चे (भरत) के हाथ में ताबीज बॉधते है वही पर उनका शकुन्तला के साथ पुनर्मिलन होता है।

5. कादम्बरी – महाकवि बाण सस्कृत साहित्य के महानतम कवि हैं। काव्य तथा नाटक के क्षेत्र मे जो यश कालिदास को प्राप्त है वही यश गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को मिला है। उनकी कृति कादम्बरी सस्कृत साहित्य में रस, अंलकार, गुण, रीति का औचित्य पूर्ण प्रयोग की दृष्टि से उत्कृष्ट गद्य रचना है। इसमें कवि ने मानव जीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि रखी है। इसलिए आलोचको ने एक स्वर से कहा है कि बाण ने पूरे संसार को जूठा कर दिया है **(बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्)** इसमे कादम्बरी तथा चन्द्रापीड की प्रेमकथा का सरस वर्णन है। कल्पना आश्रित कथानक होने के कारण कादम्बरी कथा नामक गद्य–काव्य है।

6. भामिनीविलास – संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट कवि तथा काव्यशास्त्री पण्डितराज जगन्नाथ सर्वाधिक चर्चित साहित्यकार हैं। ये आन्ध्रप्रदेशीय तैलङ्ग ब्राह्मण थे। इन्होंने अपने सर्वविद्या कुशल पिता से ही शास्त्रों का अध्ययन किया था। मुगल नरेश शाहजहॉ ने अपने बडे पुत्र दाराशिकोह की संस्कृत शिक्षा के लिए इन्हें नियुक्त किया था तथा उन्हें **"पण्डित राज"** की उपाधि दी थी। "भामिनीविलास" पण्डितराज जगन्नाथ के मुक्तक पद्यों का सग्रह है। इसमें चार भाग (विलास) हैं, **अन्योक्ति या प्रास्ताविक, शृङ्गार, करुण** तथा **शान्तविलास**। कुछ विद्वानों ने इनकी पत्नी का नाम **"भामिनी"** माना है। भामिनी विलास के प्रथम भाग (अन्योक्तिविलास) में सिंह, हंस, कमल, मधुकर, चन्दन, मेघ तथा समुद्र आदि को लक्षित कर सुन्दर तथा भावपूर्ण अन्योक्तियॉ दी गयी हैं।

7. पञ्चरात्रम् – संस्कृत नाटककारो मे भास वह जाज्वल्यमान मणि हैं जिनकी कीर्ति–कौमुदी सुदूर दक्षिण से लेकर ध्रुव उत्तर तक एवं प्राची से प्रतीची तक सम्पूर्ण भारतखण्ड मे चमकती रही। इनके द्वारा रचित **पञ्चरात्रम्** का कथानक महाभारत से लिया गया है। महाभारतीय कथा को आधार बनाकर भास ने पञ्चरात्र की रचना की है, इसमें दुर्योधन के यज्ञ मे द्रोणाचार्य का आचार्यत्व तथा द्रोणाचार्य को दक्षिणा में पाण्डवों का राज्यार्धयापन का प्रस्ताव किन्तु शकुनि द्वारा न दिए जाने का प्रपञ्च, कौरवों द्वारा विराट की गायो का हरण, अभिमन्यु का कौरवों की ओर से युद्ध करना, छद्मवेश मे लडते हुए अर्जुन द्वारा कौरवों की पराजय तथा अभिमन्यु का भीम द्वारा हरण प्रभृति घटनाओ का तीन अकों में वर्णन है।

8. सुश्रुतसंहिता -- उपलब्ध आयुर्वेदीय सहिताओं में सुश्रुत संहिता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। चरक के समान आचार्य सुश्रुत की कीर्ति विदेशों मे भी फैली थी। इसमें छः खण्ड– 1. सूत्रस्थान (46 अध्याय), 2. निदानस्थान (16 अध्याय), 3. शारीरस्थान (10 अध्याय), 4 चिकित्सास्थान (40 अध्याय), 5. कल्प स्थान (8 अध्याय), तथा 6. उत्तर तन्त्र (66 अध्याय) हैं जिनमें क्रमशः शल्यकर्म तथा यन्त्र एवं शस्त्र के प्रयोग, शल्य विषयक रोगों के प्रकार, स्वस्थकृत एवं सदवृत्त, विषचिकित्सा तथा नेत्र, कर्ण, नासिका शिर के रोगों, बालग्रह-शान्ति तथा कायरोगो की चिकित्सा का वर्णन है। सुश्रुत-संहिता की ख्याति प्राचीन शल्य-चिकित्सा की प्रस्तुति के कारण बहुत अधिक हैं।

12 पाठों की यह पुस्तक दो सत्रों की परीक्षा के लिए विकसित की गई है। पुस्तक को रुचिकर बनाए रखने के लिए इसमें पद्य, नाटक, कथा तथा निबन्ध पाठों को विविधता के क्रम में समायोजित किया गया है। पाठों के साथ आवश्यक चित्र देकर पाठ्यवस्तु को रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है।

पाठों के आरम्भ मे पाठ संदर्भ दिया गया है, जिससे पाठ्यांशों के प्रसग से परिचित होकर छात्र पाठ को सरलता से हृदयंगम कर सकें। अर्जित ज्ञान के दृढीकरण एवं परीक्षण के लिए वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरीय तथा रचनात्मक अभ्यास–प्रश्न दिए गए हैं। छात्रों की संस्कृत में अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए प्रत्येक पाठ के साथ मौखिक प्रश्न दिए गए हैं। पाठों में आए नवीन एवं कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं। **'अस्माभिः किमधीतम्'** शीर्षक के अन्तर्गत पाठ के मुख्य बिन्दुओं को साररूप मे स्पष्ट

किया गया है। योग्यता विस्तार के अन्तर्गत ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार का सरल सस्कृत मे परिचय देकर छात्रों को (ज्ञान की अग्रिम दिशा की ओर) उन्मुख करने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक केअन्त में **शब्दार्थः** शीर्षक केअन्तर्गत समस्त कठिन शब्दों के (व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित) सस्कृत तथा हिन्दी मे अर्थ (छात्रो मे शब्दकोश देखने की प्रवृत्ति को विकसित करने के उद्देश्य से) दिए गए हैं।

इस संकलन द्वारा छात्रों को यथासंभव सस्कृत की शिक्षा संस्कृत माध्यम से प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। फिर भी पाठ-परिचय तथा शब्दों के अर्थ हिन्दी में देकर सस्कृत शिक्षण को सुगम एव व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया गया है।

विगत वर्षों में संस्कृत अध्ययन-अध्यापन की परम्परा पर दृष्टिपात कर ऐसा अनुभव किया गया है कि इस स्तर पर संस्कृत अध्ययन के लिए व्याकरण एवं अनुवाद विधि का उपयोग हो रहा है, जिससे छात्रों को संस्कृत भाषा का अपेक्षित ज्ञान नहीं हो पाता है। विशेषरूप से वे अपने आपको तथा पठित विषय को संस्कृत में अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। एतदर्थ व्याकरण एवं अनुवाद विधि के स्थान पर प्रत्यक्ष विधि को उपयोग में लाना उपयोगी होगा। किन्तु उपलब्ध कालांशों एवं अध्ययन में लगने वाले समय को ध्यान मे रखते हुए प्रत्यक्ष विधि से संस्कृत पढना छात्रों को अरुचिकर होने के साथ ही साथ श्रमसाध्य एवं अव्यावहारिक हो सकता है। अतः छात्रों की अधिकाधिक सुगमता को ध्यान मे रखते हुए **प्रत्यक्ष, व्याकरण** एवं **अनुवाद** पद्धतियों की **समन्वित विधि** को अपनाकर सस्कृत का अध्यापन करना समीचीन होगा ताकि छात्रों के संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि इस संकलन को छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि छात्रों के लिए इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी सस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेगे।

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओ, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय मे सजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओ का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका सवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियो के सभी क्षेत्रो मे उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु।।

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

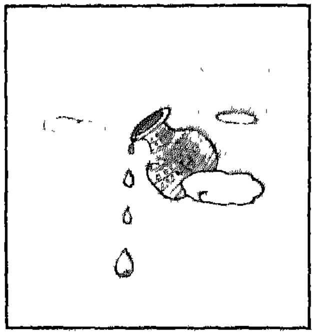
1. मेधावी लोग इन (आदित्य) को इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहा करते है। ये दिव्य पक्ष वाले (गरुड) और सुन्दर गमन वाले हैं। ये एक हैं तो भी इन्हें अनेक कहा गया है। इन्हें अग्नि, यम और मातरिश्वा कहा जाता है।

2. भारती जनों के साथ अग्निरूप भारती आये, देवों और मनुष्यों के साथ इळा आयें, अग्नि भी आयें। सारस्वत गणों (अन्तरिक्षस्थ वाक्) के साथ सरस्वती भी आयें। ये तीनों देवियाँ आकर इस (सम्मुखस्थ) कुश पर बैठें।

3. यह जो परम स्थान में स्थित वाग्देवी हैं, जो ब्रह्म के द्वारा रचित (तेजयुक्त) की गई हैं, जिससे घोर (महान्) परिणाम होता है, वह हमारे लिए शान्ति देवे।

4. जो प्रकाशवान् मन जाग्रत पुरुष से दूर गमन करता है तथा सोते हुए के समीप उसी प्रकार आगमन करता है और जो दूरगामी मन सभी ज्योतियों (इन्द्रियों) का एकमात्र प्रकाशक है, मेरा वह मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

प्रथमः पाठः



(संस्कृत कृतियों में उदात्त भावों एवं सार्वभौम सत्य को बडे मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। ऐसे पद्यों एवं पद्यांशों को सुभाषित कहते हैं। प्रस्तुत पाठ नौ सुभाषित पद्यों का संग्रह है, जिनमें मन, वचन तथा कर्म में सज्जनों का ऐक्य, स्वाभाविक मैत्री, श्रेष्ठ लोगों के मार्ग पर चलने में दुःखाभाव, विपत्ति आने से पूर्व ही उससे बचने के उपाय को जानना, श्रेष्ठ संगति का प्रभाव, गर्व न करना, सद्वचनों के पालन न करने से हानि, सतत् कार्यशील रहना, शरीर का पोषण करने वाले तथा मन एवं शरीर को दूषित करने वाले भावों का सरलता से बोध कराया गया है।)

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।1।।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता।।2।।

मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरंगैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम्।।3।।

अनुगन्तुं सतां वर्त्म कृत्स्नं यदि न शक्यते।
स्वल्पमप्यनुगन्तव्यं मार्गस्थो नावसीदति।।4।।

चिन्तनीया हि विपदामादावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।।5।।

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः।।6।।

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटः घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।।7।।

सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम्।
विपत्सन्निहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दनः।।8।।

शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्।
शनैर्विद्या शनैः वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः।।9।।

निर्गुणः	—	गुणहीनः	—	गुणरहित
वेत्ति	—	जानाति	—	जानता है
पिकः	—	कोकिल	—	कोयल
वायसः	—	काक	—	कौआ
करी	—	गजः	—	हाथी
वाचः	—	वचनानि	—	वाणी
साधूनाम्	—	सज्जनानाम्	—	सज्जनो की
एकरूपता	—	ऐक्यम्, अभेदः	—	समरूपता
अनुव्रजन्ति	—	अनुगच्छन्ति	—	पीछे–पीछे जाते हैं
तुरगाः	—	अश्वाः	—	घोडे
सुधियः	—	बुद्धिमन्तः	—	बुद्धिमान् लोग
समानशीलव्यसेनषु	—	समाचरणस्वभावेषु	—	एक–जैसे आचरण और स्वभाव वालों मे
सख्यम्	—	मैत्री	—	मित्रता
सताम्	—	सज्जनानाम्	—	सज्जनो का
वर्त्म	—	मार्गः	—	रास्ता

कृत्स्नम्	–	निखिलम्	–	सम्पूर्ण
अनुगन्तव्यम्	–	अनुसर्तव्यम्	–	अनुसरण करने योग्य, अनुकरण करना चाहिए
अवसीदति	–	दु:खी भवति	–	दुःखी होता है
प्रतिक्रिया	–	प्रतिकारम्	–	उपाय
कूपखननम्	–	कूपस्य खननम्	–	कुऑ खोदना
वह्निना	–	अग्निना	–	आग से
प्रदीप्ते	–	ज्वलिते	–	जलने पर
सुमनः सङ्गात्	–	पुष्पाणां संसर्गात्	–	फूलो के संग से
आरोहति	–	उपरि गच्छति	–	ऊपर चढ जाता है
शिरः	–	मूर्धानम्	–	सिर को
अश्मा	–	पाषाणः	–	पत्थर
सुप्रतिष्ठितः	–	आदृतः	–	सम्मानित
महद्भिः	–	महापुरुषैः	–	महापुरुषो द्वारा
घोषमुपैति	–	घोष, शब्द करोति	–	आवाज करता है
जल्पन्ति	–	व्यर्थं वदन्ति	–	व्यर्थ बोलते है
सुहृदाम्	–	मित्राणाम्	–	मित्रो की
भाषितम्	–	कथितम्	–	कही हुई बात
सन्निहिता	–	समीपस्था	–	समीप ही रहती है
पन्थाः	–	मार्ग	–	रास्ता
कन्था	–	जीर्णं वस्त्रम्	–	पुराना, कटा–फटा वस्त्र

- गुणी गुणं बली च बलं जानाति नान्यः।
- विचारे वचसि कर्मणि च सज्जनानाम् एकरूपता भवति।
- समानशीलव्यसनेषु एवं सख्यम्।

- स्वल्पम् अपि अनुसृतं सतां मार्गं मानवं कदापि न अवसादयति (दुःखयति)।
- आपदाम् प्रतिकारः पूर्वम् एव चिन्तनीयः।
- नीचोऽपि महतां सङ्गत्या उन्नतिं गच्छति।
- कुलीनो विद्वान् विनीतो भवति परन्तु गुणहीनाः मूर्खाः आत्मानं व्यर्थं प्रशंसन्ति।
- यः मित्राणां हितकारीणि वचांसि न अवधारयति स विपद्ग्रस्तः शत्रुसुखवर्धकः च भवति।
- पन्थाः शनैः लङ्घनीयः, कन्था शनैः धारणीयः, पर्वतलंघनं शनैः कर्तव्यं, विद्या वित्तं च शनैः प्राप्तव्ये।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

क. गुणं कः वेत्ति ?

ख. केषां चित्ते वाचि क्रियायाम् च एकरूपता भवति।

ग. गवा सख्यं काभिः सह भवति ?

घ. वह्निना प्रदीप्ते गृहे किं न युक्तम् ?

ङ. महद्भिः सुप्रतिष्ठितः कः देवत्वं याति ?

च. सम्पूर्णकुम्भः किं न करोति ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. सख्यं केषु भवति ?

ख. यदि सतां कृत्स्नं वर्त्म अनुगन्तुं न शक्यते तर्हि किं कर्तव्यम् ?

ग. विपदाम् आदौ एव किं कर्तव्यम् ?

घ. कीटोऽपि सतां शिरः कथम् आरोहति ?

ङ. कुलीनः विद्वान किं न करोति ?

च. कानि पञ्च शनैः शनैः ?

2. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–**

क. निः	+	बलः	=	________
________	+	________	=	निर्गुणः
वाच.	+	तथा	=	________
________	+	________	=	गावश्च
________	+	________	=	तुरगास्तुरंगैः
आदौ	+	एव	=	________
________	+	________	=	अप्यनुगन्तव्यम्
पञ्च	+	एतानि	=	________
न	+	अस्ति	=	________

3. **अधोलिखितवाक्येषु षष्ठ्यन्तानि पदानि प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

क पिको ________ गुणं न वायस.।

ख. चित्ते वाचि क्रियायां च ________ एकरूपता।

ग. ________ वर्त्म स्वल्पम् अपि अनुगन्तव्यम्।

घ. कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति ________ शिरः।

ङ. हितकामानां ________ भाषितं यो न शृणोति सः शत्रुनन्दनः।

4. **श्लोकानाम् अपूर्णः अन्वयः अधः दत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

क. सम्पूर्णकुम्भः ________ न करोति, अर्धः घट. नूनम् ________ । कुलीनः गर्वं न करोति, ________ मूढा. तु जल्पन्ति।

ख. य· ________ सुहृदां भाषितं न ________ तस्य विपत् ________ स नरः ________ (अस्ति)।

ग. विपदा ________ हि प्रतिक्रिया। वह्निना ________ प्रदीप्ते ________ न युक्तम्।

घ. गुणी गुणं ________ निर्गुणः न वेत्ति ________ बलं वेत्ति निर्बलः न वेत्ति। ________ गुणं पिकः (जानाति) न वायसः। सिंहम्स्य बलं ________ न मूषकः।

5. पाठमाधृत्य तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत–

क. यत्र सप्तमी विभक्तिः नास्ति –
वाचि, क्रियायाम्, अवसीदति, गृहे

ख. यत्र तृतीया विभक्तिः नास्ति –
मृगैः, तुरङ्गैः, शनैः, महद्भिः

ग. यत्र इन् (णिनि) प्रत्ययः न प्रयुक्तः –
गुणी, विहीनः, करी, बली

घ. यत्र लट्लकारः न विद्यते –
शृणोति, वाचि, याति, करोति

6. अ. मञ्जूषातः पर्यायपदानि विचित्य पदानां समक्षं लिखत–

काकः, कोकिलः, गजः, वेश्मनि, वचनम्, मूढः, मार्गः, अग्निः, धनम्, दुर्बलाः

क. गृहे ____________________

ख. करी ____________________

ग. निर्बलाः ____________________

घ. भाषितम् ____________________

ङ. वह्निः ____________________

च. वायसः ____________________

छ. वित्तम् ____________________

ज. पिकः ____________________

झ. मूर्खः ____________________

ञ. पन्थाः ____________________

आ. अधोलिखितेषु पदेषु मञ्जूषायाम् लिखिताः प्रत्ययाः प्रयुक्ताः इति उदाहरणमनुसृत्य प्रत्येकपदस्य पदपरिचयं लिखत–

प्रत्ययाः

ल्युट्, त्व, तव्यत्, क्त, अनीयर्

यथा – प्रदीप्त — प्र उपसर्ग + दीप् धातु + क्त प्रत्ययः

क. खननम् ____________________

ख. भाषितम् ____________________

ग   देवत्वम् ______________________

घ   चिन्तनीया ______________________

ङ.   अनुगन्तव्यम् ______________________

च.   सुप्रतिष्ठित· ______________________

छ.   लब्धधनम् ______________________

7.   **अधोलिखितवाक्यगतानि स्थूलपदानि निर्दिष्टवचनेषु परिवर्तयत—**

क.   **गुणी** गुण **वेत्ति**   (बहुवचने)

ख.   **मृगाः मृगैः** सह **अनुव्रजन्ति**   (एकवचने)

ग.   सुधिय· **सुधीभिः** सह **अनुव्रजन्ति**   (द्विवचने)

घ   **सम्पूर्णकुम्भः** शब्द न **करोति**   (बहुवचने)

ङ   **चित्ते वाचि क्रियायां** च **सज्जनस्य** एकरूपता भवति।   (बहुवचने)

पाठपरिचयः

अस्मिन् पाठे नवश्लोकाः विविधग्रन्थेभ्य सङ्कलिताः। इमे श्लोकाः अमृततुल्याः सन्ति। ये जीवने एतेषा श्लोकानां सारं गृह्णन्ति तदनुसारम् च आचरन्ति ते अमरपद प्राप्नुवन्ति।

सत्सङ्गतिः

1   महाजनस्य ससर्ग· कस्य नोन्नतिकारक

पद्मपत्रस्थित वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।

2   चन्दन शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः

चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसगति·।।

गुणप्रशंसा

1. गुणा. कुर्वन्ति दूतत्व दूरेऽपि वसतां सताम्।
   केतकीगन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदाः।।

2. गुणवज्जनसपर्कात् याति स्वल्पोऽपि गौरवम्।
   पुष्पाणामनुषङ्गेण सूत्र शिरसि धार्यते।

एकरूपता

1. मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
   मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

2. अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
   तदेवाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः।।

सख्यम्

1. उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
   राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

2. यस्य मित्रेण संभाषा यस्य मित्रेण संस्थितिः।
   मित्रेण सह यो भुङ्क्ते ततो नास्तीह पुण्यवान्।।

विद्या

1. विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्
2. विद्याविहीनः पशुभिः समानः
3. अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
   व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।।

भाषिकः पक्षः – अधोलिखितानां शब्दानां रूपाणि ध्यातव्यानि–

गुणी	–	गुणिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	गुण	+	इन्	=	गुणिन्
बली	–	बलिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	बल	+	इन्	=	बलिन्
करी	–	करिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	कर	+	इन्	=	करिन्

विभक्तिप्रयोगे लिङ्गानुसारं शब्दानुसारं वा अन्तरं पश्यत।

वर्त्म	–	वर्त्मन् नपुंसकलिगे प्रथमा विभक्ति, वर्त्म वर्त्मनी वर्त्मानि,
अश्मा	–	अश्मन् " पुल्लिंग प्रथा विभक्ति, अश्मा अश्मानौ अश्मानः

मूर्खै:	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
तुरगै:	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
मृगै	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
गोभिः	—	गो " तृतीया बहुवचनम् (स्त्रीलिङ्ग)
सुधीभिः	—	सुधी " तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)

सप्तमी विभक्तिः

वाचि	=	वाक् सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग)
आदौ	=	आदि सप्तमी (पुल्लिङ्ग)
गृहे	=	गृह सप्तमी (नपुसकलिङ्ग)
क्रियायाम्	=	क्रिया सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग)

षष्ठी विभक्तिः

सताम्	=	सत् षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
विपदाम्	=	विपद् षष्ठी बहुवचनम् (स्त्रीलिङ्ग)
साधूनाम्	=	साधु षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
सुहृदाम्	=	सुहृद् षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
शिरः	=	शिरस् द्वितीया एकवचनम् (नपुंसकलिङ्ग)

द्वितीयः पाठः

लौहतुला

(प्रस्तुत कथा विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्रम्' नामक कथाग्रन्थ के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से सङ्कलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से मांगता है। "तराजू चूहों ने खा ली है" सेठ के मुख से यह सुनकर वह उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि "पुत्र को बाज उठा ले गया है।" इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी इन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।)

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयाद्देशान्तरं गमनमना व्यचिन्तयत् –

यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ता स्ववीर्यतः।
तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः।।

तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूताम् कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं

देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरमागत्य तं श्रेष्ठिनमुवाच —" भोः श्रेष्ठिन् ! दीयताम् मे सा निक्षेपतुला।" स आह – "भोः ! नास्ति सा, त्वदीया तुला भूषकैर्भक्षिता" इति।

जीर्णधन आह – "भोः श्रेष्ठिन् ! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति। ईदृगेवायं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वमात्मीयं शिशुमेनम् धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति।

सः श्रेष्ठी स्वपुत्रमुवाच – "वत्स ! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् गम्यतामनेन सार्धम्" इति।

अथासौ वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य सत्त्वरं गृहमागतः।

पृष्टश्च तेन वणिजा – "भोः ! अभ्यागत ! कथ्यतां कुत्र मे शिशुर्यस्त्वया सह नदीं गतः"? इति।

स आह – "नदीतटात्सः श्येनेन हृतः" इति। श्रेष्ठ्याह – मिथ्यावादिन् ! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति ? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।" इति।

स आह – भोः सत्यवादिन् ! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषकाः अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।" इति।

एवं विवदमानो तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच – भोः ! अब्रह्मण्यम् ! अब्रह्मण्यम् ! मम शिशुरनेन चौरेणापहृतः।" इति।



अथ धर्माधिकारिणस्तमूचुः – "भोः ! समर्प्यताम् ! श्रेष्ठिसुतः"।

स आह – "किं करोमि ? पश्यतो मे नदीतटाच्छ्येनेन अपहृतः शिशुः"। इति

तच्छ्रुत्वा ते प्रोचुः – "भोः ! न सत्यमभिहितं भवता – किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

स आह – भोः भोः ! श्रूयतां मद्वचः –

तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः।
राजंस्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।

ते प्रोचुः – "कथमेतत्"

ततः सः श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास। ततस्तैर्विहस्य द्वावपि तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

अधिष्ठाने	– स्थाने	– स्थान पर
विभवक्षयात्	– धनाभावात्	– धन के अभाव के कारण
स्ववीर्यतः	– स्वपराक्रमेण	– अपने पराक्रम से
लौहघटिता तुला	– लौहनिर्मिता तुला	– लोहे से बनी हुई तराजू
निक्षेपः	– न्यासः	– धरोहर
भ्रान्त्वा	– भ्रमणं कृत्वा (देशाटनं कृत्वा)	– पर्यटन करके
त्वदीया	– तव, भवदीया	– तुम्हारी
ईदृक्	– एतादृशः	– ऐसा ही
एनम्	– एतम्/एनम्–पु द्वि एकवचने उभे एव रूपे भवतः।	– एतत् शब्द पु मे द्वि एकव में एतत्/एनम् दोनों ही रूप होते हैं।
आत्मीयम्	– आत्मन् शब्द – 'छ' तदर्थम् ईय प्रत्ययः	– अपना
स्नानोपकरणहस्तम्	– स्नानस्य उपकरणम्	– जिसके हाथ में स्नान का उपकरण है।
	इति स्नानोपकरणम् स्नानोपकरणं हस्ते यस्य सः, तम्	– उसको
भक्त्या	– श्रद्धया	– श्रद्धापूर्वक
मुक्त्वा	– त्यक्त्वा	– छोड़कर
वणिजा	– व्यापारिणा	– व्यापारी के द्वारा
श्येनः	– हिंसक प्रवृत्तिकः पक्षिविशेषः	– बाज

समर्पय	–	देहि	–	दो
विवदमानौ	–	कलह कुर्वन्तौ	–	झगडा करते हुए
तारस्वरेण	–	उच्चस्वरेण	–	जोर से
ऊचुः	–	अवदन्	–	बोले
अभिहितम्	–	कथितम्	–	कहा गया है।
मद्वचः	–	मम वचनानि	–	मेरे वचन
आदितः	–	प्रारम्भत	–	आरम्भ से
निवेदयामास	–	निवेदनमकरोत्	–	निवेदन किया
विहस्य	–	हसित्वा	–	हँस कर
संबोध्य	–	बोधयित्वा	–	समझा बुझा कर बताता हूँ

अस्माभिः किमधीतम् ?

- जीर्णधन नाम वणिक्पुत्र पूर्वपुरुषोपार्जिताम् तुलाम् कस्यचित् श्रेष्ठिनः गृहे निक्षेपरूपेण स्थापयित्वा देशान्तरम् अगच्छत्।
- सुचिरेण कालेन प्रत्यागत. स श्रेष्ठिनम् स्वतुलाम् अयाचत्।
- श्रेष्ठि अवदत् मूषकै भक्षिता तुला।
- श्रेष्ठिन· अनुमत्या जीर्णधन· तस्य पुत्रेण सह स्नानार्थं नदीमगच्छत्।
- स्नानानन्तरं श्रेष्ठिनः पुत्र गिरिगुहाया निगूह्य जीर्णधनः प्रत्यावृत.। स्वपुत्रविषये पृष्टे सति "तव पुत्र. श्येनेन हृत·" इत्युत्तरं श्रुत्वा श्रेष्ठी स्तब्धः जात.।
- श्रेष्ठी शिशो श्येनहरणम् अविश्वस्य न्यायार्थम् राजकुलं गतः। जीर्णधन. अपि तेनैव सह तत्र अगच्छत्।
- श्रेष्ठी शिशो श्येनहरणविषये जीर्णधनः च तुलाया मूषकभक्षणविषये धर्माधिकारिणे ज्ञापितवन्तौ।
- तयो· वृत्तान्त श्रुत्वा धर्माधिकारिभि. विहस्य द्वावेव तुला-शिशु प्रदानेन संतोषितौ।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**
   - क. वणिक्पुत्रस्य नाम किम् आसीत् ?
   - ख. तस्य गृहे कीदृशी तुला असीत् ?
   - ग. स तुलाम् कस्य गृहे निक्षेपभूताम् अकरोत् ?
   - घ जीर्णधनः केन सह स्नानाय अगच्छत् ?
   - ङ. जीर्णधनः वणिक्शिशुम् कुत्र स्थापितवान् ?
   - च. जीर्णधनश्रेष्ठिनौ विवदमानौ कुत्र गतौ ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क. देशान्तरं गमनमना वणिक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत् ?
   - ख. स्वतुलां याचन्तं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत् ?
   - ग. जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः ?
   - घ स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् उवाच ?
   - ङ. धर्माधिकारिभिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं सन्तोषितौ ?

2. **स्थूलपदान्याधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   - क. **जीर्णधन** : विभवक्षयात् देशान्तरं गमनमना व्यचिन्तयत्।
   - ख. श्रेष्ठिन : शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।
   - ग. श्रेष्ठी उच्चस्वरेण उवाच – **भोः अब्रह्मण्यम् अब्रह्मण्यम्**
   - घ सभ्यैः तौ परस्परं सबोध्य **तुला – शिशु** – प्रदानेन सन्तोषितौ।

3. **अधः श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा अन्वयं पूरयत।**
   - क. यत्र देशे अथवा स्थाने ———— भोगाः भुक्ता ———— विभवहीनः यः ———— सः पुरुषाधमः।
   - ख. राजन् ! यत्र लौहसहस्रस्य ———— मूषकाः ———— तत्र श्येनः ———— हरेत् अत्र सशयः न।

4. **तत्पदं रेखांकितं कुरुत यत्र**

क. ल्यप् प्रत्ययः नास्ति –

विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय

ख यत्र द्वितीयाविभक्ति. नास्ति –

श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्

ग. यत्र क्त प्रत्ययः नास्ति –

प्रस्थितः, आदितः, शङ्कित, आगत.

घ. यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति –

पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः, सभ्यानाम्

5. **सन्धिम् / सन्धिविच्छेदं पूरयत–**

श्रेष्ठ्याह = ________ + आह

________ = द्वौ + अपि

ईदृगेव = ________ + एव

________ = किञ्चित् + अत्र

बृहच्छिलया = ________ + शिलया

पितृव्योऽयम् = पितृव्य. + ________

मूषकैर्भक्षिताः = ________ + भक्षिता

________ = शिशुः + यः

6. क. **समस्तपदं विग्रहं वा लिखत–**

	विग्रहः	**समस्तपदम्**
क.	स्नानस्य उपकरणम्	________
ख.	________ ________	गिरिगुहायाम्
ग.	धर्मस्य अधिकारी	________
घ.	________ ________	विभवहीनाः

ख. **यथानिर्दिष्टं वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–**

क श्येनः बालं न नयति। (कर्मवाच्ये)

ख. मूषकाः तुला न भक्षयन्ति। (कर्मवाच्ये)

ग अनेन चौरेण मम शिशु. अपहृतः। (कर्तृवाच्ये)

घ सत्यम् अभिहितम् भवता। (कर्तृवाच्ये)

ङ श्रेष्ठी सर्वं वृत्तान्तं निवेदितवान्। (कर्मवाच्ये)

7. यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायतया "लौहतुला" इति कथायाः सारांशम् स्वभाषया लिखत।

वणिक्पुत्रः	स्नानार्थ
लौहतुला	अयाचत्
वृत्तान्तं	ज्ञात्वा
श्रेष्ठिनं	प्रत्यागतः
गतः	प्रदानम्

ग्रन्थपरिचयः

महाकविना विष्णुशर्मणा राज्ञः अमरशक्तेः पुत्रान् राजनीतिपारंगतान् कर्तुम् 'पञ्चतन्त्रम्' नाम कथाग्रन्थः विरचितः। अयं ग्रन्थः पञ्चतन्त्रेषु (भागेषु) विभक्तः –

1. मित्रभेदः 2. मित्रसंप्राप्तिः 3. काकोलूकीयम् 4. लब्धप्रणाशः 5. अपरीक्षितकारकम्

अस्मिन् ग्रन्थे अत्यंतसरलशब्देषु लघुकथाम् आश्रित्य गूढतत्त्वानाम् कथनम् लेखकस्य पाण्डित्य प्रदर्शयति।

1 न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचित् रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।

2 आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

धातुः	क्त	क्तवतु (पु)	क्तवतु (स्त्री)	अनीयर्	तव्यत्	यत्	ल्युट्	तृच्	ण्वुल्
√ नी	नीतः	नीतवान्	नीतवती	×	नेतव्यम्	नेयम्	नयनम्	नेतृ	नायक.
√ प्रच्छ्	पृष्ट.	पृष्टवान्	पृष्टवती	×	प्रष्टव्यम्	×	प्रश्नम्	नेता	×
√ दा	दत्त.	दत्तवान्	दत्तवती	दानीयम्	दातव्यम्	देयम्	दानम्	(दाता)	×

तृतीयः पाठः

[illegible]

(प्रस्तुत नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित "मुद्राराक्षसम्" नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उदधृत किया गया है। नन्दवंश का नाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है। किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी स्वामिभक्ति पर दृढ रहता है। उसकी स्वामिभक्ति से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिए सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिए तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।)

चाणक्यः – **वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।**

शिष्यः – **तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इतः इतः श्रेष्ठिन् (उभौ परिक्रामतः)**

शिष्यः – **(उपसृत्य) उपाध्याय ! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।**

चन्दनदासः – **जयत्वार्यः ।**

चाणक्यः – **श्रेष्ठिन् ! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां बृद्धिलाभाः ?**

चन्दनदासः – **(आत्मगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्!**

आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन् ! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन् ! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवताम– परिक्लेश एव।

चन्दनदासः – (सहर्षम्) आर्य ! अनुगृहीतोऽस्मि।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन् ! "स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।



चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्यः – राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।

चन्दनदासः – आर्य ! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते ?

चाणक्यः – भवानेव तावत् प्रथमम्।

चन्दनदासः – (कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम्, शान्तं पापम् – कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः ?

चाणक्यः – अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।

चन्दनदासः – आर्य, अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्यस्य निवेदितम्।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन् ! अलमाशङ्कया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः – एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – पूर्वम् 'अनृतम्', इदानीम् "आसीत्" इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदासः – आर्य ! तस्मिन्समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – अथेदानीं क्व गतः ?

चन्दनदासः – न जानामि।

चाणक्यः – कथं न ज्ञायते नाम ? भो श्रेष्ठिन् ! शिरसि भयम्, अतिदूरे तत्प्रतिकारः।

चन्दनदासः – आर्य ! किं मे भयं दर्शयसि ? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्।

चाणक्यः – चन्दनदास ! एष एव ते निश्चयः ?

चन्दनदासः – बाढम् ; एष एव मे निश्चयः।

चाणक्यः – (स्वगतम्) साधु ! चन्दनदास साधु।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।

(प्रकाशम्) चन्दनदास, एष ते निश्चयः ?

चन्दनदासः – बाढम्।

चाणक्यः – (सक्रोधम्) दुरात्मन्, तिष्ठ वणिक् ! अनुभूयतां तर्हि नरपतिक्रोधः।
चन्दनदासः – सज्जोऽस्मि। अनुतिष्ठतु आर्यः आत्मनोऽधिकारसदृशम्।

[illegible]

मणिकारश्रेष्ठिनम्	– सुवर्णकारं व्यापारिणम्	– सुवर्ण व्यापारी
निष्क्रम्य	– बहिर्गत्वा	– निकल कर
उपसृत्य	– समीपं गत्वा	– पास जाकर
प्रचीयन्ते	– वृद्धिं प्राप्नुवन्ति	– बढ़ते हैं
संव्यवहाराणाम्	– व्यापाराणाम्	– व्यापारों का
शङ्कनीयः	– सन्देहास्पदः	– शंका के योग्य
अखण्डिता	– परिपूर्णा	– परिपूर्ण
वणिज्या	– वाणिज्यम्	– व्यापार
प्रीताभ्यः	– प्रसन्नाभ्यः	– प्रसन्न
प्रतिप्रियम्	– प्रत्युपकारम्	– उपकार के बदले
अपरिक्लेशः	– कष्टाभावः	– दुःख का अभाव
अर्थसम्बन्धः	– धनस्य सम्बन्धः	– धन का सम्बन्ध
प्रष्टव्याः	– प्रष्टुं योग्याः	– पूछने योग्य
अवगम्यते	– ज्ञायते	– जाना जाता है
राजापथ्यकारिणः	– नृपापकारकारिणः	– राजाओं का अहित करने वाले
अलीकम्	– असत्यम्	– झूठ
अनार्येण	– दुष्टेन	– दुष्ट के द्वारा
पौराणाम्	– नगरवासिनाम्	– नगर के लोगों के
निक्षिप्य	– स्थापयित्वा	– रखकर
व्रजन्ति	– गच्छन्ति	– जाते है
प्रच्छादनम्	– निगूहनम्	– छिपाया जाना
नरपतिक्रोधः	– राज्ञः (चन्द्रगुप्तस्य) कोपः	– राजा (चन्द्रगुप्त) का क्रोध

- चन्दनदासः मणिकारश्रेष्ठी आसीत्।
- सः राज्ञो नन्दस्य मन्त्रिण, स्वकीय प्राणेभ्योऽपि प्रिय मित्र राक्षसं विपत्तौ स्वगृहे अरक्षत्।
- चाणक्य. चन्दनदासम् अर्थलोभं दर्शयित्वा राक्षसस्य गृहजन समर्पयितुम् अकथयत्।
- चन्दनदासोऽर्थलाभाय राक्षसगृहजनं न समर्पयति।
- चाणक्यः चन्दनदासस्य त्यागभावनां, तस्य मित्रं प्रति कर्तव्यञ्च दृष्ट्वा स्वमनसि तं प्रशंसन् शिविना सह तस्य तुलना करोति।
- चन्दनदास. राक्षसजनान् न समर्पयिष्यति इति विज्ञाय चाणक्यः तस्मै क्रुध्यति राजभय च दर्शयति।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**
   - क. क. चन्दनदास द्रष्टुमिच्छति ?
   - ख. प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः के प्रतिप्रियमिच्छन्ति ?
   - ग. तृणाना केन सह विरोध. वर्तते ?
   - घ. क. राक्षसस्य गृहजन स्वगृहे रक्षति ?
   - ङ. प्रस्तुतपाठे चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता ?

1. **प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क चाणक्यः चन्दनदास कस्य गृहजन समर्पयितु कथयति ?
   - ख. "नरपतिक्रोध" अत्र "नरपति" इति पदम् कस्मै प्रयुक्तम् ?
   - ग चाणक्यमतेन राक्षसस्य गृहजनसंवेदने (समर्पणे) चन्दनदासस्य कः निश्चयः आसीत् ?
   - घ. चन्दनदास. कस्य कीदृश गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म ?

2. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—

क. **आर्यस्य** प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

ख **शिविना** विना इद दुष्कर कार्य क. कुर्यात्।

ग. प्राणेभ्योऽपि प्रियः **सुहृत्**।

घ प्रीताभ्य प्रकृतिभ्य. प्रतिप्रियमिच्छन्ति **राजानः**।

3. सन्धिं / सन्धिविच्छेदं कुरुत—

क यथा = कः + अपि = कोऽपि

प्राणेभ्यः + अपि = ________

________ + अस्मि = राज्जोऽस्मि

ख यथा = सत् + चित् = सच्चित्

शरत् + चन्द्र. = ________

कदाचित् + ________ = कदाचिच्च

4. यथानिर्देशं परिवर्तनं कुरुत—

क यथा – चन्द्रश्रियाधिक नन्दति प्रकृतिः। (बहुवचने)
चन्द्रश्रियाधिकं नन्दन्ति प्रकृतयः।

(i) प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः। (एकवचने)

(ii) अपि प्रचीयते सव्यवहाराणा वृद्धिलाभ. ? (बहुवचने)

ख यथा – अहं राक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि। (प्रथमपुरुषे)
स. राक्षसस्य गृहजनं न समर्पयति।

(i) अह न जानामि। (मध्यमपुरुषे)

(ii) त्वं राक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि (उत्तमपुरुषे)

5. अधोलिखितानि वचनानि कः कं प्रति कथयति—

	क	कं प्रति
यथा – वत्स ! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।	चाणक्य	शिष्यं प्रति
क. अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणा वृद्धिलाभाः।	________	________
ख. आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।	________	________

ग. राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव। ______ ______

घ. अनुभूयतां तर्हि नरपतिक्रोधः। ______ ______

6. अ. अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितपदानि आदाय पदानां समक्षं विलोमपदानि लिखत–

आर्यः,	आदरः,	प्रीतिम्,	अलीकम्,
पूर्वम्,	सन्तम्,	दोषः	

अनादरः ______

क्रोधम् ______

गुण. ______

असन्तम् ______

इदानीम् ______

अनार्यः ______

सत्यम् ______

आ. अधोलिखितानि अव्ययानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत–

निष्क्रम्य, निक्षिप्य, प्रविश्य, द्रष्टुम्, उपसृत्य

यथा – निष्क्रम्य – शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(i) ______

(ii) ______

(iii) ______

(iv) ______

(v) ______

[ध्यातव्य यत् क्त्वा – ल्यप् – तुमुन् प्रत्ययाना सयोजनेन रचितानि पदानि अव्ययानि भवन्ति।

यथा – श्रेष्ठिनम् चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।

अत्र द्रष्टुम (दृश् + तुमुन्) इति पदम् अव्ययरूपेण प्रयुक्तम्।]

7. क. कीदृशस्तृणानाम**ग्निना सह** विरोधः?

ख. चन्दनदासः राक्षसस्य गृहजनं **स्वगृहे अरक्षत्।**

उपरिलिखितयोः वाक्ययोः

क. 'सह' शब्दयोगे तृतीया विभक्तिः।

ख. आधारार्थे च सप्तमी विभक्तिः प्रयुक्ता।

अत्र (क) भागे उपपदविभक्तिः प्रयुक्ता (ख) भागे च कारकविभक्तिः। विशिष्टपदानां योगे या विभक्तिः प्रयुज्यते सा 'उपपदविभक्तिः' इति कथ्यते।

यथा – सह, समम्, साकम्, सार्धम्, इत्येतेषां पदाना योगे तृतीया विभक्तिः भवति। आधारार्थे च (आधारोऽधिकरणम्) सप्तमीविभक्तिः भवति।

ग अधस्तनम् उदाहरणद्वयम् अनुसृत्य कोष्ठके प्रदत्तपदानि प्रयुज्य च वाक्यानि रचयत–

यथा – मृगाः मृगैः सह धावन्ति।

(i) ―――――――――― (समम्)

(ii) ―――――――――― (सार्धम्)

यथा – सिंहः वने वसति।

(i) मत्स्याः ―――――――――― निवसन्ति (जल)

(ii) वानराः ―――――――――― निवसन्ति (वृक्ष)

कविपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' इति नाम्नः नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्तः आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्य पिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवी प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मावलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

ग्रन्थपरिचयः

"मुद्राराक्षसम्" सम्राट्–चन्द्रगुप्तस्य शासनम् अधिकृत्य लिखितम् एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाङ्केषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्य राजनीतिककौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम कूटनीतीनाम् निदर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

1. **चाणक्य** – चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव 'कौटिल्य' इति नाम्ना प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व–जीवने उपयोगाय च अयं 'कौटिल्य.' इत्यपि कथ्यते।

   अस्य अन्यत् नाम चाणक्योऽपि वर्तते। चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् 'चाणक्यः' इति नाम्ना स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च 'चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तः "कौटिल्य-अर्थशास्त्रम्" इति नामकः अतिमहत्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

2. **चन्द्रगुप्तमौर्यः** – चन्द्रगुप्तः महापद्मनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शने अनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

3. **राक्षसः** – नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुर प्रधानामात्य आसीत्।

4. **चन्दनदासः** – कुसुमपुर नाम्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमः पात्रः मित्रञ्च आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवारं नगरात् बहिरगच्छत्।

1. अलम् **आशङ्कया।**

   अलम् **विवादेन।**

   अलम् **कलहेन।**

   अलम् **अतिभोजनेन।**

   उपरिलिखितेषु वाक्येषु अलम् योगे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता।

2 **अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः**

अत्यादरः	**शङ्कनीयः**
जन्तुशाला	**दर्शनीया**
याचकेभ्यः दानं	**दानीयम्**
वेदमन्त्राः	**स्मरणीयाः**

पुस्तकमेलापके पुस्तकानि **क्रयणीयानि।**

(i) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति।

(ii) अनीयर्प्रत्यये 'अनीय' इति अवशिष्यते।

(iii) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।

यथा	**पुल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
	(देववत्)	(लतावत्)	(फलवत्)

3 **उभ सर्वनामपदम्**

पुल्लिङ्गे	**नपुंसकलिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**
उभौ	उभे	उभे
उभौ	उभे	उभे
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
"	"	"
"	"	"
उभयोः	उभयोः	उभयोः
"	"	"

चतुर्थः पाठः

(पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ छाया एवं औषधि प्रदान करने वाले पादपों एवं वृक्षो की उपयोगिता वर्तमान समय में पूर्वापेक्षया अधिक है। वैज्ञानिकों के अनुसार वृक्षों एवं वनस्पतियों के अभाव में मनुष्यों के लिए जीवित रहना असम्भव प्रतीत होता है। नाना-वाहनों तथा कल-कारखानों से निकलने वाले धुएँ से समस्त वायु ही विषैली हो रही है जिससे न केवल मानव–समूह अपितु सम्पूर्ण प्राणि-जगत् का जीवन संकट में पड़ता जा रहा है। पर्यावरण दिन-प्रतिदिन असंतुलित हो रहा है। यत्र-तत्र अनावृष्टि की समस्या भी बढती जा रही है। अतः आवश्यक है कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए जिससे प्रकृति संतुलित रहे और प्राणि-जगत् के साथ मानव-जीवन भी सुखमय हो सके।)



भूतले मानवानां समाज इव अन्येऽपि समवाया वर्तन्ते पशूनां पक्षिणां वृक्षाणां च। यथा मानवा गुणभेदेन आकारप्रकारदृष्ट्या अभिरुचिदिशा च भिद्यन्ते तथैव वृक्षा अपि। केषाञ्चिद् वृक्षाणां महत्त्वं गृहनिर्माणदृष्ट्या, केषाञ्चित्

औषधदृष्ट्या केषाञ्चिच्च फलपुष्पदृष्ट्या। मल्लिका, कर्णिकारः, यूथिका, पारिजात इत्येताः वनस्पतयः पूजादिनिमित्तं सौरभयुक्तानि पुष्पाण्येव प्रस्तुवन्ति। परन्तु कदलीरसालजम्बूनिम्बूकनारङ्गादितरवस्तुविविधस्वादमयानि फलान्याहरन्ति। एवमेव सरलदेवदारुनिम्बादिवृक्षा गृहनिर्माणार्थं काष्ठानि प्रयच्छन्ति।

वृहदारण्यकनाम्नि उपनिषदि वृक्षाणां महत्त्वं प्रतिपादयन् वृक्षपुरुषसाम्यम् अवलोक्यते। महर्षियाज्ञवल्क्येन उक्तम् –

यथा वृक्षोवनस्पतिस्तथैवपुरुषोऽमृषा।
तस्य लोमानि पर्णानि त्वगस्योत्पाटिका बहिः।।

त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि त्वच उत्पटः।
तस्मात्तदातृणात् प्रेति रसो वृक्षादिवाहतात्।।

वैज्ञानिकदृष्ट्या तु सिद्धमिदं यद्वृक्षेष्वपि चैतन्यं वर्तते। कामं तच्चैतन्यं मानवपशुपक्षिचैतन्यमिव व्यक्तं न दृश्यते तथापि एतद् वक्तुं शक्यते यद् वनस्पतयोऽपि सुखदुःखादिभावान् सम्यगनुभवन्ति।

कस्मिन् क्षुपे, कस्मिन् फले, पुष्पे वा को नु वर्तते औषधीयो गुणः इति विज्ञायैव ते ऋषयः चरकसुश्रुतादयः महनीयमायुर्वेदाख्यं शास्त्रं प्रतिष्ठापितवन्तः। वृक्षाणामभावे मानवजीवनं सर्वथा दुष्करं स्यात् यतो हि वनस्पतयो दूषितपवनं निगीर्य शुद्धं आक्सीजनाख्यं प्राणवायुम् विमु चन्ति यं गृहीत्वा प्राणिनः जीवितुं शक्नुवन्ति। एवं हि वृक्षाः मानवानां बन्धुभूताः प्रतीयन्ते।

अस्मादेव कारणात् वृक्षारोपणमस्माभिः करणीयं तिष्ठति। यदि भवनं परितः सन्ति वृक्षास्तर्हि शुद्धप्राणवायुरपि पुष्कलत्वेन अवाप्स्यते। सर्वेऽपि तत्र स्वस्थाः स्थास्यन्ति। तत्रापि गृहद्वारे निम्बरोपणमुपादेयं प्रतीयते। यतो हि निम्बपल्लवेषु तद्विमुक्तपवनेषु च भवन्ति विविधरोगापहारका गुणाः। पिप्पलवृक्षः सर्वाधिकं प्राणवायुं (आक्सीजनाख्यं) विसृजति इति रहस्यं जानन्ति वैज्ञानिकाः। अत एव पिप्पलच्छायायां शयाना जना नीरोगा जायन्ते।

वृक्षारोपणेऽन्यापि कापि प्रशस्ता दृष्टिर्वर्तते भारतीयानाम्। इयं दृष्टिः सर्वानपि वृक्षान् दैवीशक्तिसम्पन्नान् घोषयति। अश्वत्थे भगवतः नारायणस्य निवासः। निम्बवृक्षे भगवत्याः शीतलायाः। मन्दारवृक्षे गणपतिर्वसति। तुलस्यामपि विष्णुप्रिया वृन्दा। शमीवृक्षेऽग्निस्तिष्ठति। बिल्ववृक्षे लक्ष्मीः। एवमेव नवग्रहाणां प्रत्येकं निवासभूतः कोऽपि वृक्षः समुपदिष्टः। अनया देवदृष्ट्या सम्प्रेरिता अपि जना वृक्षारोपणं कृत्वा धन्यमात्मानं मन्यन्ते।

वृक्षाः खलु घर्मसन्तप्तेभ्यः छायासुखं बुभुक्षितेभ्यस्तृप्तिसुखं च प्रयच्छन्ति। अत एव सर्वैरपि वृक्षा आरोपणीयाः। यथोक्तं स्मृतिकारैः –

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।

शब्दार्थाः

समवाया	- समूहाः	– समूह
भिद्यन्ते	- पृथक् भवन्ति	अलग होते है।
मल्लिका	मल्लीपुष्पम्	- बेला
कर्णिकार	पुष्पविशेषः	कनेर, कनैल
यूथिका	- यूथी	– जूही

पारिजातम्	— हरसिंगाराख्य पुष्पम	- हरसिंगार
क्षुपे	- पादपे (लघुवृक्षे)	- पौधे में
महनीयम्	— महत्त्वपूर्णम्	— महत्त्वपूर्ण
निपीय	— पीत्वा	-- पीकर
अवाप्स्यते	— लप्स्यते	— प्राप्त की जाएगी
अश्वत्थे	— पिप्पले	— पीपल वृक्ष पर
मन्दारवृक्षे	— तरुविशेषे	— मन्दार के वृक्ष पर
विशदयद्भिः	— विस्तारयद्भि	- विस्तार करते हुए
पर्णानि	-- पत्राणि	- पत्ते
उत्पटः	— रसविशेष	- (वृक्ष की छाल से निकलनेवाला) रस
उत्पाटिका	— त्वचा	- छाल
प्रतिपादयन्	— विशेषेण कथयन्	— बताते हुए
ह्रदः	— सर.	-- सरोवर, तालाब
प्रस्यन्दि	— वति (नि सरति)	-- बहता है।
त्वक्	— त्वचा	-- छाल, खाल

[illegible]

- वनस्पतय. मानवजीवनस्य प्राणभूता सन्ति।
- वृक्षा प्राणिभ्य. पत्राणि, पुष्पाणि, फलानि, औषधानि, काष्ठानि च यच्छन्ति।
- वनस्पतय. जीवनाय प्राणिभ्यः ऑक्सीजनाख्य प्राणवायुम् प्रयच्छन्ति।
- भारतीयसस्कृतौ विभिन्नेषु वृक्षेषु विविधदेवीदेवाना च निवास स्वीकृत ।
- उपनिषत्सु वृक्षपुरुषसाम्यम् अवलोक्यते।
- वैज्ञानिकै वनस्पतिष्वपि चैतन्यमस्ति इति साधितम्।
- वृक्षारोपणै एकत. प्राणिजगत् सुखं लभते अपरतश्च प्रदूषणसमस्याया. निराकरणम् (समाधानम्) अपि भवति।

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**
   - क. गृहनिर्माणार्थं काष्ठानि के प्रयच्छन्ति ?
   - ख. वृक्षाः केषाम् बन्धुभूताः सन्ति ?
   - ग. किं गृहीत्वा प्राणिनः जीवितुं शक्नुवन्ति ?
   - घ. गृहद्वारे कस्य वृक्षस्यारोपणमुपादेयं प्रतीयते ?
   - ङ. सर्वाधिकं प्राणवायुं कः विसृजति ?

1. **प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क. विविधस्वादमयानि फलानि केभ्यः वृक्षेभ्यः प्राप्यन्ते ?
   - ख. वैज्ञानिकैः किं साधितम् ?
   - ग. आहते सति वृक्षेभ्यः किं वहति ?
   - घ. वृक्षाः जनेभ्यः किं किं प्रयच्छन्ति ?
   - ङ. उपनिषत्सु वृक्षाणां तुलना कैः सह कृता ?

2. **स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   - क. वनस्पतयः **पुष्पाणि** प्रस्तुवन्ति।
   - ख. वृक्षाणाम् अभावे **मानवजीवनं** दुष्करं स्यात्।
   - ग. **निम्बपल्लवेषु** विविधरोगापहारकाः गुणाः भवन्ति।
   - घ. वृक्षाः **घर्मसन्तप्तेभ्यः** छायासुखं प्रयच्छन्ति।
   - ङ. दशपुत्रसमो **द्रुमः** भवति।
   - च. **ऋषयः** चरकसुश्रुतादयो महनीयमायुर्वेदं प्रतिष्ठापितवन्तः।

3. **अधोलिखितेषु पदेषु सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

   क **यथा** कृषिः + अपि = कृषिरपि

   (i) प्राणवायुः + अपि = ________

   (ii) सर्वैः + अपि = ________

ख यथा केषाञ्चिच्च = केषाञ्चित् + च

(i) तच्चैतन्यम् = ________ + ________

(ii) कुत्रचिच्च = ________ + ________

ग. यथा अन्येऽपि = अन्ये + अपि

(i) सर्वेऽपि = ________ + ________

(ii) वृक्षेऽस्मिन् = ________ + ________

घ यथा वृक्षास्तर्हि = वृक्षा. + तर्हि

(i) तरवस्तु = ________ + ________

(ii) अग्निस्तिष्ठति = ________ + ________

4. अधोदत्तपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत–

दोषाः ________________

अस्वस्थाः ________________

वृक्षे ________________

उद्गीर्य ________________

जडत्वम् ________________

मनुष्याः ________________

अनुपादेयम् ________________

स्वल्पत्वेन ________________

5. क. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–

यथा करणीयम् = कृ + अनीयर्

दर्शनीयम् = ________ + ________

आरोहणीयम् = ________ + ________ + ________

रक्षणीयम् = ________ + ________

पठनीयम् = ________ + ________

ख. उदाहरणमनुसृत्य 'ठक्' प्रत्ययं योजयित्वा रूपाणि लिखत–

यथा विज्ञान + ठक् = वैज्ञानिक.

________ + ________ = ऐतिहासिक

पुराण + ठक् = ________

________ + ________ = दैनिक.

वेद + ठक् = ________

________ + ________ = औपनिषदिकः

6. स्थूलपदानि संशोध्य वाक्यानि पुनः लिखत–

क. वृक्षाः सौरभयुक्तानि पुष्पाणि **ददन्ति**।

ख. **वृक्षाणां** मानवजीवने बहवः उपयोगाः सन्ति।

ग. **लक्ष्मेः** निवासः बिल्ववृक्षे भवति।

घ. वैज्ञानिकैः वृक्षाणां विषये महत्वपूर्णा सूचना **दत्तम्**।

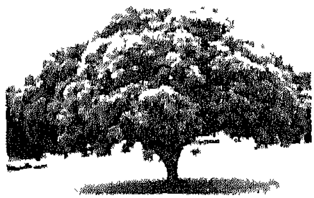
ङ. गावः क्षीरं शरीरं पोषयति बुद्धिं च वर्धयति।

च. वृक्षारोपणं सर्वैरपि अस्माभिः **करणीयः**।

7. वृक्षाणाम् चित्राणि दृष्ट्वा प्रतिवृक्षम् प्रतिपादपं प चवाक्यानि रचयत–



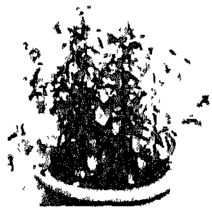
निम्बतरुः



आम्रवृक्षः



कदलीपादपः



तुलसीपादपः

वृक्षारोपणमहत्त्वम्

प्रदूषणसमस्यायाः विषये अद्य सम्पूर्णः विश्वः चिन्तातुर. अस्ति। संयुक्त–राष्ट्रसंघेन अपि अस्मिन् विषये चिन्ता प्रकटिता। प्रदूषण–निवारणस्य उपायेषु 'वृक्षारोपणं' सर्वोत्कृष्टं मतम्।

प्रदूषणसमस्या तदैव उपस्थिता यदा मानवेन स्वार्थसिद्धये वृक्षकर्तनम् आरब्धम्। प्रकृतौ सन्तुलनस्थापनार्थं वृक्षरक्षणम् वृक्षारोपणम् च आवश्यकम्। इदम् सन्तुलनम् एव भूक्षरणात् अतिवृष्टेः अनावृष्टेः च रक्षितुम् समर्थम्। धूमानां विषाक्तवायूनां च शोषणस्य सामर्थ्यम् वृक्षेषु एव। येन वातावरणम् शुद्धम् पवित्रम् च भवति।

किं बहुना नष्टप्रायाणां पशुपक्षिणाम् जातीनाम् च रक्षा अपि अनेनैव सम्भवा। श्रीमद्भागवते अपि भगवान् कृष्णः वृक्षाणा महत्त्वं बलरामं प्रति निवेदितवान्

क. पश्यैतान् महाभागान् परार्थैकान्तजीवितान्–
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः।।

ख. पत्रपुष्पफलच्छाया मूलवल्कलदारुभिः
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते।।

अत्र अन्येऽपि श्लोकाः दृष्टव्याः

क. अहो ! एषां वर जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम्।
धन्या महीरुहा येभ्यो निराशा यान्ति नार्थिनः।।

ख. छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव।।

ग. बहुभिर्बत किं जातैः पुत्रैः धर्मार्थवर्जितैः।
वरमेको पथि तरुर्यत्र विश्रमते जनः।।

घ. अनेकफलप्रदो वृक्षो निरपेक्षो यतिप्रभः।
कर्त्तव्यं रोपणं तस्य वृक्षो रक्षति रक्षितः।।

√ मुच्' (त्यागे) लट्लकारः

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
मध्यमः	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उत्तमः	मुञ्चामि	मञ्चावः	मुञ्चामः

√ आप्' (प्राप्तकरणे) लट्लकारः

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यमः	आप्नोषि	आप्नुथ	आप्नुथ
उत्तमः	आप्नोमि	आप्नुव	आप्नुमः

√ दा' (दाने) लट्लकारः

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तमः	ददामि	दद्वः	दद्मः

पञ्चमः पाठः



(व्यक्ति को सन्मार्ग पर ले जाने की विधि को नीति कहते हैं। "नीयते प्राप्यते धर्मोऽनया" इति नीतिः। "विदुरनीति" महाभारत का एक प्रसिद्ध तथा उपादेय प्रसङ्ग है। इसमें महात्मा विदुर ने राजा धृतराष्ट्र को लोक परलोक में कल्याण करने वाली बहुत सी बातें समझाई हैं। उद्योगपर्व के आठ अध्यायों (33वें से 40वें तक) में यही नीतिपरक श्लोक उपदेशात्मक ढंग से कहे गए हैं। प्रस्तुत पाठ में कठोर वचन, चारित्रिक महत्त्व, हानिलाभ की दृष्टि से कर्त्तव्य का निर्धारण, स्नेही जनों को सब कुछ स्पष्ट बता देना, छह सुख, समूह में रहना, मित्र बनाने का विधान, निर्दोष को दण्ड देने से उत्पन्न भय तथा हितकारी वचन से सम्बन्धित भावों वाले श्लोक संकलित किए गए हैं।

पाठ का उद्‌देश्य विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन के साथ–साथ उनमें नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था भी उत्पन्न करना है, जिन्हें वे अपने जीवन में उतार सकें।)

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम्।
वाचा दुरुक्तं वीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम्।।1।।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।।2।।

किन्नु मे स्यादिदं कृत्वा किन्नु मे स्यादकुर्वतः।
इति कर्माणि संचित्य कुर्याद्वा पुरुषो न वा।।3।।

शुभं वा यदि वा पापं द्वेष्यं वा यदि वा प्रियम्।
अपृष्टस्यास्य तद्ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम्।।4।।

आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः सद्भिर्मनुष्यैः सह संप्रयोगः।
स्वप्रत्ययावृत्तिरभीतवासः षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।5।।

एकः स्वादु न भु जीत एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात्।।6।।

मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत्।
श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत्।।7।।

न स रात्रौ सुखं शेते ससर्प इव वेश्मनि।
यः कोपयति निर्दोषं सदोषोऽभ्यन्तरे जनः।।8।।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।9।।

रोहते	–	प्ररोहति	–	उगता है
विद्धम्	–	क्षतम्	–	बिधा हुआ, घायल
बीभत्सम्	–	भयावहम्	–	भयानक
मृजया	–	मार्जनेन, स्नानकृतशुद्ध्या	–	जल द्वारा शुद्धि से
वृत्तेन	–	सदाचारेण	–	सदाचार से
अकुर्वतः	–	न कुर्वतः	–	न करते हुए का

संचित्य	–	विचार्य	–	भली भांति सोच विचार कर
द्वेष्यम्	–	द्वेषयोग्यम्	–	द्वेष के योग्य
आनृण्यम्	–	ऋणस्य अभावः	–	कर्ज का न होना
अविप्रवासः	–	विदेशे न वासः	–	अन्य देश मे वास न करना
स्वप्रत्ययावृत्तिः	–	आत्मविश्वासे सुदृढः	–	आत्मविश्वास मे सुदृढ
अभीतवासः	–	निर्भयं निवास.	–	निडर होकर रहना
असकृत्	–	न सकृत्	–	अनेकशः
विज्ञाय	–	ज्ञात्वा	–	जानकर
वेश्मनि	–	गृहे	–	घर में
कोपयति	–	क्रोधयति	–	क्रोधित करता है
अभ्यन्तरे	–	अन्तःकरणे	–	अपने अन्दर
पथ्यस्य	–	हितकारिवचनस्य	–	लाभकारी वचनों का

- मनुष्यः कदापि कटुवचनानि न ब्रूयात्।
- धर्मस्य सत्येन, विद्यायाः योगेन, रूपस्य सम्मार्जनेन, कुलस्य च सदाचारेण रक्षा भवति।
- मनुष्यः गुणदोषान् परीक्ष्य एव कर्मणि प्रवृत्तः भवेत्।
- यस्य कस्यचिदपि शुभचिन्तक. नर. तस्य प्रीतिमप्रीतिम् अविचार्य सत्यं ब्रूयात्।
- जीवलोकस्य षड्सुखानि सन्ति।
- मानव. मिलित्वा चलेत्, मिलित्वा खादेत्, मिलित्वा च जीवनं यापयेत्।
- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

    क. कैः विद्धं वनं रोहते ?

    ख. विद्या केन रक्ष्यते ?

    ग. जीवलोकस्य कति सुखानि ?

घ. एकः किं न भुञ्जीत ?

ङ. नरः कैः सह मैत्रीं समाचरेत् ?

1. **अधोलिखितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. जीवलोकस्य षड् सुखानि कानि कानि सन्ति ?

ख. केन क्षतः नरः न संरोहति ?

ग. एकाकी किं किं न कुर्यात् ?

घ. कः रात्रौ सुखं न शेते ?

ङ. कीदृशाः पुरुषाः लोके सुलभाः ?

2. **सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

क. (i) स्यादिदम् – स्यात् +

(ii) स्यादकुर्वतः – ———— + अकुर्वतः

(iii) ———— तत् + ब्रूयात् ————

(iv) गच्छेदध्वानम् = ———— + ————

ख. (i) सायकैर्विद्धम् – सायकैः + ————

(ii) दुरुक्तम् – ———— + उक्तम्

(iii) ———— सद्भिः + मनुष्यैः

(iv) प्राज्ञैर्मैत्रीम् = ———— + ————

ग. संयोगं कुरुत –

(i) वनम् + परशुना

(ii) प्रियम् + अपृष्टम्

(iii) इदम् + कृत्वा

(iv) आरोग्यम् + आनृण्यम्

(v) शुभम् + वा

3. **उदाहरणानुसारं लिखत–**

क. उदाहरणम् : **सर्पेण सहितः इति ससर्पः**

(i) दोषेण सहितः इति ————

(ii) तनयेन सहितः इति ————

(iii) ———— इति सरागः

(iv) ———— इति सक्रोधः

(v) शरीरेण सहितः इति ————

ख. उदाहरणम् : **परशुना हतम् इति परशुहतम्**

(i) वाचा क्षतम् इति ________________

(ii) दुष्टेन हतम् इति ________________

(iii) ________________ इति साधुरक्षितम्

(iv) ________________ इति वाक्यरक्षितम्

(v) धनेन हीनः इति ________________

4. **अ. उचितपदैः अन्वयं पूरयत–**

क सायकैः विद्धं ________ हतं वनं रोहते। वाचा वीभत्स ________ वाक्क्षतम् न ________ ।

ख. इदं ________ मे किन्नु स्यात् **किन्नु** अकुर्वतः मे इति **संचिंत्य** पुरुषो कुर्यात् वा न वा।

ग. सः ________ ससर्प इव रात्रौ सुखं न ________ यः अभ्यन्तरे ________ निर्दोषं जनं कोपयति।

5. **अधोलिखितानाम् वाक्यानाम् उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–**

	कर्मवाच्यम्	कर्तृवाच्यम्
यथा	योगेन विद्या रक्ष्यते।	योगः विद्या रक्षति।
(i)	वृत्तेन कुलं रक्ष्यते।	________________
(ii)	________________	सत्यं धर्मं रक्षति।
(iii)	मृजया रूपं रक्ष्यते।	________________
(iv)	________________	परशुः वनं हन्ति।

6. **अधोलिखितानां पदानां समानार्थकपदानि पाठात् चित्वा लिखत–**

यथा बाणैः ________________ सायकैः

क. विद्धम् ________________

ख. चरित्रेण ________________

ग. विचिन्त्य ________________

घ. विदधीत ________________

ङ. अद्यात् ________________

च. प्राज्ञः ________________

छ. निरन्तरम् ________________

7. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत–

क. यत्र ल्यप् प्रत्यय: नास्ति ————

संचित्य, परीक्ष्य, द्वेष्य, विज्ञाय

ख. यत्र अस्मिन् पाठे द्वितीया विभक्तिः प्रयुक्ता ————

वनम्, विद्धम्, पराभवम्, कुलम्

ग. यत्र विधिलिङ्गः नास्ति ————

चिन्तयेत्, रक्ष्यते, जागृयात्, गच्छेत्।

[illegible]

कविपरिचयः

कौरवाणां मुख्यमंत्री विदुरः महान् नीतिवेत्ता, कुशलराजनीतिज्ञः महापुरुष: च आसीत्। कौरवेभ्य:, पाण्डवेभ्यः च परामर्शं ददन् अयं कदापि सत्यमार्गात् च्युतः न अभवत्। अनेन दत्तम् अप्रियं भाषणम् श्रुत्वा अपि धृतराष्ट्रः अस्मात् विमुखः नाभवत्।

ग्रन्थपरिचयः

विदुरनीतिः इति नाम ग्रन्थ: महाभारतस्य उद्योगपर्वणः उद्धृतः अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे नीतिवेत्ताविदुरेण लोकोपयोगी उपदेश: दत्तः यम् अनुसरन् नरः स्वजीवनयात्रायाम् आगताभिः समस्याभि: आत्मानम् उद्धर्तुं शक्नोति।

- जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घट:।
  स हेतुः सर्वविद्याना धर्मस्य च धनस्य च।।
- सत्य ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
  प्रियं च नानृत ब्रूयादेष धर्मः सनातन:।।
- वृत्त यत्नेन सरक्षेत्
- सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
- वाक्सायका: वदनान्निष्पतन्ति,

यैराहतः शोचति रात्र्यहनि।
परस्य वै मर्मसु ते पतन्ति,
तान् पण्डितो नावसृजेत् परेषु।।

1. √ रुह् धातोः लट् लकारे 'रोहति' इति एवं प्रयोगः भवति परमत्र श्लोके 'रोहते' इत्येवं प्रयुक्तः एतादृशः प्रयोगः आर्षप्रयोगः।

2. क. **कृ – विधिलिङ्ग रूपाणि**

प्र० पु० कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु० कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु० कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

ख. **√ ब्रू – विधिलिङ्ग रूपाणि**

प्र० पु० ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० पु० ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० पु० ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

ग. **√ जागृ – विधिलिङ्ग रूपाणि**

प्र० पु० जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म० प० जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ० पु० जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम



षष्ठः पाठः

स्वामी विवेकानन्दः

(भारतभूमि अनेक विचारकों एवं महापुरुषों की जननी है, यहाँ जन्म लेकर महापुरुषों ने अपने चिन्तनों एवं तदनुरुप कार्यो द्वारा समाज का बहुविध उपकार किया है। ऐसे ही महापुरुषों में स्वामी विवेकानन्द का नाम बड़े आदर से लिया जाता है जिन्होंने भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म की गरिमा का सम्पूर्ण विश्व में गौरव बढ़ाया। उठो जागो और श्रेष्ठतम लक्ष्य को प्राप्त करके जगाओ "**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत**" से जनमानस को प्रेरणा प्रदान करने वाले स्वामी विवेकानन्द के अनुसार सभी सम्प्रदायों के लोग अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए भी यदि प्राणियो के प्रति समत्वदृष्टि रखें और पूर्वाग्रह से दूषित न हों तो विश्व में कहीं भी साम्प्रदायिक कट्टरता कष्टदायी नहीं होगी।)

अनुपमोऽयमस्माकं भारतदेशः। बहवो महापुरुषाः धर्माचार्याश्च अत्राजायन्त स्वप्रयत्नैश्च समाजे व्याप्तानां कुरीतीनां विनाशं कृतवन्तः। तेष्वन्यतम आसीत् स्वामी विवेकानन्दः येन भारतस्य अध्यात्मगौरवं पाश्चात्यजगति प्रतिष्ठापितम्। विवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायां 1863 तमे वर्षे अभवत्। अस्य जननी भुवनेश्वरी पिता च विश्वनाथ आसीत्।

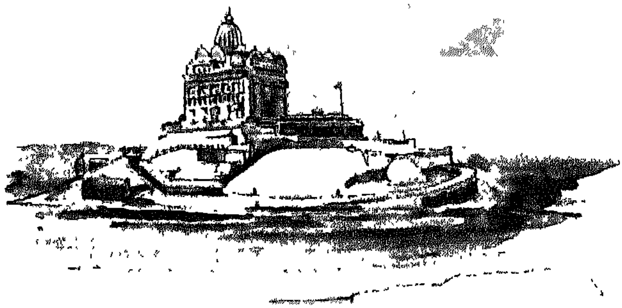
नरेन्द्रनामायं बालः शैशवादेव कुशाग्रबुद्धिः स्वभावाच्च चलः मनसोऽपि अशांतः चासीत्। अथ कदाचित् श्रीरामकृष्णपरमहंसानां स्पर्शमात्रेणैव अस्य चेतना जागृता। गच्छता कालेन परमहंसः एव नरेन्द्रस्य आध्यात्मिको गुरुः अभवत्। परतन्त्रभारतस्य दुर्दशां विचार्य परमहंसः देशस्य गौरवप्रतिष्ठार्थं नरेन्द्रमादिदेश। गुरोराज्ञां शिरसि निधाय विवेकानन्दः समग्रेऽपि राष्ट्रे पर्यटनमकरोत्। मोहनिद्राप्रसुप्तान् देशवासिनः यथाशक्ति प्रबोधितवान्।

1893 तमे वर्षे स्वामी विवेकानन्दः अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागो नाम्निनगरे समायोजिते विश्वधर्मसम्मेलने भारतस्य प्रतिनिधित्वमकरोत्। यावदेवासौ अमेरिकावासिनः 'बन्धवो' 'भगिन्यश्चेति' पदाभ्यां सम्बोधितवान् तावदेव समग्रमेव सभाभवनं करतलध्वनिना गु जायमानं जातम्। सप्ताहं यावत् महामेधावी विवेकानन्दः शून्यमवलम्ब्य स्वकीयं सारगर्भितं भाषणं कृतवान्। यस्मात् भारतेन विश्वगुरुपदम् पुनः लब्धम्। स्वज्ञानगरिम्णा समग्रमपि विश्वं वशीकुर्वन् विवेकानन्दः घोषितवान् – सर्वेऽपि जनाः पूर्वाग्रहं विहाय प्राणिषु समत्वदृष्टिम् अवधारयन्तु चेत् तर्हि स्वधर्मविशेषमनुपालयन्तोऽपि विश्वबन्धुत्वं स्थापयितुं शक्नुवन्ति।

यावज्जीवनं मानवसेवाव्रतमाचरन् असौ देशे-देशे, स्थाने-स्थाने च पीडितान् जनान् तुतोष। एतदर्थमेव स महात्मा रामकृष्णसेवासमितेः स्थापनाम् अकरोत्। एतादृशाणां महापुरुषाणां कृते सत्यमेव उक्तम् –

> परोपकारैकधियः स्वसुखाय गतस्पृहाः।
> जगद्धिताय जायन्ते मानवाः केऽपि भूतले।।

कन्याकुमारीसमीपस्थे समुद्रे निर्मितं विवेकानन्दस्य विश्वस्तरीयं स्मारकमण्डपं वर्तते यत् तस्य महापुरुषस्य राष्ट्रभक्तिं विश्वबन्धुत्वं



सर्वधर्मसमभावं च स्मारयति। उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत" इत्यस्ति तस्य महापुरुषस्य सन्देशानां सारांशः।

अनुपमः	– अतुलनीय	– अद्वितीय
अध्यात्मगौरवम्	– आध्यात्मिक महत्त्वम्	– आध्यात्मिक महत्त्व को
जगति	– संसारे	– संसार में
कुशाग्रबुद्धिः	– तीक्ष्ण बुद्धि	– तेज बुद्धि वाला
पदाभ्याम्	– शब्दाभ्याम्	– दो शब्दो द्वारा
करतलध्वनिना	– हरततलस्य शब्देन	– ताली की आवाज से
गुञ्जायमानं जातम्	– गुञ्जितम् अभवत्	– गूंज उठा
स्वज्ञानगरिणा	– स्वज्ञानस्य गौरवेण	– अपने ज्ञान के गौरव से
वशीकुर्वन्	– आत्मसात कुर्वन्	– अपने अधीन करते हुए
पूर्वाग्रहं	– पूर्वनिर्धारितविचारम्	– पहले किए गए हठ को
विहाय	– त्यक्त्वा	– छोड़ कर
अवधारयन्तु	– धारण कुर्वन्तु	– धारण करें
निबोधत	– जानीत	– जानो
स्मारयति	– स्मरण कारयति	– याद करवाता है
गतस्पृहाः	– इच्छारहिताः	– इच्छाओं से रहित

[illegible]

- भारतभूमि. महापुरुषाणा जन्मभूमिः।
- विवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे 1863 तमे वर्षे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायामभवत्।
- अस्य पितरौ भुवनेश्वरीविश्वनाथदत्तौ च आस्ताम्।
- विवेकानन्दः अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागो नगरे 1893 तमे वर्षे विश्वधर्मसम्मेलने भारतस्य प्रतिनिधित्वमकरोत्।
- सः घोषितवान् – संसारस्य सर्वे जनाः पूर्वाग्रहं त्यक्त्वा स्वधर्मस्य पालनं कुर्वन्तः विश्वबन्धुत्व स्थापयन्तु।
- सः श्रीरामकृष्णसेवासमितेः स्थापनां मानवहितायाकरोत्।
- "उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत" इति तस्य सन्देशानां सारः अस्ति।
- परोपकारार्थं समर्पितजीवनाः केऽपि विरला एव संसारे जायन्ते।

[illegible]

[illegible]

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

   क. अस्माकं भारतदेश. कीदृश. ?

   ख. श्रीरामकृष्णपरमहंसस्य शिष्यः कः आसीत् ?

   ग. नरेन्द्रस्य पितुः नाम किमासीत् ?

   घ. विवेकानन्दस्य चेतना केषां स्पर्शमात्रेणैव जागृता ?

   ङ. अमेरिकाराष्ट्रस्य कस्मिन् नगरे विश्वधर्मसम्मेलनमायोजितमासीत् ?

[illegible]

1. **प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

   क. कीदृशोऽयं भारतदेशः ?

   ख. अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागोनगरे विवेकानन्देन अमेरिकावासिनः कथं सम्बोधिताः ?

   ग. विवेकानन्दस्मारकमण्डपं किं स्मारयति ?

   घ. विवेकानन्दस्य सन्देशानां सारः कस्मिन् वाक्ये निहितः अस्ति ?

2. **अधोलिखितेषु वाक्येषु स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

   क. **स्वामीविवेकानन्देन** भारतस्य अध्यात्मगौरवं पाश्चात्यजगति प्रतिष्ठापितम्।

   ख. शैशवावस्थायां नरेन्द्रः **कुशाग्रबुद्धिः** आसीत्।

ग. श्रीरामकृष्णपरमहंसानां स्पर्शमात्रेणैव **विवेकानन्दस्य** चेतना जागृता।

घ. विवेकानन्दः गुरोराज्ञां **शिरसि** अधारयत्।

ङ. स्वामी विवेकानन्दः **मोहनिद्राप्रसुप्तान्** जनान् प्रबोधितवान्।

3. **सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

क. यथा–		यावत् + एव	= यावदेव
	(i)	शैशवात् + एव	= ________
	(ii)	________ + ________	= स्वभावाच्च
ख. यथा–		ततः + च	= ततश्च
	(i)	स्वप्रयत्नैः + च	= ________
	(ii)	________ + ________	= भगिन्यश्च

4. **उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति–प्रत्ययविभागं कुरुत–**

क यथा–		प्रति + स्था + णिच् + क्त	= प्रतिष्ठापितम्
		____ + ____ + ____ + ____	= प्रबोधितवान्
ख. यथा–		जन् + क्त	= जातः
	(i)	जागृ + क्त	= ________
	(ii)	____ + मा + ____	= निर्मितम्

5. **उदाहरणमनुसृत्य विलोमपदानि लिखत–**

यथा – सन्तः – असन्तः

महायोगिन. ________

शिष्यः ________

वार्धक्यात् ________

शान्तः ________

सुखेन ________

मेधावी ________

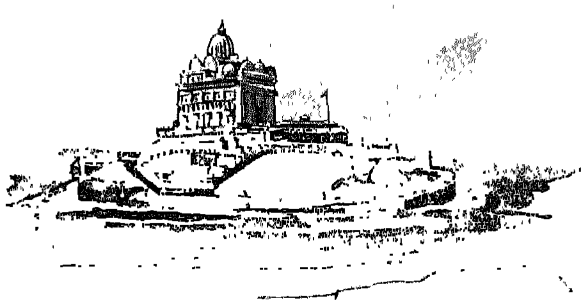
स्वीकृत्य ________

6. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि कुरुत–**

	विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
यथा–	स्वज्ञानस्य गरिमा तेन	स्वज्ञानगरिम्णा

सभाया· भवनम् ______________
विश्वस्य गुरुः ______________
विश्वस्य बन्धुत्वम् ______________
पूर्वस्य आग्रहम् ______________
राष्ट्रस्य भक्तिम् ______________
धर्मस्य समभावम् ______________

7. चित्रं दृष्ट्वा प चवाक्येषु संस्कृतभाषया वर्णयत–



स्वामी विवेकानन्दः

(क) **भावपक्ष :** स्वामिविवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायाम् 1863 तमे वर्षे अभवत्। अस्य माता भुवनेश्वरी पिता च विश्वानाथदत्त आसीत्। श्रीरामकृष्णपरमहंस· अस्य गुरुः आसीत्। सः बाल्यकालादेव समस्याना समाधाने ईदृशानि तथ्यानि प्रस्तौति स्म यदन्ये जना· तत्समक्षं निस्तब्धाः भवन्ति स्म।

एषा महाविभूति· जुलाईमासस्य चतुर्तारिकायाम् 1902 तमे वर्षे पञ्चत्वं गता। यद्यपि अस्य पार्थिवशरीरम् अद्य नास्ति किन्तु अनेन प्रदत्ता· उपदेशा· अस्मान् सर्वदा प्रेरयिष्यन्ति। तस्य सन्देशः आसीत् – "त्वम् शुद्धस्वरुपो भव। उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत ! त्वम् आत्मानम् दुर्बलं मन्यसे। भो ! सर्वशक्तिमान्, स्वस्वरूपं प्रकाशयत।

1. 'यत्' प्रत्ययप्रयोगः

चैतन्यम्	–	चेतन	+	यत्
वैदुष्यम्	–	विद्वस्	+	यत्
सौन्दर्यम्	–	सुन्दर	+	यत्
शरण्यः	–	शरण	+	यत्
पाथेयः	–	पथिन्	+	यत्
अतिथेयम्	–	अतिथि	+	यत्

2. अव्ययीभाव समासः।

1	यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	यथार्थे
2.	यथाबलम्	बलम् अनतिक्रम्य	यथार्थे
3	यथाकालम्	कालस्य अनुसारम्	यथार्थे
4.	उपगङ्गम्	गङ्गायाः समीपे	सामीप्यर्थे
5.	उपनदम्	नद्याः समीपे	सामीप्यर्थे
6.	अनुरथम्	रथस्य पश्चात्	पश्चादर्थे
7	निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभावः	अभावार्थे

अस्मिन् पूर्वपदम् अव्ययं भवत्यपरं च सज्ञा। समासे कृते समस्तपद नपुसकलिंगे एकवचने च भवति।

ठक् प्रत्ययः

धार्मिकः	–	धर्म	+	ठक् (इक्)
व्यावहारिक	–	व्यवहार	+	ठक्
दैनिकः	–	दिन	+	ठक्
वार्षिक	–	वर्ष	+	ठक्
साप्ताहिक	–	सप्ताह	+	ठक्

1. तस्मिन् भवः इत्यर्थे 'ठक्' प्रत्यय प्रयुज्यते।
2. 'ठक्' प्रत्यय 'इक' इति आदेश भवति।

3 ठक् प्रत्यययोजनात् पूर्व धातुषु पदस्य प्रथमः ह्रस्वस्वर. दीर्घः जायते।

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	"	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	"	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	"	"
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	"	अमीषु

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	"	अमीभ्य.
पञ्चमी	अमुष्मात्	"	"
षष्ठी	अमुष्य	अमुयो.	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	"	अमीषु

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	"	"
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमीभि·
चतुर्थी	अमुष्यै	"	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	"	"
षष्ठी	"	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	"	अमूषु

सप्तमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' के चिकित्सास्थान में वर्णित 24वें अध्याय से संकलित है। इरामें आचार्य सुश्रुत ने व्यायाम की परिभाषा बताकर उससे होने वाले शारीरिक सुगठन, विकसित होने वाली कान्ति, स्फूर्ति, नीरोगता तथा जठराग्नि की दीप्तता आदि लाभों की चर्चा की है। व्यायाम कितना किया जाय ? इसका समाधान करते हुए आचार्य सुश्रुत कहते है कि आधी शक्ति से व्यायाम करना सभी के लिए आवश्यक एवं लाभप्रद है।)

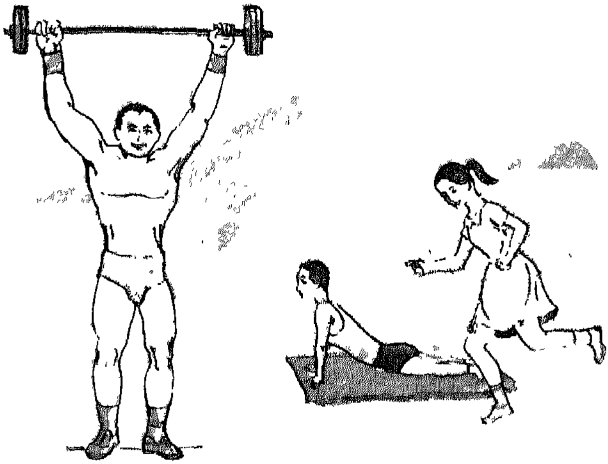
शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम्।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः।।1।।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा।।2।।

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते।।3।।

न चास्ति सदृशं तेन किंचित्स्थौल्यापकर्षणम्।
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात्।।4।।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च।।5।।



व्यायामस्विन्नगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च।
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः।
वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम्।। 6।।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते।। 7।।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम्।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः।।8।।

सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः।
बलस्यार्धेन कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा।।9।।

हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम्।।10।।

वयोबलशरीराणि देशकायाशनानि च।
समीक्ष्य कुर्याद्व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ।।11।।

आयासः	–	प्रयत्नः, प्रयासः, श्रमः	–	परिश्रम
विमृन्द्नीयात्	–	मर्दयेत्	–	मालिश करना चाहिए
समन्ततः	–	सर्वप्रकारेण	–	सभी तरह से
उपचयः	–	अभिवृद्धिः, अभ्युदयः	–	वृद्धि, उत्थान
गात्रम्	–	शरीरः	–	शरीर
मृजा	–	स्वच्छीकरणम्	–	स्वच्छ करना
क्लम्	–	श्रमजनितं शैथिल्यम्	–	थकान
पिपासा	–	पातुम् (जलम्) इच्छा	–	प्यास
उष्ण	–	तप्तः	–	गर्म
स्थौल्यम्	–	अतिमांसलत्वम्, पीनता	–	बहुत मोटापा
अपकर्षणम्	–	दूरीकरणम्	–	खींचकर दूर करना, कम करना
अर्दयन्ति	–	अर्दनं कुर्वन्ति	–	कुचल डालते हैं।
अरयः	–	शत्रवः	–	शत्रु, दुश्मन
सहसाक्रम्य	–	अकस्मात् आक्रमणं कृत्वा	–	अकस्मात् हमला करके
जरा	–	वार्धक्यम्	–	बुढ़ापा
स्विन्नगात्रस्य	–	स्वेदेन सिक्तस्य	–	पसीने से लथपथ के
विदग्धम्	–	सुपक्वम्	–	भली प्रकार पके हुए
परिपच्यते	–	जीर्यते	–	पच जाता है।
अहन्	–	दिवसः	–	दिन
पुम्भिः	–	पुरुषैः	–	पुरुषों के द्वारा
वक्त्रं	–	मुखं	–	मुँह
अशनानि	–	आहाराः/भोजनानि	–	भोजन
सुविभक्तता	–	शारीरिकम् सुगठनम्	–	शारीरिक सुगठन
वैनतेयः	–	गरुडः	–	गरुड़
उरगः	–	सर्पः	–	साँप

[illegible]

- शरीरायासजननं कर्म व्यायाम इति कथ्यते।
- व्यायामेन स्वास्थ्यवृद्धि सौन्दर्यवृद्धि, स्फूर्ति., अङ्गाना सुगठनम्, जठराग्ने दीपन, आलस्यहीनता च भवति।
- व्यायामात् आरोग्य जायते, सहिष्णुता वर्धते, पीनत्वं हीयते।
- अर्धशक्त्या एव व्यायाम. कुर्यात्। एतद्विपरीतं हानिकर भवति।
- नियमितरूपेण व्यायाम कुर्वन् जन असमये वार्धक्यं न प्राप्नोति।
- व्यायामिन पुरुष व्याधयः तथैव नायान्ति यथा वैनतेयस्य समीपम् सर्पाः नायान्ति।

[illegible]

i. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

क. शरीरायासजननं कर्म किम् उक्तम् ?

ख. व्यायाम सदा कि कथ्यते ?

ग. स्थौल्यस्य अपकर्षणं कथं भवति ?

घ. कियत् बलेन व्यायाम कर्त्तव्य ?

ङ. के व्यायामिनं पुरुष न अर्दयन्ति ?

. **अधोलिखितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. व्याधयः कस्य सकाशं न उपसर्पन्ति ?

ख. परमम् आरोग्य कथम् उपजायते ?

ग. जरा कस्य सकाश सहसा न समधिरोहति ?

घ. पाठेऽस्मिन् उरगस्य तुलना केन सह कृता वैनतेयस्य च केन सह ?

ङ. व्यायामः कीदृशं जनं सुदर्शनं कुरुते ?

च. आत्महितैषिभि कदा किम् कर्त्तव्यम् ?

2. उदाहरणमनुसृत्य यथास्थानाम् रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा–	पातुम्	इच्छा	पिपासा
	कर्तुम्	इच्छा	चिकीर्षा
क.	________	________	जिगमिषा
ख.	________	________	जिजीविषा
ग.	भोक्तुम्	इच्छा	________
घ.	________	________	पिपठिषा
ङ.	ज्ञातुम्	इच्छा	________
च.	________	________	तितीर्षा

3. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

क. **शरीरस्य** आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।

ख. **व्यायामात्** परमम् आरोग्यम् उपजायते।

ग. **बलस्यार्धेन** व्यायामः कर्त्तव्यः।

घ. **गात्राणां** सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

ङ. **अरयः** व्यायामिनं न अर्दयन्ति।

च. **व्यायामशालिनं** जन व्याधयः न उपसर्पन्ति।

4. व्यायामेन के – के लाभाः सन्ति ? चतुर्षु वाक्येषु लिखत–

5. निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् प्रयोगं रिक्तस्थानेषु कुरुत–

सहसा, समन्ततः, अपि सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा

क. ________ व्यायामं कर्त्तव्यम् ।

ख ________ मनुष्यः सम्यक्रूपेण व्यायाम करोति, सः ________ स्वस्थः तिष्ठति।

ग. असुन्दराः ________ सुन्दरा भवन्ति।

घ. व्यायामेन ________ किञ्चित् स्थाल्यापकर्षणं नास्ति।

ङ. नापित ________ शरीर मर्दयति।

च. व्यायामिनं जनस्य सकाशम् ________ वार्धक्यम् न आयाति।

6. क. समस्तपदानि / विग्रहं लिखत।

क. शरीरस्य आयासः ________

ख. ________ शरीरोपचयः

ग. स्थौल्यस्य अपकर्षणम् ________

घ. ________ व्यायामनिरताः

ख. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् पृथक् कृत्वा लिखत।

यथा –

	सुदर्शनम्	सु + दर्शनम्
क.	उपजायते	——— + ———
ख.	अपकर्षणम्	——— + ———
ग.	अधिरोहति	——— + ———
घ.	प्रपद्यते	——— + ———
ङ.	सुविभक्तता	——— + ———

7. उदाहरणमनुसृत्य तरप् – तमप् प्रत्यययोगेन पदरचनां कुरुत।

		तरप्	तमप्
उदाहरणम्	उच्चः	उच्चतरः	उच्चतमः
क.	पथ्यः	———	———
ख.	अधिकः	———	———
ग	गुरु	———	———
घ.	शीघ्रम्	———	———
ङ.	अल्पम्	———	———
च.	तीव्रम्	———	———
छ.	कुशलः	———	———
ज	बलवत्	———	———

क सुश्रुतः आयुर्वेदस्य 'सुश्रुतसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अस्मिन् ग्रन्थे शल्यचिकित्सायाः प्राधान्यमस्ति। सुश्रुतः शल्यशास्त्रज्ञस्य दिवोदासस्य शिष्य आसीत्। दिवोदासः सुश्रुतं वाराणस्या आयुर्वेदमपाठयत्। सुश्रुतः दिवोदासस्योपदेशान् स्वग्रन्थेऽलिखत्।

ख उपलब्धासु आयुर्वेदीयसंहितासु सुश्रुतसंहिता सर्वश्रेष्ठः शल्यचिकित्साप्रधानो ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे 120 अध्यायेषु क्रमेण सूत्रस्थाने मौलिकसिद्धान्तानां शल्यकर्मोपयोगियंत्रादीनां, निदान स्थाने प्रमुखानां रोगाणां, शरीरस्थाने शरीरशास्त्रस्य चिकित्सास्थाने, शल्यचिकित्साया कल्पस्थाने च विषाणां प्रकरणानि वर्णितानि। अस्योत्तरतन्त्रे 66 अध्यायाः सन्ति।

(i) **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**

(ii) **लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।**
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

(iii) यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनम्, उचितश्च व्यवहारः आवश्यकोऽस्ति तथैव शरीरस्य स्वास्थ्याय व्यायामः अपि अत्यावश्यकः।

(iv) पक्षिणः आकाशे उड्डीयन्ते तेषां उड्डयनमेव तेषां व्यायामः। पशवोऽपि इतस्ततः पलायन्ते, पलायनमेव तेषां व्यायामः। शैशवे शिशुः स्वहस्तपादौ चालयति, अयमेव तस्य व्यायामः। व्यायामेन शरीरस्य अङ्गाना विकासो भवति। मनुष्यैः सुखपूर्वकं जीवनं यापयितुं नित्यं व्यायामः करणीयः।

व्यायामः (पु) = वि + आ + यम् + घञ् = पौरुष

अष्टमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ महाकवि भास-विरचित पञ्चरात्र नामक नाटक के द्वितीय अङ्क से सम्पादित कर उद्धृत है। दुर्योधनादि कौरव वीरों द्वारा आक्रमण करके राजा विराट की गायों का हरण कर लिया जाता है। विराट पुत्र उत्तर बृहन्नला को सारथी बनाकर कौरव सेना का सामना करने जाते हैं। कौरवों की तरफ से अभिमन्यु भी लड़ रहा होता है। इसी बीच पुत्र की सहायता के लिए उद्यत महाराज विराट को दूत से सूचना मिलती है कि भीष्म आदि महारथी युद्ध में परास्त हो गए हैं। केवल अभिमन्यु हीं लड रहा है। कुछ समय बाद दूत पुनः सूचना देता है कि पाकशाला के रसोइये बल्लभ द्वारा अभिमन्यु पकड़ लिया गया है। यह सुन कर राजा विराट अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु को आदर पूर्वक अपने समक्ष उपस्थित करने का आदेश देते हैं। इस पाठ में अभिमन्यु के साथ छद्मवेशी भीम तथा अर्जुन के साथ हुए वार्तालाप का वर्णन है।)

भटः – जयतु महराजः।

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः असि ?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः।

राजा – कथमिदानीं गृहीतः ?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः।

राजा – केन ?

भटः – यः किलैष नरेन्द्रेण महानसे विनियुक्तः, तेन

बृहन्नला – (अपवार्य) एवम् ! आर्यभीमेन परिष्वक्तः, न तु गृहीतः।

राजा – तेन हि सत्कृत्य प्रवेश्यतामभिमन्युः। अथ केनायं प्रवेशयितव्यः ?

भगवान् – बृहन्नलया प्रवेशयितव्यः।

राजा – बृहन्नले ! प्रवेश्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – यदाज्ञापयति महाराजः। (आत्मगतम्) चिरस्य खल्वाकांक्षितोऽयं नियोगः लब्धः। (निष्क्रान्ता)

(ततः प्रविशति भीमः अभिमन्युना सह)



भीमसेनः – (स्वगतम्)

आदीपिते जतुगृहे स्वभुजावसक्ता,
मद्भ्रातरश्च जननी च मयोपनीताः।

सौभद्रमेकमवतार्य रथात्तु बालम्,
तं च श्रमं प्रथममद्य समं हि मन्ये।।
(प्रकाशम्) इतः इतः कुमार।

अभिमन्युः — भोः को नु खल्वेषः ? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला — इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः — अये ! अयमपरः कः ?
अयुज्यमानैः प्रमदाविभूषणैः, करेणुशोभाभिरिवार्पितो गजः।
लघुश्च वेषेण महानिवौजसा, विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।।

बृहन्नला — (अपवार्य) इममिहानयता किमिदानीमार्येण कृतम् ? प्रथमे युद्धे एव अभिमन्युः पराजयतां नीतः। नैतत् शोभनम्। पूर्वमेव पतिवियुक्ता सुभद्रा पुत्रवियुक्तापि कृता। अभिमन्युं प्रति वासुदेवोऽपि रुष्यति ? एवं स्वात्मभुजबलमेव त्वया दूषितः।

भीमसेनः — अर्जुन !

बृहन्नला — अथ किम् अथ किम् अर्जुनपुत्रोऽयम्।

भीमसेनः — (अपवार्य) जानामि यत् इममिहानयता नोचितं कृतं परं किं स्वपुत्रं शत्रुहस्ते त्यक्तुं युज्यते। अपि च दुःखे मग्ना द्रौपदी एनं पश्यतु। इति विचिन्त्य एवाहृतः अयम्।

बृहन्नला — आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्। वाचालयत्वेनमार्य।

भीमसेनः — (अपवार्य) बाढम्, (प्रकाशम्) अभिमन्यो !

अभिमन्युः — अभिमन्युर्नाम

भीमसेनः — रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला — अभिमन्यो !

अभिमन्युः — कथं कथम् ! अभिमन्युर्नामाहम् ! भोः ! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्तो अथवा अहं शत्रुवशं गतः अत एव तिरस्क्रियते।

बृहन्नला – अभिमन्यो ! सुखमास्ते ते जननी ?

अभिमन्युः – कथं कथम् ? जननी नाम ? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे ?

बृहन्नला – अभिमन्यो ! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः ?

अभिमन्युः – कथं कथम् ? तत्रभवन्तमपि नाम्ना ! अथ किम् अथ किम्? कुशली भवतः संसृष्टः।
(उभौ परस्परमवलोकयतः)

अभिमन्युः – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते ?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।
पार्थं ! पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम्।
तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः।।

अभिमन्युः – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन ! अस्माकं कुले आत्मस्तवंकर्तुमनुचितम्! रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य मदृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम् ! किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः ?

अभिमन्युः – अशस्त्रः मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति अतः अशस्त्रोऽयं माम् व चयित्वा गृहीतवान्।

भीमसेनः – (आत्मगतम्)
धन्यः खल्वर्जुनो येन प्रत्यक्षमुभयं श्रुतम्।
पुत्रस्य च पितुःश्लाघ्यं संग्रामेषु पराक्रमः ।।

[illegible]

अश्रद्धेयम्	– न श्रद्धेयम्	– श्रद्धा के अयोग्य
सौभद्रः	– सुभद्रायाः पुत्रः अभिमन्युः	– सुभद्रा का पुत्र अर्थात् अभिमन्यु
आसाद्य	– प्राप्य	– पहुँच कर

निःशङ्कम्	—	शङ्कया रहितम्	—	बिना किसी हिचक के
विनियुक्तः	—	अधिकृतः	—	जिसे विशेष रूप में नियुक्त किया गया है।
महानसे	—	पाकशालायाम्	—	रसोई मे
परिष्वक्तः	—	आलिङ्गितः	—	जिसका आलिङ्गन किया गया है।
सत्कृत्य	—	सत्कारं कृत्वा	—	सत्कार करके
चिरस्य खलु	—	सुचिरप्रतीक्षित.	—	अत्यत चिरकाल से जिसकी प्रतीक्षा की जा रही हो।
नियोगः	—	आज्ञा	—	आदेश
लब्धः	—	प्राप्तः	—	प्राप्त किया।
जतु	—	लाक्षा	—	लाख
आदीपिते	—	अग्निना प्रदीप्ते	—	आग से जलने पर
उपनीताः	—	स्थानान्तरं प्रापिताः	—	दूसरे स्थान पर पहुँचाए गए।
भुजैकनियंत्रितः	—	एकेनैव बाहुना संयत.	—	एक ही हाथ से पकडा हुआ (पकड कर लाया हुआ)।
प्रमदा	—	स्त्री	—	स्त्री
विभूषणैः	—	अलङ्करणैः	—	गहनों से
करेणुः	—	हस्तिनी	—	हथिनी
विभाति	—	शोभते	—	शोभित होता है।
वियुक्ता	—	पृथक्भूता	—	अलग हुई।
रुष्यति	—	क्रुद्धः भवति	—	क्रुद्ध होता है।
दूषितः	—	भ्रष्टः, विकृतः, दोषयुक्त.	—	दोषयुक्त
वाचालयतु	—	वक्तुं प्रेरयतु	—	बोलने को प्रेरित करे।
पितृव्यः	—	पितुः भ्राता	—	चाचा
संसृष्टः	—	सम्बन्धी	—	सम्बन्धी
अवलोकयतः	—	पश्यतः	—	देखते है
ऋते	—	विना	—	बिना
वाक्शौण्डीर्यम्	—	वाचनिकं वीरत्वम्	—	वाचनिक वीरता।
पदातिः	—	पद्भ्याम् अतति	—	पैदल चलने वाला

- भटः प्रविश्य महानसे विनियुक्तेन सूदेन अभिमन्योः हरणवार्ताम् राज्ञे विज्ञापयति।
- बृहन्नला भीमसेनश्च अभिमन्युमधिकृत्य वार्तालापं कुरुतः।
- अभिमन्युना सह वक्तुकामा बृहन्नला तस्य मातुः सुभद्रायाः कृष्णस्य च कुशलं पृच्छति।
- स्वापहरणात् क्रुद्धः अभिमन्युः बृहन्नलाभीमसेनाभ्यां सह वार्तां कर्तुं नेच्छति।

1. **एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत–**
   - क. अस्मिन् नाट्यांशे भटेन कस्य हरणं ज्ञापितम् ?
   - ख. अभिमन्युः केन गृहीतः ?
   - ग बृहन्नलायाः वेशे वस्तुतः कः आसीत् ?
   - घ प्रथमे युद्धे एव कः पराजयतां नीतः ?
   - ङ. अभिमन्योः कुले किं कर्तुम् अनुचितम् आसीत् ?

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत–**
   - क. अभिमन्युः कथं गृहीतः आसीत् ?
   - ख बृहन्नला भीमसेनम् अभिमन्युं वाचालयितुं किमर्थं कथयति ?
   - ग भीमसेनः अर्जुनं किमर्थं धन्यं मन्यते ?
   - घ. भीमसेनः किं विचार्य अभिमन्युं गृहीतवान् ?
   - ङ. अभिमन्युः आत्मानं कथं तिरस्कृतमिव अनुभवति ?

2. **स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   - क. अभिमन्युः **बृहन्नलया** प्रवेशयितव्यः।
   - ख. भीमः **अभिमन्युना** सह प्रविशति।
   - ग **उभौ** परस्परमवलोकयतः।
   - घ. **अभिमन्युः** पदातिना गृहीतः।

ङ अभिभाषणकौतूहलं मे महत्।

3. **अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत–**

1. भोः ! को नु खल्वेष ? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।
(विस्मयः, हर्षः, जिज्ञासा)
2. इममिहानयता किमिदानीमार्येण कृतम् ?
(क्रोधः, नैराश्यम्, क्षोभः)
3. अभिमन्युर्नामाऽहम्
(आत्मप्रशंसा, स्वाभिमानः, दैन्यम्)
4. कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगता कथां पृच्छसे ?
(लज्जा, क्रोधः, प्रसन्नता)

4. **मञ्जूषातः अव्ययपदानि विचित्य अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**

क. भीमः अभिमन्युना ———— प्रविशति।
ख. ———— केनायं प्रवेशयितव्यः।
ग. पूर्वमेव पतिवियुक्ता सुभद्रा पतिवियुक्ता ———— कृता।
घ. प्रथमे युद्धे ———— अभिमन्युः पराजयता नीतः।
ङ. भोः को नु ———— एषः।
च. अपूर्वः ———— ते हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः असि ?

इव,	एव,	खलु
सह,	अथ,	अपि

5. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु उचितां विभक्तिं प्रयुज्य वाक्यानि पूरयत–**

उदाहरण – भीमः – सह प्रविशति। (अभिमन्यु)
भीमः **अभिमन्युना** सह प्रविशति।

क. ———— सह सीता अपि वनम् अगच्छत्। (राम)
ख. पुत्रः अपि ———— साकम् आपणं गच्छति। (पितृ)
ग. ———— समम् राधा अपि भोजनं पचति (लता)
घ. सः ———— प्रति गच्छति। (विद्यालय)
ङ. अहम् ———— प्रति गच्छामि। (गृह)

6. उदाहरणमनुसृत्य पदपरिचयं कुरुत–

क. त्यक्तुम् – त्यज् + तुमुन्।

पठितुम् – ________ + ________

गन्तुम् – ________ + ________

ख समासाद्य – सम् + आ + सद् + णिच् + ल्यप्

आदाय – ________ + ________ + ________

सम्पूज्य – ________ + ________ + ________

ग. विस्मितः – वि + स्मि + क्त

पूजितः – ________ + ________

कृत. – ________ + ________

अष्टमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ महाकवि भास-विरचित पञ्चरात्रम् नामक नाटक के द्वितीय अङ्क से सम्पादित कर उद्धृत है। इसमें पिछले नाट्यांश के आगे की घटना का वर्णन है।

राजा विराट बृहन्नला से अभिमन्यु को उनके समक्ष शीघ्रता से लाने का निर्देश देते हैं। महाराज विराट को अपना नरेश न मानते हुए अभिमन्यु उन्हें प्रणाम नहीं करता है किन्तु पास में खड़े ब्राह्मणवेशधारी युधिष्ठिर को प्रणाम करता है। युधिष्ठिर अभिमन्यु को आशीर्वाद देते हैं। महाराज विराट अभिमन्यु के व्यवहार से किंचित् क्षुब्ध होकर उसके गर्व को अपनी आक्षेप भरी वाणी से शमन करने की चेष्टा करते हैं। इसी क्रम में भीमसेन से वीरतापूर्ण वाणी को सुनकर अभिमन्यु उनसे पूछता है कि आप कौन हैं ? जो मेरे मध्यम तात के समान वचन बोल रहे हैं। महाराज विराट द्वारा मध्यम तात के विषय में पूछने पर अभिमन्यु कहता है कि जिन्होंने जरासन्ध का वध किया है वही मेरे मध्यम तात हैं। इसी बीच राजकुमार उत्तर का प्रवेश होता है जिसके द्वारा सभी को अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर का भेद ज्ञात हो जाता है। अपने पितृचरणों को सम्मुख देख अभिमन्यु अत्यधिक प्रसन्न होता है और तुरन्त उन्हें प्रणाम करता है।)

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

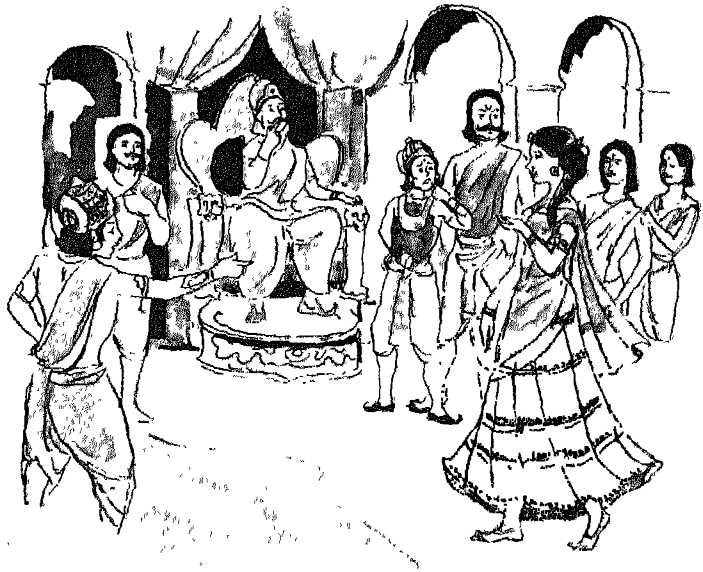
बृहन्नला – इत इतः कुमारः एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्युः – आः ! कस्य महाराजः ?

बृहन्नला – न, न ब्राह्मणेन सहास्ते।
अभिमन्युः – ब्राह्मणेनेति ? (उपगम्य) भगवन् ! अभिवादये।
भगवान् – एह्येहि वत्स।
शौण्डीर्यं धृतिविनयं दयां स्वपक्षे माधुर्यं धनुषि जयं पराक्रमं च।
एकस्मिन् पितरि गुणानवाप्नुहि त्वं शेषाणां यदपि रोचते चतुर्णाम्।।1।।
अभिमन्युः – अनुगृहीतोऽस्मि।
राजा – एह्येहि पुत्र ! कथं न मामभिवादयसि ? अहो ! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। अथ केनायं गृहीतः ?
भीमसेनः – महाराज ! मया।
अभिमन्युः – अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।
भीमसेनः – शान्तं पापम् ! धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
अभिमन्युः – मा तावद्भोः ! किं भवान् मध्यमः तातः यः तस्य सदृशं वचः वदति।
भगवान् – पुत्र कोऽयं मध्यमो नाम ?
अभिमन्यु – श्रूयताम् ! अथवा नन्वनुत्तरा वयं ब्राह्मणेषु। साध्वन्यो ब्रूयात्।
राजा – भवतु ! भवतु ! मद्वचनात् पुत्र ! कोऽयं मध्यमो नाम ?
अभिमन्युः – योक्त्रयित्वा जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना।
असह्यं कर्म तत् कृत्वा नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्।।2।।
राजा – न ते क्षेपेण रुष्यामि, रुष्यता भवता रमे।
किमुक्त्वा नापराद्धोऽहं, कथं तिष्ठति यात्विति।।3।।
अभिमन्युः – यद्यहमनुग्राह्यः –
पादयोः समुदाचारः, क्रियतां निग्रहोचितः।
बाहुभ्यामाहृतं भीमः, बाहुभ्यामेव नेष्यति।।4।।
(ततः प्रविशत्युत्तरः)
उत्तरः – तात ! अभिवादये।

राजा — आयुष्मान् भव पुत्र ! पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।

उत्तरः — पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।



राजा — पुत्र ! कस्मै ?

उत्तरः — इहात्रभवते धनञ्जयाय।

राजा — कथं धनञ्जयायेति।

उत्तरः — अथ किम्

श्मशानद्धनुरादाय तूणी चाक्षयसायके।
नृपा भीष्मादयो भग्ना वयं च परिरक्षिताः।।5।।

राजा — एवमेतत्

उत्तरः — व्यपनयतु भवाञ्छङ्काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।

बृहन्नला – यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।

अभिमन्युः – इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु

न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम्।
दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः।।6।।

(भीमसेनमुद्दिश्य) भोस्तात !

अज्ञानात्तु मया पूर्वं यद्भवान् नाभिवादितः!
तस्य पुत्रापराधस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि।।7।।

(इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति)

[illegible]

श्लाघ्यम्	–	प्रशंसायोग्यम्	–	प्रशंसा योग्य
त्वर्यताम्	–	शीघ्रतां करोतु	–	शीघ्रता करें
उत्सिक्तः	–	गर्वोद्धतः	–	गर्व से उद्धत
दर्पप्रशमनं	–	गर्वस्य शमनम्	–	गर्व का शमन करना।
प्रहरणम्	–	शस्त्रम्	–	हथियार
योक्त्रयित्वा	–	बद्ध्वा	–	बाँधकर
क्षेपेण	–	निन्दावचनेन	–	निन्दा से
रमे	–	प्रीतो भवामि	–	प्रसन्न होता हूँ।
व्यपनयतु	–	दूरीकरोतु	–	दूर करें
आप्नुहि	–	प्राप्नुहि	–	प्राप्त करो / करें
तूणी	–	तूणीरम्	–	तरकस
क्षिप्ता	–	आक्षेपिता	–	आक्षेप किए जाने पर
दिष्ट्या	–	भाग्येन	–	भाग्य से
गोग्रहणम्	–	धेनूनामपहरणम्	–	गायों का अपहरण

- राजसभायां प्रवेशानन्तरं राज्ञा सह अभिमन्योः वार्तालापः भवति।
- भीमसेनेन बृहन्नलया च पृष्टः अभिमन्युः रोषवशात् सम्यक् उत्तरं न ददाति।
- अभिमन्युं वारं वारं स्वपितृव्यानां शौर्यस्य व्याख्यानं करोति।
- येन बाहुभ्यां बध्वा जरासन्धः हतः स एव मध्यमः तातः।
- अहं अत्र बाहुभ्याम् आनीतः, मम तातः भीमः माम् इतः बाहुभ्याम् नेष्यति।
- बृहन्नलावेषधरेण अर्जुनेनैव श्मशानाद्धनुरादाय भीष्मादयो नृपाः पराजिताः वयं च रक्षिताः।
- गोग्रहणं भाग्येन सञ्जातं येन स्वपितॄन् दृष्टवानहम्।

1. **एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत–**
   - क. बृहन्नलायाः वेशे वस्तुतः कः आसीत् ?
   - ख. कस्य भुजौ एव प्रहरणम् ?
   - ग. भीमसेनः जरासन्धं केन बद्धवान् ?
   - घ. चतुर्णां पितॄणां कति गुणाः वर्णिताः ?

1. **संस्कृतभाषया पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत–**
   - क. के पूजिताः ?
   - ख. उत्तरः कः आसीत् ?
   - ग. अभिमन्युः कस्य शौर्यस्य व्याख्यानं करोति ?
   - घ. स्वरहस्यप्रकटिते सति बृहन्नलया किमुक्तम् ?
   - ङ. अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः इति कः उक्तवान् ?
2. **स्थूलापदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   - क. उत्सिक्तः खलु **अयं क्षत्रियकुमारः**।
   - ख. नन्वनुत्तरा वयं **ब्राह्मणेषु**।

ग. धनु. दुर्बलैः गृह्यते।

घ. इहात्रभवन्तो मे पितर.।

ङ पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

3. **अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत–**

1. पादयोः समुदाचारः क्रियतां निग्रहोचितः।
(शोकः, हर्षः, आत्मविश्वासः)

2 बाहुभ्यामाहृतं, भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।
(दृढविश्वासः, उत्साहः, निराशा)

3. धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते, मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
(शौर्य. वाक्सयमः, उत्साह.)

4 दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्त पितरो येन दर्शिता.।
(धृतिः, क्षमा, हर्ष.)

4. **उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–**

उदाहरण	येन पितरः दर्शिता.	यः पितॄन् दर्शितवान्।
क	केन अय गृहीतः ?	________________
ख	पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।	________________
ग	भवद्भि. वयं परिरक्षिताः।	________________
घ.	भवान् शंकां व्यपनयतु।	________________
ङ	वय ब्राह्मणेषु अनुत्तराः जाताः।	________________

5. **उदाहरणनुसारं कोष्ठकप्रदत्तशब्देन सह समुचिताम् – उपपदविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

उदाहरण – किं **भवते** पितॄणां गुणाः रोचन्ते ? (भवत्)

क ________ मोदकाः अतीव रोचन्ते। (अस्मद्)

ख ________ सह सः विराजते। (ब्राह्मण)

ग. भवान् कथ न ________ अभिवादयति ? (अस्मद्)

घ. पिता ________ विश्वसिति (पुत्र)

ङ ________ पूजा अनिवार्या ? (किम् पुल्लिङ्ग)

च अह ________ न अपराद्धः। (युष्मद्)

K

कविपरिचयः

संस्कृतनाटककारेषु महाकवेः भासस्य नाम अग्रगण्यम् अस्ति। अस्य नाटकानाम् प्रकाशनम् सर्वप्रथमं विशेषानुसन्धानेन 1902 तमे वर्षे टी गणपतिशास्त्रिणा एव कृतम्। अस्य कवेः त्रयोदशनाटकानि सन्ति येषां नामानि –

दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, उरुभङ्गम्, मध्यमव्यायोगः, पञ्चरात्रम्, अभिषेकनाटकम्, बालचरितम्, अविमारकम्, प्रतिमानाटकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम्, चारुदत्तम् च सन्ति।

ग्रन्थपरिचयः

अयं नाट्यांशः महाकविभासविरचितात् 'पञ्चरात्रम्' इति नाम नाटकात् गृहीतः। महाभारतस्य विराटपर्वे पाण्डवानाम् अज्ञातवाससमये दुर्योधनः एकं यज्ञं करोति। यज्ञस्य समाप्त्यनन्तरं दुर्योधनः आचार्यद्रोणाय गुरुदक्षिणां दातुमिच्छति। गुरुः पाण्डवानां राज्याधिकारं गुरुदक्षिणारूपेण इच्छति। अनेन क्रोधितः शकुनिः विरोधं करोति। अस्मिन् प्रसङ्गे दुर्योधनः कथयति यदि गुरुद्रोणः पाण्डवानाम् अज्ञातवासं पञ्चरात्रिषु प्रकटयन्तु तर्हि तेषां दायाद्यं दातुं शक्यते। अत एव अस्य नाटकस्य नाम 'पञ्चरात्रम्' इत्यस्ति।

अस्मिन् नाटके स्वकीये यज्ञे विराटराज्ञः अनुपस्थितिकारणात् रुष्टः दुर्योधनः तस्य गोधनं हर्तुं विराटनगरम् आक्रामति तत्र अभिमन्युः अपि कौरवपक्षात् युद्धक्षेत्रं गच्छति यत्र भीमसेनः छद्मवेषेण अभिमन्योः हरणं करोति।

क. अतदर्हताम् – जरासन्धवध – अनर्हत्वम् (dreadful dead) जरासंधं हत्वा भीमेन श्रीकृष्णाय शत्रुवधस्य अवसरः नैव प्रदत्तः

ख. जरासन्धः – कृष्णः जरासंधस्य जामातुः कंसस्य बधमकरोत् येन जरासंधस्य पुत्रीवैधव्यं प्रापिता। अनेन क्रुद्धः जरासन्धः सर्वेषां यदुवंशीयानां विनाशस्य प्रतिज्ञां कृतवान्। एतदर्थम् सः वारंवारम् मथुरायाम् आक्रमणमकरोत् कृष्णम् च अष्टादशवारं गृहीतवान् परं यथाकथञ्चित् कृष्णः ततः पलायितः। अस्मिन्नाटके भीमसेनः कथयति यत् धनुः दुर्बलैः गृह्यते मम तु भुजौ एवं प्रहरणम् एतादृशः एव भावः अन्येषु अपि नाटकेषु दृश्यते। तद्यथा –

(i) अयं तु दक्षिणो बाहुरायुधं सदृश मम – मध्यमव्यायोग.

(ii) भीमस्यानुकरिष्यामि शस्त्रं बाहुर्भविष्यति। मृच्छ

(iii) वयमपि च भुजायुद्धप्रधाना। अवि

ग. महाभारतानुसार भीमस्य जन्म युधिष्ठिरानन्तरम् अभवत्। तत्र अर्जुनः एव मध्यमः मन्यते परं महाकवि· भासः भीमम् एव मध्यमपाण्डवं स्वीकरोति।

[illegible]

(i) 'अलम्' इतिनिषेधार्थे तृतीयाविभक्तिः प्रयुज्यते।

(ii) पर्याप्ते अर्थे च चतुर्थी विभक्तिः।

यथा– अलम् स्वच्छन्दप्रलापेन।
अलम् विवादेन।
अलम् प्रमादेन।
अलम् कोलाहलेन।

अत्र 'अलम्' इतिशब्दस्य योगे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता।

अलम् भीमः **दुर्योधनाय** अलम्।
अलम् अर्जुनः **कर्णाय** अलम्।
अलम् लक्ष्मण· **मेघनादाय** अलम्।

अत्र 'अलम्' इति शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्तिः प्रयुक्ता।

1. कर्तृकर्मभाववाच्येषु क्रियारूपाणि अधोलिखितानि भवन्ति।

कर्तृवाच्ये	–	कर्मवाच्ये / भाववाच्ये
पठति	–	पठ्यते
लिखति	–	लिख्यते
खादति	–	खाद्यते
पिबति	–	पीयते
गायति	–	गीयते
हसति	–	हस्यते
शृणोति	–	श्रूयते

2. अव + लोकृ धातोः रूपाणि –

लट् लकारे

अवलोकयति	अवलोकयतः	अवलोकयन्ति
अवलोकयसि	अवलोकयथः	अवलोकयथ
अवलोकयामि	अवलोकयावः	अवलोकयामः

नवमः पाठः

[illegible]

(हमारे वातावरण में भौतिक सुख के साथ-साथ अनेकों प्रकार की आपदाएँ भी साथ-साथ लगी रहती हैं। प्राकृतिक आपदाएं जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। कभी किसी महामारी की आपदा, बाढ़ तथा सूखे की आपदा या तूफान के रूप में महा भयंकर प्रलय – ये सब हम अपने जीवन में देखते रहते है। ऐसी ही एक प्राकृतिक आपदा है – भूकंप। जिसके बारे में इस पाठ में दृष्टिपात किया गया है। इस पाठ के माध्यम से यह बताया गया है कि किसी भी आपदा में बिना किसी घबराहट के, हिम्मत के साथ किस प्रकार हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं।)

2001 तमे वर्षे गणतन्त्रदिवसपर्वणि यदा समग्रमपि भारतराष्ट्रं नृत्यगीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जरराज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नञ्च जातम्। भूकम्पस्य दारुणविभीषिका समस्तमपि गुर्जरक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपदं ध्वंसावशेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु मृत्तिकाक्रीडनकमिव खण्डखण्डम् जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युद्दीपस्तम्भाः। विशीर्णाः गृहसोपानमार्गाः। फालद्वये विभक्ता भूमिः। भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वारजलधाराभिः महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता

सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं करुणकरुणं क्रन्दन्ति स्म। हा दैव ! क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।



इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छभूकम्पस्य। एतादृशी एव भयावहघटना कतिपयवर्षपूर्वं गढवालक्षेत्रे महाराष्ट्रे चापि घटिता। किञ्च, समग्रमपि विश्वमिदानीमातंकितं दृश्यते भूकम्पैः। विचित्रमिदम् पृथिव्याः कम्पनं येन हसन्, गायन्, नृत्यन् सुखेन जीवंश्च लोको नेत्रनिमीलनावधौ एव श्मशानतामुपयाति।

प्राक्तनयुगेऽपि भूकम्पा अजायन्त। देवराज इन्द्र एव प्रथमं व्यथमानां प्रकुपितां प्रचलन्तीं च पृथ्वीं शान्तामकरोदित्याह ऋग्वेदः। पृथ्वी कस्मात्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमाना बृहत्यः पाषाणशिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनं च। तदेव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिस चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या पर्वताग्रमुखं विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूमभस्मावृतं जायते तदा गगनम्। सेल्सियशतापमात्राया अष्टशताङ्कतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पार्श्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति। आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिर्निहन्यन्ते पिपीलिका इव विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम। यद्यपि तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते, प्रकृतिसमक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पु जीकरणीयम् अन्यथा एवं कृते हि असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति। वस्तुतः शान्तानि एव प चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

शब्दार्थाः

नृत्यगीतवादित्राणाम्	–	नृत्यगीतवाद्यानाम्	–	नाच गाने एवं बाजो के
पर्याकुलम्	–	व्याकुलम्	–	व्याकुल
विपर्यस्तम्	–	अस्तव्यस्तम्	–	अस्त-व्यस्त
क्रन्दनविकलम्	–	क्रन्दनेन विकलम्	–	क्रन्दन से व्याकुल
विपन्नम्	–	विपत्तियुक्तम्	–	विपत्तिग्रस्त
परिवर्तितवती	–	परिवर्तनं कृतवती	–	परिवर्तित कर दिया
मृत्तिकाक्रीडनकमिव	–	मृत्तिकायाः क्रीडनकमिव	–	मिट्टी के खिलौने के समान
बहुभूमिकानि	–	बहव्य. भूमिकाः	–	बहुमंज़िले मकान
उत्खाताः	–	उत्पाटिताः	–	उखड गए
विद्युद्दीपस्तम्भाः	–	विद्युतः दीपाः तेषाम् स्तम्भाः (तत्पुरुष)	–	बिजली के खम्भे

विशीर्णाः	–	नष्टाः	–	बिखर गए
फालद्वये	–	खण्डद्वये	–	दो खण्डो मे
निस्सरन्तीभिः	–	आगच्छन्तीभिः	–	निकलती हुई ; बाहर आती हुई
दुर्वार	–	दुःखेन निवारयितु योग्यम्	–	जिनको हटाना कठिन है।
महाप्लावनम्	–	महत् प्लावनम्	–	विशाल बाढ
प्राणिनः	–	प्राणवन्तः	–	प्राणवान् प्राणी
नेत्रनिमीलनावधौ	–	नेत्रनिमीलनस्य अवधौ	–	नेत्र बन्द करने में लगने वाला समय (क्षण भर में)
श्मशानताम्	–	श्मशानभावम्	–	श्मशान जैसी दशा को
विचारणीयम्	–	विचारयोग्यम्	–	विचार करने योग्य
अजायन्त	–	उत्पन्नाः जाताः	–	उत्पन्न हुए
बृहत्यः	–	महत्यः	–	विशाल, बडी
क्वथयति	–	उत्तप्तं करोति	–	उबालती है, तपाती है
विदार्य	–	विदीर्ण कृत्वा	–	फाडकर
उच्छलन्तीभिः	–	उपरि गच्छन्तीभि.	–	उछलती हुई
उद्गिरन्तः	–	प्रकटयन्तः	–	प्रकट करते हुए
योगक्षेम	–	अप्राप्तस्य प्राप्ति योगः योगस्य रक्षणं इति क्षेम	–	अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त का रक्षण।

[illegible]

- गणतंत्रदिवससमारोहे गुर्जरराज्यस्य कच्छजनपदे विशेषतः भुजनगरे महाविनाशकारी भूकम्प. जातः।
- भूमिगर्भात् बहिः आगच्छन्तीभिः जलधाराभिः महाप्लावनस्य दृश्यम् उपस्थापितम्।
- अनेके जनाः अस्या दारुणविभीषिकायां मृताः परं केचन ईशकृपया रक्षिताः।
- भूकम्पस्य अन्याः घटनाः गढवालप्रदेशे, महाराष्ट्रप्रदेशे अपि घटिताः।
- भूकम्पेन नेत्रनिमीलिनावधौ हसन् खेलन् च जगत् श्मशानतां नीयते।
- विशालपाषाणशिलाना त्रुटनेन स्खलनं भवति, स्खलनेन च कम्पनम्। एतस्य एव कम्पनस्य

धरायाः उपरितले आगते महत्कम्पनं भवति, येन महाविनाशः सम्भवति।

- ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते।
- यद्यपि भूकम्परोद्धुं कश्चित् सुनिश्चितोपायः नास्ति तथापि बहुतलात्मकभवनानां निर्माणं परित्यज्य, महाजलाशयानां निर्माणं त्यक्त्वा, पञ्चभूतानां नैसर्गिकसंतुलने विघातं विहाय भूकम्पं किञ्चित् न्यूनं कर्तुं शक्यते।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–

क. समस्तराष्ट्रं केषाम् उल्लासे मग्नं आसीत् ?

ख. भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत् ?

ग. पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते ?

घ. समग्रो विश्वः कैः आतंकितः दृश्यते ?

ङ. केषां पर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते ?

च. कीदृशानि भवनानि धराशायिनः जायन्ते ?

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

क. पृथिव्याः प्रकोपः कथं विचित्रः प्रतिभाति ?

ख. पृथ्वी कथं प्रकम्पते ?

ग. भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कानि च तत्वानि कल्पन्ते ?

घ. गणतन्त्रदिवसपर्वणि गुर्जरप्रदेशः कीदृशो जातः ?

2. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–

अ. परसवर्णसन्धिनियमानुसारम्

(i) किञ्च = ________ + च

(ii) ________ = नगरम् + तु

(iii) विपन्नञ्च = ________ + ________

(iv) ________ = किम् + नु

(v) भुजनगरन्तु = ———— + ————

(vi) ———— = सम् + चय.

आ. विसर्गसन्धिनियमानुसारम्

(i) शिशवस्तु = ———— + ————

(ii) ———— = विस्फोटैः + अपि

(iii) सहस्रशोऽन्ये = ———— + अन्ये

(iv) विचित्रोऽयम् = विचित्रः + ————

(v) ———— = भूकम्पः + जायते

(vi) वामनकल्प एव = ————

3. क. विपरीतार्थपदानां मेलनं कुरुत–

अ		ब	
(i)	पर्याकुलम्	(i)	शान्तचित्ताम्
(ii)	विपन्नम्	(ii)	अशान्तानि
(iii)	क्षणेनैव	(iii)	विनाश्य
(iv)	निस्सरन्तीभिः	(iv)	अनाकुलम्
(v)	ध्वस्तभवनेषु	(v)	सुचिरेणैव
(vi)	प्रकुपिताम्	(vi)	सम्पन्नम्
(vii)	निर्माय	(vii)	प्रविशन्तीभिः
(viii)	शान्तानि	(viii)	नवनिर्मितभवनेषु

ख. समानार्थकपदानां मेलनं कुरुत–

(i)	पर्याकुलम्	(i)	संत्रोट्य
(ii)	उद्गिरन्तः	(ii)	समीपस्थम्
(iii)	प्रकुपिताम्	(iii)	खण्डद्वये
(iv)	क्षणेनैव	(iv)	क्रोधयुक्ताम्
(v)	विशीर्णाः	(v)	व्याकुलम्
(vi)	पार्श्वस्थम्	(vi)	अचिरेणैव
(vii)	विदार्य	(vii)	नष्टाः
(viii)	फालद्वये	(viii)	प्रकटयन्तः

4. क. **प्रत्ययं संयोजय विभज्य वा लिखत–**

(i) परिवर्तितवती = परि + √ ———— + ———— = (स्त्री)

(ii) विशीर्णा = ———— + √ ———— + क्त (स्त्री)

(iii) ———— = √ जन् + क्त (नपुं)

(iv) धृतवान् = ————

(v) ———— = √ व्यथ् + शानच् (स्त्री)

(vi) हसन् = ———— + ————

(vii) गायन् = ———— + ————

(viii) ———— = प्र + √ चल् + शतृ (स्त्री)

ख. **पाठात् समस्तपदानि विचित्य लिखत - समासनामोल्लेखमपि कुरुत–**

यथा– महत् च तत् कम्पनम् - महाकम्पनम् - कर्मधारयः समास.

(i) दारुणा च सा विभीषिका ———— ————

(ii) ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु ———— ————

(iii) गृहस्य सोपानमार्गाः ———— ————

(iv) प्राक्तने च तस्मिन् युगे ———— ————

(v) पर्वतस्य अग्रमुखम् ———— ————

(vi) महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन् ———— ————

(vii) महाविनाशः ———— ————

(viii) महाप्लावनम् ———— ————

(ix) भैरवविभीषिका ———— ————

5. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(i) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं **ध्वंसावशेषेषु** परिवर्तितवती।

(ii) ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं **करुणकरुणम्** क्रन्दन्ति स्म।

(iii) एतादृशी एव भयावहघटना **गढवालक्षेत्रे महाराष्ट्रे** चापि घटिता।

(iv) तदिदानीम् **भूकम्पकारणं** विचारणीयं तिष्ठति।

(v) **वैज्ञानिकाः** कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।

(vi) **विवशाः** प्राणिनः आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिः पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।

(vii) **प्रकृतिसमक्षम्** अद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव।

(viii) शान्तानि **प चतत्त्वानि** योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते।

6. भूकम्पविषयमवलम्ब्य अधोलिखितशब्दानां सहायतया प चवाक्यमितं अनुच्छेदमेकं लिखत–

सहायकाः शब्दाः

प्रकम्पते, भीषणः परिणामः, भवनानि प्रकृतेः असंतुलनम्, क्षणमात्रेण, विस्फोटनेन, क्षति, जायन्ते, ध्वस्तानि, भवन्ति

7. अधः भूकम्पशमनस्य कृते केचन उपायाः दत्ताः। उचितानाम् उपायानां समक्षं 'आम्' अनुचितानाम् उपायानां समक्षं च 'नैव' इति लिखत–

(i) बहुभूमिकभवनाना निर्माणं करणीयम् । ( )

(ii) बृहन्मात्रं नदीजलं तटबन्धं निर्माय एकस्मिन्नेव स्थले न पुञ्जीकरणीयम् ( )

(iii) प्रकृतेः असन्तुलनाय प्रयासो विधेयः। ( )

(iv) प्रकृतेः सन्तुलनाय प्रयासो विधेयः। ( )

(v) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि महाविनाशम् उपस्थापयन्ति। ( )

(vi) भूकम्पशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायः ( )

[illegible]

क. भूकम्पपरिचयः

भुवः कम्पनं भूकम्पः इति कथ्यते। सः बिन्दुः भूकम्पस्य उद्गमकेन्द्रं कथ्यते यस्मात् बिन्दोः कम्पनस्य उत्पत्तिर्जायते। धरातलोपरि सः एव बिन्दुः भूकम्पस्य अधिकेन्द्रम् इत्युच्यते। ततः कम्पनतरङ्गरूपेण विविधदिक्षु अग्रेसरति। एताः तरङ्गाः सर्वासु दिक्षु तथैव विस्तृताः भवन्ति यथा कस्मिंश्चित् शान्तसरोवरे पाषाणखण्डक्षेपणेन तरङ्गाः उत्पद्यन्ते।

पृथिव्याः धरातले कानिचित् क्षेत्राणि एतादृशानि सन्ति यत्र भूकम्पाः प्रायेणैवागच्छन्ति। उदाहरणार्थम् प्रशान्तमहासागरं परितः प्रदेशाः, हिमालयप्रदेशः गङ्गाब्रह्मपुत्रोपत्यकाः च। एतेषु क्षेत्रेषु अनेकशः भूकम्पाः आगताः येषु केचन तु अत्यधिकाः भयावहाः विनाशकारिणः च आसन्।

क. भूकम्पविषये प्राचीनमतम्

प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्वग्रन्थेषु भूकम्पोल्लेखः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पाः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म यथा – वराहसंहितायाम् –

क्षितिकम्पमाहुरेके महान्तर्जलनिवासिसत्त्वकृतम्
भूभारखिन्नदिग्गजनिःश्वाससमुद्भवं चान्ये।
अनिलोऽनिलेन निहितः क्षितौ पतन् सस्वनं करोत्यन्ये
केचित् त्वदृष्टकारितमिदमन्ये प्राहुराचार्याः।।

मयूरचित्रे

कदाचित् भूकम्प श्रेयसेऽपि कल्पते। एतादृशाः अपि उल्लेखाः अस्माकं साहित्ये समुपलभ्यन्ते यथा वारुणमण्डलमौशनसे –
प्रतीच्यां यदि कम्पेत वारुणे सप्तके गणे,
द्वितीययामे रात्रौ तु तृतीये वारुणं स्मृतम्।
अत्र वृष्टिश्च महती शस्यवृद्धिस्तथैव च
प्रजा धर्मरताश्चैव भयरोगविवर्जिताः।।

मयूरचित्रे

उल्काभूकम्पदिग्दाहसम्भवः शस्यवृद्धये।
क्षेमारोग्यसुभिक्षायै वृष्टये च सुखाय च।
भूकम्पसमा एव अग्निकम्पः, वायुकम्पः, अम्बुकम्पः इत्येवमऽन्येऽपि भवन्ति।

दशमः पाठः

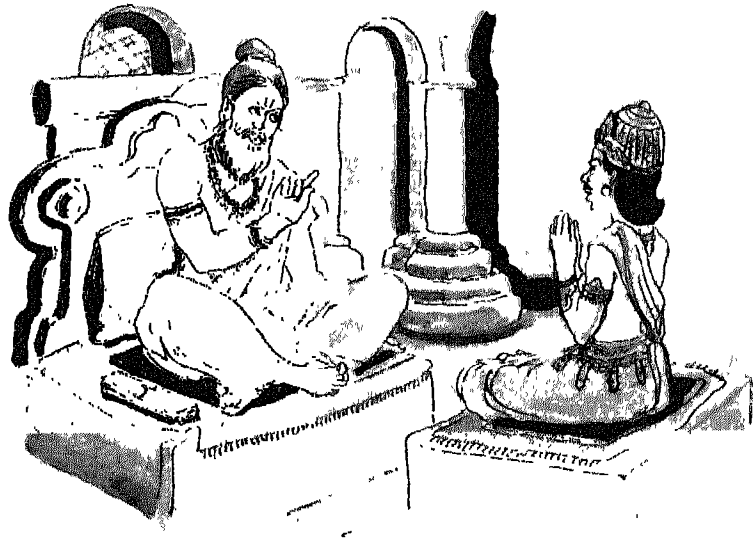
शुकनासोपदेशः

(प्रस्तुत पाठ बाणभट्ट–विरचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश खण्ड से संकलित है। यहाँ महाकवि बाण द्वारा युवराज पद पर अभिषिक्त होने के ठीक पूर्व राजकुमार चन्द्रापीड का शुकनास के पास आना तथा शुकनास के शब्दों में राजकुमार को युवावस्था सहित अनेकों प्रकार के लक्ष्मीमदों से सावधान रहने के लिए दिए गए उपदेशों का अत्यन्त ही सुन्दर एवं जीवनोपयोगी वर्णन प्रस्तुत किया गया है।)

अथ समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं समागतं चन्द्रापीडं शुकनासः सविस्तरमुवाच – "तात चन्द्रापीड ! विदितवेदितव्यस्य अधीतशास्त्रस्य ते नाल्पमपि उपदेष्टव्यमस्ति, परं लक्ष्मीमदः परमदारुणोऽयम्। अभिनवयौवनत्वम्, अप्रतिमरूपत्वम् अमानुषशक्तित्वंचेति महतीयंखल्वनर्थपरम्परा सर्वा। अविनयानाम् एकैकम् अपि एषाम् आयतनं किमुत समवायः। अतः भवादृशाः अपि भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्।"

गुरूपदेश्च नाम पुरुषाणाम् अखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानं विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि ते तेषामुपदेष्टारश्च । आलोकयतु तावत् लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं लक्ष्मीः न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति न कुलक्रमम् अनुवर्त्तते न शीलं पश्यति न धर्ममनुरुध्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति।

कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च समारोपितसंस्कारः तथापि तरल हृदयम् अप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि, भवद्‌गुण सन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्। इदमेव च पुनः पुनः अभिधीयते। विद्वांसमपि सचेतनमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं खलीकरोति लक्ष्मीरिति। सवर्था कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौवराज्याभिषेकमङ्गलम् इति।



उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडः ताभिः उपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, स्वच्छीकृत इव, पवित्रीकृत इव, प्रीतहृदयो मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम।

आगतम्	–	प्राप्तम्	–	पहुँचे हुए, आए हुए
विदितवेदितव्यस्य	–	ज्ञातशास्त्राभिप्रायस्य	–	शास्त्रो का अर्थ जिसे ज्ञात है उसका
अधीतसर्वशास्त्रस्य	–	पठितानि सर्वशास्त्राणि येन तस्य	–	जिसने समस्त शास्त्र पढ लिए हैं, उसका
उपदेष्टव्यम्	–	उपदेशयोग्यम्	–	उपदेश देने योग्य, कहने योग्य
दारुणः	–	भयावहः	–	भयंकर
अप्रतिमरूपत्वम्	–	अद्वितीय सौन्दर्यम्	–	अनूठा सौन्दर्य
अप्रतिबुद्धम्	–	बोधरहितम्	–	नादान, नासमझ
मदयन्ति	–	मदं जनयन्ति	–	अभिमान उत्पन्न करते है
मुखरीकृतवान्	–	वक्तुं प्रवर्तितवान्	–	बोलने के लिए प्रेरित किया है
वाग्भिः	–	वचनै.	–	वचनो के द्वारा
प्रक्षालित इव	–	धौत इव	–	धुला हुआ सा
प्रीतहृदयः	–	प्रसन्नहृदयः	–	प्रसन्न मन वाला
अविनयानाम्	–	अशिष्टतानाम्	–	अशिष्टताओ, अशालीनताओ का
आयतनम्	–	गृहम्	–	घर
समवायानाम्	–	समूहानाम्	–	समूहो का
अखिलमलप्रक्षालनक्षमः	–	समस्तमनोमालिन्य प्रक्षालने समर्थः	–	समस्त मनोमालिन्य धोने मे समर्थ अन्तःकरण के अंधकार को दूर करने में समर्थ
अजलं स्नानम्	–	जलरहितं स्नानम्	–	बिना जल का स्नान
विरलाः	–	अल्पसंख्यकाः	–	कम सख्या में
आलोकयतु	–	पश्यतु	–	देखिए
शीलम्	–	आचारम्	–	आचरण
वैदग्ध्यम्	–	निपुणताम्, विज्ञताम् कुशलताम्	–	विद्वत्ता को

[illegible]

- राजा तारापीड· चन्द्रापीडं युवराजपदे अभिषेक्तुम् इच्छति।
- शुकनासः स्वसमीपम् आगत चन्द्रापीडम् उपदेशयति।
- ऐश्वर्यशालिनः राजानः कदाचित् लक्ष्मीमदेन मदोन्मत्ता. स्वकर्तव्यं विस्मरन्ति अत शुकनास. चन्द्रापीडं प्रति लक्ष्म्या. दोषान् वर्णयति।
- गुरूपदेशेन प्रीतहृदयः चन्द्रापीड. स्वभवनं गच्छति।

[illegible]

[illegible]

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–

क आस्मिन् पाठे कः कम् उपदेशयति ?

ख. परमदारुणः कः भवति ?

ग. कः पुरुषाणाम् अखिलमलप्रक्षालनक्षम. भवति ?

घ. का परिचयं न रक्षति ?

ङ. इय लक्ष्मीः विद्वांसमपि सचेतनमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषं कि करोति ?

[illegible]

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

क. गुरूपदेश. कीदृशं स्नानम् कथितम् ?

ख. धनानि कम् मदयन्ति ?

ग लक्ष्मी कग् कम् खलीकरोति ?

घ. चन्द्रपीडस्य क· गुण. शुकनासम् उपदेशाय मुखरीकृतवान् ?

ङ. उपशान्तवचसि शुकनासे कीदृशः चन्द्रापीड. स्वभवनमाजगाम ?

2. क. उदाहरणमनुसृत्य 'त्व' प्रत्ययं पृथक् कृत्वा लिखत–

यथा – अभिनवयौवनत्वम् अभिनवयौवन + त्व प्रत्य य

(i) अप्रतिमरूपत्वम् ________

(ii) अमानुषशक्तित्वम् ________

(iii) महत्त्वम् ——————

(iv) ईश्वरत्वम् ——————

ख. उदाहरणमनुसृत्य 'तल्' प्रत्ययं योजयित्वा लिखत–

यथा – विशेषज्ञ + तल् = विशेषज्ञता

—————— + —————— = सरलता

उदार + तल् = ——————

—————— + —————— = पूर्णता

स्वतन्त्र + तल् = ——————

—————— + —————— = पवित्रता

ग. 'च्वि' – प्रत्ययः – अकृतम् (अभूततद्भावे च्वि) कृतम् करोति इत्यर्थे

यथा – अखल, खलं करोति इति खलीकरोति

एवमेव –

अकृष्णं कृष्णं करोति इति ——————

अमुखरं मुखर करोति इति ——————

अनिपुणं निपुण करोति इति ——————

—————————— इति स्वच्छीकरोति

—————————— इति पुष्टीकरोति

—————————— इति पवित्रीकरोति

3. तत्पदं रेखाङ्कितम् कुरुत–

क यत् नपुंसकलिङ्गे नास्ति –

आयतनम्, अल्पम्, अयम्, उपदेष्टव्यम्

ख यत्र 'क्त'–प्रत्ययः नास्ति –

आगतम्, तातम्, श्रुतम्, आलोकितम्

ग यत्र तृतीया विभक्तिः न प्रयुक्ता

पित्रा, प्रकृत्या, उपशान्तवयसि, वाग्भि.।

4. समुचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत–

क विदितवेदितव्यस्य —————— ते न अल्पमपि उपदेष्टव्यमस्ति ।

ख. —————— चेति महती इय खलु अनर्थपरम्परा।

ग कामं भवान् —————— धीरः पित्रा च समारोपितसंस्कारः।

घ इय लक्ष्मी न वैदग्ध्य ———— । न श्रुत ———— ।

ङ. उपशान्तवचसि ———— चन्द्रापीडः पवित्रीकृत इव ———— आजगाम्।

5. **अधोलिखितवाक्यनि उचितघटनाक्रमेण पुनः लिखत–**

क. शुकनासः चन्द्रापीडं प्रथमं लक्ष्मीमेव आलोकयितुं कथयति।

ख. शुकनासोपदेशेन पवित्रीकृत इव चन्द्रपीडः प्रीतहृदय. स्वभवनमाजगाम।

ग. शुकनासः स्वोपदेशे गुरूपदेशस्य महत्त्वम् उद्भावयति।

घ. शुकनास समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं चन्द्रापीडं प्रति सविस्तरमुवाच।

ङ शुकनास. चन्द्रापीड प्रति लक्ष्म्याः दोषान् वर्णयति।

6. **मञ्जूषायां 'दत्तानां शब्दानां साहाय्येन शुकनासस्य विषये पञ्चवाक्येषु एकम् अनुच्छेदं लिखत–**

राज्ञः तारापीडस्य पुत्रः सर्वशास्त्राणा ज्ञाता, युवा, अद्वितीय सौन्दर्यम्, सर्वगुणसम्पन्नः, शुभचिन्तकः

7. **उदाहरणाम् अनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि रचयत–**

विदितं वेदितव्यं येन सः – विदितवेदितव्यम्

अधीत शास्त्र येन स. ————————

अप्रतिमं रूपं यस्य सः ————————

समुपस्थितः यौवराज्याभिषेक. यस्य सः ————————

योग्यताविस्तार

कविपरिचयः

महाकविः बाणभट्टः संस्कृत–गद्य साहित्यस्य अप्रतिम. कविरस्ति। तस्य वाचि साक्षात् सरस्वत्या निवासः आसीत्। अत एव एषा सूक्तिः प्रसिद्धा जाता–वाणी बाणो वभूव। संस्कृतवाङ्मये अधिकतरं साहित्यं पद्यमयमेवासीत् परन्तु महाकवि बाणभट्टेन प्रशस्तं रचनाद्वयं विधाय एका नूतना धारणा स्थापिता यत् "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" इति। कविवरेण बाणभट्टेन विरचतौ द्वावेव ग्रन्थौ – 'हर्षचरितम् कादम्बरी च ख्यातिप्राप्तौ जातौ।

ग्रन्थपरिचयः

ग्रन्थोऽयं कवि–कल्पिते कथानके आधारितः अस्ति।

अस्य कथा एकजन्मना सम्बद्धो न भूत्वा चन्द्रपीडस्य (नायकस्य) तथा पुण्डरीकस्य (तस्य मित्रस्य) जन्मत्रयसम्बद्धा अस्ति। आरम्भे विदिशायाः नृपस्य शूद्रकस्य वर्णनम् अस्ति। शुकः राजानं पूर्वजन्मन. आत्मकथां श्रावयति। तत. चन्द्रपीडस्य तथा तस्य मित्रस्य वैशम्पायनस्य कथा प्रारभ्यते। चन्द्रपीडः दिग्विजयप्रसङ्गे हिमालयं गच्छति तत्रैव कादम्बर्या सह तस्य साक्षात्कार· भवति। चन्द्रापीडः पितुरादेशेन उज्जयिन्यां आहूते सति कादम्बर्या. वियोगेन पीडित· भवति। अनन्तरं पत्रलेखया कादम्बर्याः कुशलसमाचारं श्रुत्वा प्रसीदति।

भावविस्तारः

यौवनं धनसम्पत्ति. प्रभुत्वमविवेकिता
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्ट्यम्।। (पञ्चतन्त्रम्)
वयोरूपं विभूतीनामेकैकं मदकारणम् (महाकवि कालिदासस्य)

एकादशः पाठः

आर्तत्राणाय वः शस्त्रम्

(प्रस्तुत पाठ कविकुलगुरु कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अंक से गृहीत है। इस पाठ में राजा दुष्यन्त के वनप्रवेश की कथा है। राजा दुष्यन्त वन में आखेट करने जाते हैं और जैसे ही एक मृग पर बाणों से संधान करने के लिए प्रत्यंचा खींचते हैं वैसे ही एक ब्रह्मचारी सामने आकर राजा को रोकते हुए कहता है – हे राजन् ! रुको ! आश्रम में शिकार वर्जित है। राजा का शस्त्र तो दीनदुखियों की आततायियों से रक्षा के लिए एवं शत्रुओं के विनाश के लिए होता है न कि निरपराध वन्य जीवों के विनाश के लिए।)

(ततः प्रविशति मृगानुसारी सशरचापहस्तो राजा सूतश्च)

सूतः – (राजानं मृगं चावलोक्य) आयुष्मन् !

कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके।
मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्।।

राजा – सूत ! दूरमधुना सारङ्गेण वयमाकृष्टाः। अयं पुनरिदानीमपि –

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा

पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।

(सविस्मयम्) तदेष कथमनुपततः एव मे प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तः।

सूतः – आयुष्मन् ! उद्घातिनी भूमिरिति मया रश्मिसंयमनाद् रथस्य मन्दीकृतो वेगः। तेन मृग एष विप्रकृष्टान्तरः संवृत्तः। सम्प्रति समदेशवर्तिनस्ते न दुरासदो भविष्यति।

राजा – तेन हि मुच्यन्तामभीषवः।

सूतः – यदाज्ञापयत्यायुष्मान्।

राजा – (सहर्षम्) सत्यम्। नूनमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः। तथा हि–

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत्।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो –
र्न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्।।

सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानम् (इति शरसन्धानं नाटयति)

(नेपथ्ये)

भो भो राजन् ! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

सूतः – (आकर्ण्यावलोक्य च) आयुष्मन् ! अस्य खलु ते बाणपथवर्तिनः कृष्णसारस्यान्तरे तपस्विन उपस्थिताः।

राजा – (ससंभ्रमम्) तेन हि प्रगृह्यन्तां वाजिनः।

सूतः – तथा (इति रथं स्थापयति)

(ततः प्रविशति वैखानसः।)

वैखानसः –(हस्तमुद्यम्य) राजन् ! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे तूलराशाविवाग्निः।
क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते।।



तत् साधुकृतसंधानं प्रतिसंहर सायकम्।
आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि।।

राजा — एष प्रतिसंहृतः (इति यथोक्तं करोति।)

वैखानसः —सदृशमेतत् पुरुवंशप्रदीपस्य भवतः।
जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।।

आर्तत्राणाय	— दुःखितानां रक्षणाय	— दुःखियों की रक्षा के लिए
वः	— युष्माकम् (पुरुवंशिराज्ञाम्)	— तुम्हारा
सूतः	— सारथिः	— सारथि, रथ चलाने वाला
कृष्णसारे	— मृगविशेषे	— कृष्णसार जाति के विशेष प्रकार के हरिण पर
अधिज्यकार्मुके	— आरोपितं गुणं धनुर्येन तस्मिन्	— धनुष पर बाण चढ़ाए हुए पर

चक्षुः ददत्	– दृष्टिपात कुर्वन्	– दृष्टिपात करते हुए
पिनाकिनम्	– महादेवम्	– शिव को
सारङ्गेण	– मृगेण	– हिरण द्वारा
अनुपतति	– पश्चात् आगच्छति	– पीछे आ रहे
ग्रीवाभङ्गाभिरामम्	– ग्रीवायाः परिवर्तनेन मनोहरं जातम्	– गर्दन को मोडने से सुन्दर लग रहे
मुहुः	– पुनः पुनः	– बार-बार
स्यन्दने	– रथे	– रथ पर
भूयसा	– बहुतरेण	– अत्यधिक
पूर्वकायम्	– शरीरस्य पूर्वभागम्	– शरीर के अगले हिस्से में (पिछले हिस्से को समेटता हुआ)
दर्भैः	– कुशैः	– कुशो से
अर्धावलीढैः	– अपूर्णचर्वितैः	– आधी चबाई हुई
श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः	– धावनपरिश्रमेण उद्घाटितात् मुखात् पतद्भिः	– दौड़ने के श्रम के कारण हुई थकावट से खुले मुख से गिरी हुई
कीर्णवर्त्मा	– व्याप्तमार्गः	– रास्ते को व्याप्त करता हुआ
उदग्रप्लुतत्वात्	– उन्नतप्लवनात्	– ऊँची कूद के कारण
वियति	– आकाशे	– आकाश में
स्तोकम्	– न्यूनम्	– थोड़ा
उर्व्याम्	– पृथिव्याम्	– पृथ्वी पर
उद्घातिनी	– विषमा	– ऊँची-नीची, ऊबड-खाबड
सविस्मयम्	– साश्चर्यम्	– बड़े आश्चर्य के साथ
प्रयत्नप्रेक्षणीयः	– काठिन्येन दर्शनीयः	– कठिनाई से दृष्टिगोचर होने योग्य
रश्मिसंयमनात्	– अभीषूणाम् आकर्षणात्	– लगामो के खीचने से
विप्रकृष्टान्तरः	– अतिदूरवर्ती	– बहुत दूर तक खींचा चला आया है।
सम्प्रति	– अधुना	– अब
समदेशवर्तितः	– समतलभूमौ स्थितः	– समतल भूमि पर स्थित
दुरासदः	– दुःखेन प्राप्यः इति	– जो कठिनाई से प्राप्त हो।
अभीषवः	– प्रग्रहाः	– लगाम
मुच्यन्ताम्	– शिथलीक्रियन्ताम्	– ढीली कर दें

अतीत्य	— अतिक्रम्य	— अतिक्रमण करके
हरीन्	— इन्द्रस्य अश्वान्	— इन्द्र के घोड़ों को
हरितः	— आदित्यस्य अश्वान्	— सूर्य के घोडो को
वाजिनः	— अश्वा.	— घोडे
आलोके	— दर्शने	— देखने में
विपुलताम्	— विशालताम्	— विशाल रूप को
कृतसंधानम्	— अविभक्तम्	— जुड़ी हुई
वक्रम्	— कुटिलम्	— टेढा
समरेखम्	— अकुटिलरेखम्	— सीधा (प्रतीत होता है)
पार्श्वे	— समीपे	— पास मे
रथजवात्	— रथवेगात्	— रथ के तेज चलने के कारण
व्यापाद्यमानम्	— हन्यमानम्	— मारे जाते हुए को
नाटयति	— अभिनयं करोति	— अभिनय करता है
शरसन्धानम्	— बाणस्य आरोहणम्	— बाण चढाने (का)
हन्तव्यः	— व्यापादयितव्य.	— मारा जाना चाहिए/मारने योग्य
बाणपथवर्तिनः	— बाणचालनस्य मार्गे स्थिताः	— बाण चलाने के मार्ग में स्थित
संसभ्रमम्	— विचलतया	— घबराहट के साथ
प्रगृह्यन्ताम्	— रश्मयः रुन्ध्यन्ताम्	— लगामों को रोकिए
वैखानसः	— तपस्वी	— तपस्वी
उपयम्य	— उद्यम्य	— उठाकर, रोककर
सन्निपात्यः	— मोक्तव्यः	— छोडना, गिराना चाहिए
मृदुनि	— सुकोमले	— कोमल पर
तूलराशौ	— कार्पाससमूहे	— कपास के ढेर पर
हरिणकानाम्	— अतिचंचलम्	— बहुत चंचल
निशितनिपाताः	— तीक्ष्णप्रहाराः	— तीखे प्रहार वाले
वज्रसाराः	— वज्रतुल्यकठोराः	— वज्र के समान सुदृढ, कठोर
साधुकृतसन्धानम्	— सम्यक्तया विहित धनुष्यारोपणं यस्य तम्	— अच्छी प्रकार के धनुष पर चढाए हुए (बाण) को
अनागसि	— निरपराधे	— निरपराध पर
प्रतिसंहृतः	— प्रत्यावर्तितः	— रोक लिया गया है
गुणोपेतम्	— गुणैः युक्तम्	— गुणवान्
आप्नुहि	— लभस्व	— प्राप्त करो

- राजा दुष्यन्तः आखेटाय सशरचापहस्त वनं प्रविशति।
- मृगमनुसरन् राजा आश्रमपदम् आगच्छति।
- राजा स्वघोटकाना तुलनाम् इन्द्रस्य अश्वैः सह करोति।
- तापसकुमार राजानं मृगवधात् निवारयति स्मारयति च "आर्तत्राणाय वः शस्त्रम् न च हन्तुम् अनागसि।"

1. **एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत–**
   - क. कः मृगं हन्तुम् उद्यतः अस्ति ?
   - ख. उद्घातिनी भूमिं दृष्ट्वा सूतेन कथं रथवेगः मन्दीकृतः ?
   - ग. मृदुन मृगशरीरस्य तुलना केन सह कृता ?
   - घ क. राजान मृगवधात् वारयति ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क. उदग्रप्लुतत्वात् मृग. कीदृशः प्रतिभाति ?
   - ख. हरिणकानां जीवितं कीदृशं कथितम् ?
   - ग. राज्ञ. शस्त्र कुत्र प्रहर्तुं न भवितव्यम्।
   - घ. पुरोर्वंशे कस्य जन्म आसीत् ?
   - ङ. शराः कीदृशा. कथिताः ?

2. **उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

क यथा– चक्षुस्त्वयि = चक्षुः + त्वयि

(i) समदेशवर्तिनस्ते = ________ + ________

(ii) ________ = शराः + ते

ख. यथा– पुनरिदानीम् = पुन. + इदानीम्

(i) मुहुरनुपतति = ________ + ________

(ii) ________ = भूमिः + इति

(iii) दर्भैरर्धावलीढैः = ________ + ________ + ________

(iv) ________ = पुरोः + वंशे

ग. यथा– पश्च + अर्धेन = पश्चार्धेन

(i) ________ + ________ = प्लुतत्वाद्वियति

(ii) यत् + आलोके = ________

(iii) ________ + ________ = यद्वक्रम्

3. क. **अधोलिखितानि कथनानि कः कस्य कृते कथयति ?**

		कः	कस्य कृते
क	आयुष्मन् ! उद्घातिनी भूमिरिति मया रथस्य वेगः मन्दीकृतः।	________	________
ख.	तेन हि मुच्यन्तामभीषवः।	________	________
ग	सदृशमेतत् पुरुवशप्रदीपस्य भवतः।	________	________
घ.	एषः प्रतिसहृतः।	________	________
ङ.	आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः न हन्तव्यः	________	________

4. ख. **उदाहरणमनुसृत्य पदरचनां कुरुत–**

यथा– क तेन प्रकारेण **तथा**

ख. येन प्रकारेण ________

ग. अन्येन प्रकारेण ________

घ. सर्व प्रकारेण ________

ङ उभयेन प्रकारेण ________

5. **स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि ?**

क. **मया** रश्मिसंयमनात् रथस्य वेगः मन्दीकृतः। ....

ख. न **मे** दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्। ....

ग. सूत ! पश्य **एनं** व्यापाद्यमानम्। ....

घ सदृशमेतत् **भवतः**। ....

ङ. यथा **त्वया** उक्तं तथा प्रतिसंहृतः एषः। ....

6. **पाठमाधृत्य अधोलिखितश्लोकानाम् अन्वयेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**

क. कृष्णसारे ________ त्वयि च चक्षुः ________ मृगानुसारिणं साक्षात् ________ पश्यामि इव।

ख. रथजवात् यत् ________ सूक्ष्मं तत् सहसा विपुलतां ________ ,यत् अर्धे विच्छिन्नं तत् ________ भवति, यत् प्रकृत्या वक्रं तत् अपि ________ समरेखम्, क्षणम् अपि ________ न मे दूरे न पार्श्वे अस्ति।

ग. अस्मिन् मृदुनि ________ तूलराशौ अग्निरिव अयं बाणः न खलु न खलु ________। बत ! क्व हरिणकानाम् अतिलोलं ________ क्व च निशितनिपाताः ________ ते शराः।

घ. यस्य ________ पुरोः लव इदं ________ , एवं गुणोपेतम् ________ पुत्रम् अवाप्नुहि।

7. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च निर्देशानुसारं परिवर्तयत–
   - क. त्व चक्रवर्तिनं पुत्रम् आप्नुहि। (बहुवचने)
   - ख. स यथोक्त करोति। (द्विवचने)
   - ग. वयं सारङ्गेण आकृष्टाः। (एकवचने)
   - घ. राजा शरसन्धानं नाटयति। (बहुवचने)
   - ड. सूत. रथं स्थापयति। (द्विवचने)

[illegible]

कविपरिचयः

कालिदासः संस्कृतवाङ्मये कविशिरोमणिः वर्तते। तस्य विषये कथितम् –

"पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।"

तस्य जन्मकाल. ईसापूर्वं प्रथमशताब्दी सिध्यते। तेन लिखिताः सप्तग्रन्था· सन्ति येषां विभाजनम् एवं क्रियते –

द्वे महाकाव्ये – • कुमारसंभवम्
• रघुवंशम्

द्वे गीतिकाव्ये – • ऋतुसंहारम्
• मेघदूतम्

त्रीणि नाटकानि – • मालविकाग्निमित्रम्
• विक्रमोर्वशीयम्
• अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थपरिचयः

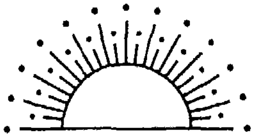
'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' महाकविकालिदासस्य विश्वविख्याता रचना वर्तते। अस्मिन् नाटके सप्ताङ्काः सन्ति। अत्र दुष्यन्तशकुन्तलयोः प्रणय–गाथा वर्णिता।

प्रस्तुतपाठांश. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटकस्य प्रथमाङ्कात् सकलितः। पुरुवंशी राजादुष्यन्त आखेटाय वनात् वनम् आगच्छन् ऋषिकण्वस्य आश्रमे प्रविशति। सः आश्रमस्य मृगं हन्तुं प्रयतते पर एकः तपस्वी तं निवारयति कथयति च – "राज्ञां शस्त्रं आर्तत्राणाय न तु विनाशाय।" तद् वचन श्रुत्वा राज्ञा स्वशस्त्र प्रतिसह्रतम्। येन प्रसन्नः जातः वैखानस. तस्मै चक्रवर्तिनं पुत्रस्य प्राप्तेः आशीर्वादं ददाति।

भावपक्षः

आर्तानामिह जन्तूनामार्तिच्छेद करोति यः।
शङ्खचक्रगदाहीनो द्विभुजः परमेश्वर.।।

पुरुवंशः – प्राचीनकाले भारतस्य राज्ञां वशद्वयम् आसीत् – सूर्यवंशः चन्द्रवशश्च। विवस्वत. पुत्र· ईक्ष्वाकुः सूर्यवंशस्य संस्थापकः आसीत्। अत्रे· पुत्र सोम. चन्द्रवंशस्य संस्थापकः आसीत्। एतयोः उभयोः वशयोः दत्तौ वंशवृक्षौ दृश्यताम् –





सूर्यवंशस्य वंशवृक्षः

विवस्वान् (सूर्यः)
ईक्ष्वाकुः
↓
ककुत्स्थः
↓
दिलीपः
↓
रघुः
↓
अजः
↓
दशरथः
↓
रामः

चन्द्रवंशस्य वंशवृक्षः

अत्रि.
सोम.
↓
बुधः
↓
पुरुरवा
↓
आयुः
↓
नहुष.
↓
ययाति.
↓
(तस्य पञ्चपुत्रेषु द्वौ प्रसिद्धौ)

↓
पुरु.
(पुरुवंश.)
↓
अस्मिन्नेव पुरुवंशे कालान्तरे चक्रवर्तीसम्राट् दुष्यन्तः सबभूव।

↓
यदुः
(यदुवशः)
↓
अस्मिन्नेव यदुवंशे कालान्तरे भगवान्विष्णु. कृष्णरूपेण अवतीर्ण·।

भावविस्तार

1. सन्निपात्य : सम् + नि + पत् + णिच् + यत्

यत् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति। अत्र तकारस्य लोपः भवति।

यथा– क. अस्माभिः सुपात्राय दानं देयम्।

ख. पिपासितेन जलं पेयम्।

ग. सर्वै सावधानैः भूत्वा राष्ट्रगान गेयम्

2. अनागसि अविद्यमानम् आग यस्मिन् तस्मिन्।

आगः = अपराधः

अनागः = निरपराधः

अत्र "अनागस्" शब्दस्य सप्तमी एकवचनम् अस्ति।

3 हरित हरींश्च = हरित् शब्दस्य अर्थः सूर्यस्य अश्वाः।

हरि शब्दस्य अर्थः इन्द्रस्य अश्वाः।

निरुक्ते उक्तम् – "हरी इन्द्रस्य हरित आदित्यस्य।

अतएव सूर्यस्य 'हरिदश्वः' इन्द्रस्य च 'हरिहयः' कथ्यते।

द्वादशः पाठः

(अन्योक्ति अर्थात् किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा प्रत्यक्ष रूप में करने की अपेक्षा किसी अन्य को माध्यम बनाकर करना। कवि की ऐसी ही अभिव्यक्ति को अन्योक्ति कहते हैं जहां किसी प्रतीक या बहाने से किसी के गुण की प्रशंसा या दोष की निन्दा की गई होती है। ये उक्तियाँ बड़ी मार्मिक होती हैं। प्रस्तुत पाठ में इसी प्रकार की सात अन्योक्तियों का सङ्कलन प्रस्तुत किया गया है। जिनके द्वारा राजहंस, कोकिल, बादल, मालाकार, सरोवर तथा चातक के माध्यम से सांसारिक प्राणियों को सद्वृत्तियों एवं सत्कर्मों की प्रेरणा दी गई है।)

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।
न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना।।1।।



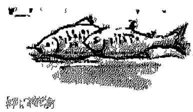
भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता-
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि।
रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः।।2।।

तावत् कोकिल विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन्।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।3।।





तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाघे
मालाकार व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन।। 4।।



आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गा
भृङ्गा रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।
सङ्कोचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु।। 5।।

आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त–
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा
रिक्तोऽसि यज्जलद ! सैव तवोत्तमा श्रीः।। 6।।



एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।
पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।। 7।।

[illegible]

सरसः	–	तडागस्य	–	तालाब का
बकसहस्रेण	–	बकानां सहस्रेण	–	हजारों बगुलों से
परितः	–	सर्वतः	–	चारों ओर
तीरवासिना	–	तटनिवासिना	–	तटवासी के द्वारा
कोकिल	–	हे पिक !	–	हे कोयल
विरसान्	–	रसहीनान्, नीरसान्	–	रसहीनों को

यापय	–	व्यतीत कुरु	–	बिताओ
वनान्तरे	–	अन्यस्मिन् वने	–	दूसरे वन मे
मिलदलिमालः	–	भ्रमरपंक्त्यायुक्तः	–	भॅवरों के पक्ति से युक्त
रसालः	–	आम्रः	–	आम का वृक्ष
समुल्लसति	–	प्रफुल्लो जायते	–	प्रफुल्लित होता है
आश्वास्य	–	परितोष्य	–	संतुष्ट करके
पर्वतकुलम्	–	पर्वतानां कुलम् , गिरिसमूहम्	–	पहाडो के समूह को
तपनोष्णतप्तम्	–	सूर्यस्य तापेन तप्तम्, सूर्यतापसन्तप्तम्	–	सूरज की गर्मी से तपे हुए को
उद्दामदावविधुराणि	–	उन्नतकाष्ठरहितानि	–	ऊँचे काष्ठो (वृक्षों) से रहित को
नानानदीनदशतानि	–	नानाः नद्यः, नदाना शतानि च	–	अनेक नदियो और सैकडों नदों को
मृणालपटली	–	मृणालसमूहः	–	कमलनाल का समूह
निपीतानि	–	निःशेषेण पीतानि	–	भलीभॉति पिए हुए
अम्बूनि	–	जलानि	–	पानी
नलिनानि	–	कमलानि	–	कमलो को
भविता	–	भविष्यति	–	होगा
कृतोपकारः	–	कृतः उपकारः येन सः	–	प्रत्युपकार किया हुआ
तोयैः	–	जलैः	–	जलो के द्वारा
भीमभानौ	–	भीमः भानुर्यस्मिन् सः (निदाघः)	–	भीषण सूर्य से युक्त (ग्रीष्मकाल में)
निदाघे	–	ग्रीष्मकाले	–	अत्यधिक ग्रीष्मकाल मे
मालाकार	–	हे मालाकार !	–	हे माली !
प्रावृषेण्येन	–	अतिवृष्टिकारकेण	–	अत्यधिक वर्षा करने वाले के द्वारा
वारिदेन	–	जलदेन	–	बादल के द्वारा
धारासारान्	–	धाराणाम् प्रवाहान्	–	धाराओ का प्रवाह
वाराम्	–	जलानाम्	–	जलों के

विश्वतः	– सर्वतः	– चारो ओर
विकिरता	– (जल) वर्षयता	– (जल) बरसाते हुए
आपेदिरे	– प्राप्तवन्तः	– प्राप्त कर लिया
अम्बरपथम्	– आकाशमार्गम्	– आकाश–मार्ग को
पतङ्गाः	– खगाः	– पक्षी
भृङ्गाः	– भ्रमराः	– भँवरें, भौंरे
रसालमुकुलानि	– आम्रमञ्जरीः	– आम की मंजरियो को
अञ्चति	– गच्छति	– जाने पर
सङ्कोचम् अ चति	– सङ्कोचं गच्छति, शुष्के जाते	– संकुचित होने पर या सूख जाने पर
मीनः	– मत्स्यः	– मछली
पुरन्दरम्	– इन्द्रम्	– इन्द्र को
मानी	– स्वाभिमानी	– स्वाभिमानी

- सरोवरस्य यादृशी शोभा राजहंसेन विद्यते तादृशी बकाना सहस्रेणापि न भवति।
- हे कोकिल ! तावत् त्वम् अन्यस्मिन् वने दिवसान् यापय यावत् आम्रवृक्षः न समुल्लसति।
- हे जलद ! तप्त पर्वतकुल समाश्वास्य, उन्नत–वृक्षरहितानि वनानि, अनेकनदीः, नदशतानि च जलैः पूरयित्वा त्वम् अधुना रिक्तो जातः। इदमेव त्वदीय वैशिष्ट्यम्।
- हे राजहस ! यस्मात् सरोवरात् त्वया कोमलानि मृणालानि भक्षितानि, सुन्दराणि कमलानि सेवतानि, मधुराणि जलानि च पीतानि, स्वकीयेन केन कर्मणा तस्योपकाराणां प्रत्युपकारं करिष्यसि।
- हे मालाकार ! त्वया आतपे अल्पैरपि जलै करुणया वृक्षस्य यथा पुष्टिः कृता तथा जलदेन वारिधाराप्रवाहेणापि न सम्भवति।
- सरसि शुष्के सति पतङ्गाः (खगाः) आकाशपथं गच्छन्ति, भ्रमराः रसालमञ्जरीः आश्रयन्ते पर दीनो मीन कां गतिं प्राप्नोतु इति चिन्तनीयं वर्तते।
- पिपासितो मानी चातको पानाय जलं केवलं इन्द्रं याचते सः प्राणान् त्यजति परम् अन्यत् जल न गृह्णाति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **एकेनैव पदेन उत्तरं वदत–**
   - क. सरसः शोभा केन भवति ?
   - ख. मृणालपटली केन भुक्ता ?
   - ग. भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते ?
   - घ. पतङ्गाः कम् आपेदिरे ?
   - ङ. चातकः कं याचते ?
   - च. कः खगः मानी भवति ?

लिखितः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क. कोकिलः कदा पर्यन्तं वनान्तरे वसति ?
   - ख. कानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति ?
   - ग. राजहंसेन कस्य अम्बूनि पीतानि कानि च निषेवितानि ?
   - घ. मालाकारः कया भावनया कस्य च पुष्टिम् करोति ?
   - ङ. मानिनि चातके किं वैशिष्ट्य वर्तते ?
   - च. मीनः कदा दीनां गतिं प्राप्नोति ?

2. **अधोलिखितानां श्लोकांशानां उचितं मेलनं कुरुत–**

अ	ब
(i) एकेन राजहंसेन	(क) सैव तवोत्तमा श्रीः
(ii) यावन्मिलदलिमालः	(ख) च पूरयित्वा
(iii) रिक्तोऽसि यज्जलद !	(ग) भीमभानौ निदाघे
(iv) नानानदीनदशतानि	(घ) कोऽपि रसालः समुल्लसति
(v) भुक्ता मृणालपटली	(ङ) या शोभा सरसो भवेत्
(vi) तोयैरल्पैरपि करुणया	(च) वने वसति चातक
(vii) एक एव खगो मानी	(छ) भवता निपीतानि

3. अधोलिखितपदेभ्यः प्राक् पाठमाश्रित्य उपयुक्तविशेषणपदानि लिखत–

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि
________	बकसहस्रेण
________	दिवसान्
________	श्री
________	निदाघे
________	तोयैः
________	मीनः
________	गतिम्
________	खगः

4. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–

क. यथा– अन्य + उक्तयः = अन्योक्तयः
(i) ________ + ________ = तवोत्तमा
(ii) तपन + उष्णतप्तम् = ________
(iii) ________ + ________ = कृतोपकारः

ख. यथा– पिपासितः + अपि = पिपासितोऽपि
(i) ________ + ________ = कोऽपि
(ii) रिक्तः + असि = ________
(iii) ________ + ________ = मीनोऽयम्

ग. यथा– सरसः + भवेत् = सरसो भवेत्
(i) ________ + ________ = पिपासितो वा
(ii) खगः + मानी = ________
(iii) ________ + ________ = मीनो नु

घ यथा– मुनिः + अपि = मुनिरपि
(i) तोयैः + अल्पैः = ________
(ii) ________ + ________ = अल्पैरपि
(iii) तरोः + अस्य = ________

5. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि कुरुत–

		विग्रहपदानि	समस्तपदानि
यथा–		नीलं च तत् कमलम्	= नीलकमलम्
	(i)	राजा चासौ हंसः च	= ______ ______
	(ii)	भीमः चासौ भानुः च	= ______ ______
	(iii)	अम्बरमेव पन्थाः	= ______ ______
	(iv)	उत्तमा चेयम् श्रीः	= ______ ______

6. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–

		प्रत्ययान्तपदानि	= प्रकृतिः + प्रत्ययः
यथा–		निपीतम्	= नि + पा + क्त
	(i)	भुक्ता	= ______ + ______
	(ii)	रिक्तः	= ______ + ______
	(iii)	पिपासितः	= ______ + ______
	(iv)	निषेवितम्	= ______ + ______
	(v)	कृतः	= ______ + ______

7. पाठमनुसृत्य अधोलिखितमूलशब्दानां यथानिर्दिष्टेषु विभक्तिवचनेषु रूपाणि लिखत

	मूलशब्दाः	विभक्तिवचने	शब्दरूपाणि
यथा–	राजहस	तृतीयैकवचने	राजहसेन
क.	विरस	द्वितीयाबहुवचने	______
ख.	करुणा	तृतीयैकवचने	______
ग.	तरु	षष्ठ्यैकवचने	______
घ.	तोय	तृतीयैकवचने	______
ङ	सरोवर	षष्ठ्यैकवचने	______
च.	भानु	सप्तम्यैकवचने	______
छ.	तीरवासिन्	तृतीयैकवचने	______

[illegible]

पाठपरिचयः

अन्येषां कृते या उक्तयः कथ्यन्ते ता उक्तयः अत्र पाठे सङ्कलिता वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे तृतीयश्लोकम् अतिरिच्य ये श्लोका. सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य "भामिनीविलासः" इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। तृतीयः श्लोकः महाकविमाघस्य रचना वर्तते।

कविपरिचयः

पण्डितराज जगन्नाथ. संस्कृतसाहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च कवि. आसीत् 'शाहजहाँ' नामक देहलीस्थ नृप स्वज्येष्ठं पुत्र दाराशिकोहं पाठयितुं जगन्नाथम् आमन्त्रितवान्। पण्डितराजजगन्नाथस्य त्रयोदशा. कृतयः प्राप्यन्ते। ते च सन्ति (1) गङ्गालहरी (2) अमृतलहरी (3) सुधालहरी (4) लक्ष्मीलहरी (5) करुणालहरी (6) आसफविलासः (7) प्राणाभरणम् (8) जगदाभरणम् (9) यमुनावर्णनम् (10) रसगङ्गाधर. (11) भामिनीविलास. (12) मनोरमाकुचमर्दनम्,तथा (13) चित्रमीमासाखण्डनम्। एतेषु ग्रन्थेषु 'भामिनीविलास' इति प्रमुखं गीतिकाव्यम्।

महाकविमाघः – महाकविमाघस्य एका एव कृतिः प्राप्यते "शिशुपालवधम्" इति।

अधोदत्तानि विविधविषयकाणि श्लोकानि अपि पठनीयानि स्मरणीयानि

हंस –
हंसः श्वेतः बक. श्वेतः को भेदो बकहंसयो.।
नीरक्षीरविभागे तु हसो हस बको बकः।।

एकमेव पर्याप्तम् –
एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभि. पुत्रैः भार वहति रासभी।।

पिकः –
काकः कृष्णः पिक. कृष्ण. को भेदः पिककाकयो.।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिक.।।

कृतघ्न –
ब्रह्मघ्ने च सुरापे च चोरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता लोके कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।

चातकवर्णनम् –
यद्यपि सन्ति बहूनि सरांसि,
स्वादुशीतलसुरभिपयासि।
चातकपोतस्तदपि च तानि,
त्यक्त्वा याचति जलदजलानि।।

(i) अव्ययपदानि पठनीयानि स्मरणीयानि च

क पतङ्गाः अम्बरपथं **परितः** समाश्रयन्ते।

ख. हे कोकिल ! **तावत्** विरसान् दिवसान् यापय **यावत्** रसालः समुल्लसति।

ग. त्वया **यत्र** नलिनानि निषेवितानि।

घ. अल्पैः **अपि** तोयैः निदाघे तरोः पुष्टिः भवति।

ङ एक **एव** चातकः वने वसति।

उपरिदत्तेषु वाक्येषु अव्ययपदानि रेखाङ्कितानि। अव्ययस्य लक्षणं वर्तते ।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

(ii) अकारान्तपुल्लिङ्गे शब्दानां सम्बोधन पदं ध्यानेन पश्यन्तु अवगच्छन्तु च –

क हे कोकिल !

ख. हे जलद !

ग. हे राजहंस !

घ हे मालाकार !

सकारान्तपदानां सम्बोधनम् इत्थं भविष्यति।

क. हे सरस् ! (सरः !)

ख. हे नभस् ! (नभः !)

ग. हे पयस् ! (पयः !)

(iii) क्तिन् प्रत्ययः

क. अन्येभ्यः कथिताः **उक्तयः** अन्योक्तयः कथ्यन्ते। (वच् + क्तिन्)

ख सर्वे विश्व**शान्तिम्** इच्छन्ति। (शम् + क्तिन्)

ग. हे प्रभो ! मे **सन्मतिः** दीयताम्। (मन् + क्तिन्)

घ. भामिनीविलासः पण्डितराजजगन्नाथस्य **कृतिः** अस्ति। (कृत् + क्तिन्)

नियमः (i) क्तिन् प्रत्ययस्य प्रयोगः भाववाचकसंज्ञापदनिर्माणार्थं भवति।

(ii) धातुभ्यः सह स्त्रीलिङ्गे 'क्तिन्' प्रत्ययः भवति।

(iii) 'क्तिन्' प्रत्ययस्य 'ति' इति शेषः तिष्ठति।

(iv) 'पथिन्' शब्दस्य रूपं पठतु स्मरतु च।

विभक्तयः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थान
द्वितीया	पन्थानम्	"	पथ
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि.
चतुर्थी	पथे	"	पथिभ्य
पञ्चमी	पथः	"	"
षष्ठी	"	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	"	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थान

परिशिष्टम्

अ

शब्द	अर्थ
अकुर्वतः	— न कुर्वतः नञ् तत्पु. कृ + शतृ, प, ष वि ए व। न करते हुए।
अखण्डिता	— न खण्डिता नञ् तत्पु स्त्रीलि प्र वि, ए, व। परिपूर्णा। परिपूर्ण।
अखिल मल–प्रक्षालनेक्षमः	— समस्त मनोमालिन्यप्रक्षालने समर्थ। समस्त मनोमालिन्य को धोने मे समर्थ।
अञ्चति	— अञ्च् + शतृ (सप्त. ए व)। गच्छति। जाने पर।
अजायत	— जन् + लङ् प्र. पु. ए व, उत्पन्नः अभवत्, पैदा हुआ।
अतीत्य	— अति + इण् + ल्यप् अव्य। अतिक्रम्य। अतिक्रमण करके।
अधिज्यकार्मुके	— पुं स वि. ए व। धनुष चढाए हुए पर।
अधीतसर्वशास्त्रस्य	— पठितानि सर्वशास्त्राणि येन, तस्य, बहुव्री। जिसने सभी शास्त्र पढ लिए हैं उसका।
अध्यात्मगौरवम्	— अध्यात्मं च तत् गौरवम्, कर्मधारय, आध्यात्मिक महत्त्वम्। आध्यात्मिक महत्त्व को।
अनागसि	— अनागस्, स वि एक. व। निरपराधे। निरपराध पर।
अनार्येण	— न आर्येण, नञ् तत्पु, तृ वि ए व, दुष्टेन। दुष्ट के द्वारा।
अनुगन्तव्यम्	— अनु + गम् + तव्यत्, नपु, प्र वि ए व। अनुसर्तव्यम् अनुसरण करने योग्य
अनुपतति	— अनु + पत् + शतृ + सप्त वि, ए व। पश्चात् आगच्छति। पीछे आ रहे।
अनुपमः	— नास्ति उपमा यस्य स बहुव्री. (विशे), अतुलनीय। अद्वितीय।
अनुव्रजन्ति	— अनु + व्रज् + लट् प्र पु ब व। अनुगच्छन्ति। पीछे–पीछे जाते हैं।
अनृण्यम्	— न ऋण्यम्, नञ् तत्पु। ऋणस्य अभाव। ऋणरहितता।

अपकर्षणम् — अप + कृष् + ल्युट्, नपु प्र वि ए व। दूरीकरणम्। खीचकर दूर करना।

अपरिक्लेश: — न परिक्लेशः, नञ् तत्पु, पु प्र वि, ए व। कष्टाभाव। दुःख का अभाव।

अप्रतिबुद्धम् — अ + प्रति + बुध् + क्त, द्वि वि ए व। बोधरहितम्। नादान, नासमझ।

अप्रवासी — न प्रवासी, नञ् तत्पु, अप्रवासिन् पु प्र वि ए. व। प्रवासरहित, अपने स्थान (घर) पर ही निवास करने वाला।

अभिहितम् — अभि + धा + क्त, नपु., प्र वि ए व.। कथितम्। कहा गया है।

अभीतवासः — न भीतवास, नञ् तत्पु, पु प्र वि ए व। निर्भयं वास.। निडर होकर रहना।

अभीषवः — अभीषु, पु प्र वि ब व, प्रग्रहा, लगाम।

अभ्यन्तरे — अभि + अन्तरे, स ए व। अन्तःकरणे। अपने अन्दर।

अरयः — अरि, पु. प्र वि ब व। शत्रव। शत्रु,दुश्मन।

अर्थसम्बन्धः — अर्थस्य सम्बन्धः, ष तत्पु, पु प्र वि ए व। धनस्य सम्बन्ध। धन का सम्बन्ध।

अर्दयन्ति — अर्द् + लट्। प्र पु ए. व। अर्दनं कुर्वन्ति। कुचल डालते हैं।

अर्धावलीढैः — अर्धानि अवलीढानि, तैः, विशे. अपूर्णचर्वितैः। आधी चबाई हुई।

अवगम्यते — अव + गम् + यक्+ ते। प्र पु ए व। ज्ञायते। जाना जाता है।

अवधार्या — अव + धृ + णिच् + ल्यप्, विशे, स्त्री प्र वि ए व। धारयितव्या। धारण की जानी चाहिए।

अवसीदति — अव + सीद् + लट् प्र पु ए व, दुःखी भवति। दुःखी होता है।

अवाचयत् — वच् + णिच्, लङ्, प्र पु ए व। अपाठयत्। पढवाया।

अवाप्स्यते — अव + आप् + लृट्, प्र पु ए व। लप्स्यते। प्राप्त की जाएगी।

अविनयानाम् — न विनयः, तेषाम नञ् तत्पु, पु ष वि. ब व। अशिष्टतानाम। अशिष्टताओं का।

अविप्रवास: — अ + वि + प्र + वस् + घञ्, पु प्र वि ए व। विदेशे न वास। अन्य देश मे वास न करना।

अश्मा — अश्मन्, पु., प्र वि ए व। पाषाण। पत्थर।

अश्वत्थे — अश्वत्थ, पु, स वि ए व.। पिप्पले। पीपल वृक्ष पर।

अलम् — अव्य, समर्थ। योग्य।

अलीकम् — अव्य, नपु, असत्यम्। झूठ।

असकृत् — न सकृत्, नञ् तत्पु। अनेकश। अनेक बार।

आ

आकर्ण्य — आ + कर्ण् + ल्यप्। श्रुत्वा। सुनकर।

आदाय — आ + दा + ल्यप्। गृहीत्वा। लेकर।

आदितः — आदि + तसिल्, प्रारम्भत। शुरू से।

आदिदेश — आ + दिश् + लिट्, प्र पु ए व। आज्ञापयत्। आदेश दिया।

आपेदिरे — आ + पद् + लिट् प्र पु ब. व। प्राप्तवन्त। प्राप्त कर लिया।

आप्नुहि — आप् ~ लोट, म पु ए व। लभस्व। प्राप्त करो।

आरोहति — आ + रुह् + लट् प्र पु ए व। उपरि गच्छति। ऊपर जाता है।

आर्तत्राणाय — आर्तानाम् त्राणाय, ष तत्पु पु च. वि ए व। दुःखितानां रक्षणाय। दुःखियो की रक्षा के लिए।

आश्वास्य — आ + श्वस् + ल्यप्। अव्यय। परितोष्य। सन्तुष्ट करके।

आसाद्य — आ + सद् + णिच् + ल्यप्, अव्यय, प्राप्य, गत्वा, पहुँचकर

आहूय — आ + ह्वे + ल्यप्, अव्यय, आकार्य, बुलाकर।

उ

उच्चतरम् — उच्च + तरप् विशे, उन्नततरम्। (दो में से) अधिक ऊँचा।

उच्छलन्तीभिः — उत् + छल् + शतृ, स्त्री तृ वि ब व। उछलती हुई।

उत्खाताः — उत् + खन् + क्त पु प्र. वि ब व। उत्पाटिता। उखाड़ दिए गए।

उत्सङ्गे — पु. स वि ए व। क्रोडे, अङ्के। गोद में।

उत्सिक्तः — उत् + सिच् + क्त, पु प्र. वि ए व.। गर्वोद्धत। गर्व से उद्धत।

उद्घातिनी — नतोन्नता भूमि। ऊबड़–खाबड़ धरती।

उदग्रप्लुतत्वात् — उदग्र च प्लुतत्व च तस्मात् प. वि ए. व.। उन्नतप्लवनात्। ऊँचे उछलने के कारण।

उद्यम्य — उठाकर।

उपसृत्य — उप + सृ + ल्यप्, समीप गत्वा। पास जाकर

उरगः — उरसा गच्छति। पु प्र वि ए व। सर्प। साँप।

उवाच — वच् + लिट् प्र पु ए व। अवदत्, अकथयत्। बोला, कहा।

ऊ

ऊचुः – वच् + लिट् प्र. पु. ब. व.। अवदन्। बोले

उर्व्याम् – उर्वी स्त्रीलि., स. वि. ब. व.। पृथिव्याम्। पृथ्वी पर

ए

एकरूपता – एकरूप + तल्, स्त्रीलि, प्र वि. ए व। ऐक्यम्। समरूपता। एकरूपता।

क

कदर्थितम् – विशे. नपु. प्र. वि. ए. व.। तिरस्कृतम्। अपमानित।

कन्था – कम् + थन् + टाप् स्त्री प्र वि ए. व। जीर्ण वस्त्रम्। पुराना कटा फटा वस्त्र।

कर्णिकारः – संज्ञा, पु, प्र. वि ए व। पुष्प विशेषः। कनेर, कनैल।

करतलध्वनिना – करतलस्य ध्वनि तेन, ष तत्पु., पुं तृ वि. ए. व.। हस्ततलस्य शब्देन। ताली की आवाज से।

करी – करिन्, पुं प्र वि. ए व। गज.। हाथी।

करेणुः – पु. प्र. वि ए. व.। हस्तिनी। हाथी।

क्रन्दनविकलम् – क्रन्दनेन विकलम्, वि. तत्पु, नपुं प्र वि ए. व.। रोदनेन आकुलितम्। क्रन्दन से व्याकुल।

कीर्णवर्त्म – कीर्णं वर्त्म येन स, बहुव्री, पुं. प्र वि ए व। व्याप्तमार्ग। रास्ते को व्याप्त करता हुआ।

कुशाग्रबुद्धिः – कुशाग्रा बुद्धिः यस्य स बहुब्री विशे तीक्ष्णबुद्धि। तेज बुद्धिवाला।

कूपखननम् – कूपस्य खननम् ष तत्पु नपु। प्र वि ए व। कूपस्य खननम्। कूऑं खोदना।

कृतोपकारः – कृतः उपकारः येन स.। पुं प्र वि ए व। जिसने प्रत्युपकार किया है।

कृत्स्नम् – विशे नपु प्र वि ए व.। सम्पूर्णम्। सम्पूर्ण।

कृतसन्धानम् – कृत सन्धान येन तत् बहुब्री नपुं. प्र. वि ए. व। अविभक्तम्। जुडी हुई।

कृष्णसारे – पुं स. वि. ए. व.। मृगविशेष। कृष्णासार जाति के विशेष प्रकार के हिरण पर।

कोपयति – कुप् + णिच् + लट्, प्र पु ए. व। क्रोधयति। क्रोधित करता है।

क्लमः – क्लम + घञ्, पुं. प्र. वि ए व। श्रमजनित शैथिल्यम्। थकान।

क्वथयति – क्वथ् + णिच्, लट्, प्र पु ए व। उत्तप्त करोति। उबालती है। तपाती है।

क्षुत्क्षामकण्ठा – क्षुधया क्षामाः कण्ठाः येषां ते, बहुव्री, पु प्र. वि. ब व। भूख से पीड़ित कण्ठ वाले।

क्षुपे – क्षुप, पु, स वि ए. व। पादपे। पौधे मे।

ग

ग्रीवाभङ्गाभिरामम् — ग्रीवाया भङ्गः तेन अभिरामम्, ष तत्पु पु द्वि वि ए व, ग्रीवाया परिवर्तनेन मनोहर जातम्। गर्दन के मोडने से सुन्दर लग रहे।

गुणोपेतम् — गुणै: उपेतम्, तृ तत्पु., गुणै: युक्तम्, गुणों से युक्त।

गुहायाम् — गुहा, स्त्री., स वि. ए व। गह्वरे। गुफा मे।

घ

घोषमुपैति — घोषम् + उपैति, उप + एति, लटलकारे, प्र पु ए व। घोषम् शब्दम् करोति। आवाज करता है।

च, छ, ज

चक्षुः ददत् — चक्षु + दा + शतृ, पु प्र. वि. ए. व। दृष्टिपात कुर्वन्। दृष्टिपात करते हुए।

चिकीर्षुः — कृ + सन् + उधातोर्द्वित्वम्। कर्त्तुम् इच्छुक। करने का इच्छुक।

छुरिकया — छुरिका, स्त्री., तृ वि ए. व। असिधेनुकया। चाकू से।

जगति — जगत्, नपु, स. वि ए व। ससारे। ससार मे।

जराम् — जरा, स्त्री., द्वि. वि. ए. व। वृद्धावस्थाम्। बुढापे को।

जीवन्तु — जीव्, लोट्, प्र पु. ब. व.। प्राणान् धारयन्तु। जीवित हो।

जल्पन्ति — जल्प्, लट्, प्र. पु. ब. व। व्यर्थं वदन्ति। व्यर्थ बोलते हैं।

त

त्याज्यः — त्यज्+ यत् पु. प्र. वि. ए व.। परित्यक्तव्य। छोडने योग्य।

तारस्वरेण — पु तृ. वि ए. व। उच्चस्वरेण। जोर से।

तुरगाः — तुरग, पु प्र. वि. ब व। अश्वाः। घोडे।

तूलराशौ — तूलराशि, पु स वि. ए व.। कार्पाससमूहे। कपास के ढेर पर।

तेपे — तप् + लिट् प्र. पु. ए व.। तपस्याम् अकरोत्। तपस्या करने लगा।

द

दर्भैः — दर्भ, तृ. वि ब व.। कुशैः। कुशों से।

दिष्ट्या — दिश् + क्तिन्, अव्यय। भाग्येन। भाग्य से।

दुरासदः — दूरेण आसदः, तृ तत्पु.। दुष्प्राप्य। जो कठिनाई से प्राप्त हो।

द्वेष्यम् — द्विष् + यत्, विशे., द्वेषयोग्यम्। द्वेष के योग्य।

न

नरपतिक्रोधः — नरपतेः क्रोधः ष तत्पु. प्र वि ए व.। राज्ञः (चन्द्रगुप्तस्य) कोपः। राजा चन्द्रगुप्त का क्रोध।

नाटयति — नट्, णिच्, लट्, प्र पु. ए व। अभिनयं करोति। अभिनय करता है।

निक्षिप्य — नि + क्षिप् + ल्यप्, अव्य। संस्थाप्य। रखकर

निधाय — नि + धृ + ल्यप्, अव्यय। अवधार्य। धारणकर।

निपीय — नि + पा + ल्यप्, अव्यय। पीत्वा। पीकर।

निबोधत — नि + बुध, लोट् म पु बहु. व। जानीत। जानो।

निर्गुणः — निर्गता गुणा यस्मात् स, बहुव्री. विशे. पु प्र. वि ए. व.। गुणहीनः। गुणहीन।

निर्जनम् — जनानाम् अभावः, निर्जनम् अव्ययी, नपुं. प्र वि. ए. व। जनैः रहितम्। सुनसान, एकान्त।

निदाघे — निदाघ पु स. वि. ए व। ग्रीष्मकाले। अत्यधिक ग्रीष्मकाल में।

निवेदयामास — नि + विद् + लिट् प्र पु. ए. व। निवेदनम् अकरोत्। निवेदन किया।

निवेश्य — नि + विश् + ल्यप्, अव्य। स्थापयित्वा। बिठाकर।

निशितनिपाताः — निशितः यः निपातः ते, बहुव्री पु प्र वि ब व। तीक्ष्ण प्रहारा। तीखे प्रहार वाले।

निष्क्रम्य — नि. + क्रम् + ल्यप्, अव्य। बहिर्गत्वा। बाहर जाकर।

निष्क्रान्तः — नि. + क्रम् + क्त, पुं. प्र. वि ए व। बहिर्गत, निर्गत.। बाहर निकल गया।

निसर्गः — निसर्ग पुं. प्र. वि. ए. व। प्रकृति। स्वभाव।

निस्सरन्तीभिः — निस् + सृ + शतृ, स्त्री. तृ. वि ब. व। आगच्छन्तीभिः। निकलती हुई।

निहतगौरवम् — निहितं गौरवं यस्य सः, तम्, बहुव्री। नष्टकीर्तिः। जिसका गौरव नष्ट हो गया हो।

नृत्यगीतवादित्राणाम् — नृत्यगीतवादित्रम् नपु ष वि ब. व। नृत्य च गीत च वादित्र च। तेषाम्, द्वन्द्व नृत्य गीतवादित्राणाम्। नाच–गाने एवं बाजो का।

प

पथ्यस्य — पथिन् + यत् विशे. ष. वि ए व.। हितकारिवचनस्य। लाभकारी वचनो का।

पदाभ्याम् — पद नपुं. तृ च. वि. द्वि. व शब्दाभ्याम्। दो शब्दों द्वारा।

पनसम् — पनस नपुं. प्र. वि. द्वि. वि ए. व। फलविशेषः। कटहल।

परायणम् — परायण पुं. द्वि. वि ए. व। तन्यमय। तल्लीन।

परिवर्तित	-	परि + वृत + णिच् + क्त पु परिवर्तन जातम्। बदल गया।
पर्याकुलम्	-	परित आकुलम्, परि + आकुलम् यण सन्धि। पर्याकुलम्। नपु ए व। व्याकुलम्। व्याकुल।
पारिजातम्	-	पारिजातम् नपु, प्र वि ए व। हरसिंगाराख्य पुष्पम। हरसिंगार।
पार्श्वे	-	अव्यय, समीपे। पास मे।
पिनाकिनम्	-	पिनाक धनु अस्ति अस्य इति, द्वि वि ए व। महादेवम्। शिवम।
पुम्भिः	-	पुम्, पु ,तृ वि ब व । पुरुषै। पुरुषो के द्वारा।
पूर्वकायम्	-	शरीरस्य पूर्वभागम्। शरीर केअगले हिस्से में (पिछले हिस्से को समेटता हुआ)।
पूर्वाग्रहः	-	पूर्व चासौ आग्रह, कर्मधारय। पूर्वनिर्धारितविचार। पहले किए गए हल को।
पौराणाम्	-	पुरे भवा इति पौरा। तेषाम् ष वि ब व। नगरवासिनाम्। नगर निवासियों के।
प्रगृह्यन्ताम्	-	प्र + ग्रह + यक् + लोट् प्र पु. ब. व.। रश्मय रुन्ध्यन्ताम्। लगामे खीचिए।
प्रचीयन्ते	-	प्र + चि + यत, प्र वि ब व। वृद्धि प्राप्नुवन्ति। बढते हैं।
प्रच्छादनम्	-	प्र + छद् + ल्युट्। निगूहनम्। छिपाया जाना।
प्रतिक्रिया	-	प्रति + क्रिया स्त्री प्र वि ए व। प्रतिकारम्। उपाय।
प्रतिप्रियम्	-	पु द्वि वि. ए व, प्रत्युपकारम्। उपकार के बदले मे प्रत्युपकार।
प्रतिसंहृतः	-	प्रति + सम् + हृ + क्त। प्रत्यावर्तित.। रोक लिया गया है।
प्रथाम्	-	प्रथा स्त्री द्वि वि ए व। प्रसिद्धिम्। प्रसिद्धि।
प्रदीप्ते	-	प्र + दीप् + क्त स वि ए. व। ज्वलिते। जलने पर।
प्रभृतय.	-	प्रभृति पु. प्र वि. ब व। इत्यादय.। इत्यादि।
प्रयत्नपेक्षणीयः	-	प्रयत्नेन प्रेक्षणीय (प्र + ईक्ष् + अनीयर्) पु प्र वि ए व.। काठिन्येन दर्शनीय। कठिनाई से दृष्टिगोचर।
प्रष्टव्याः	-	प्रच्छ् + तव्यत्, पु प्र वि ब व। प्रष्टुम् योग्या। पूछने योग्य।
प्रावृषेण्येन	-	प्रावृषेण्य पु तृ वि ए व , अतिवृष्टिकारकेण। अत्यधिक वर्षा करने वाले से।
प्रीताभ्यः	-	प्रीता स्त्री च प वि. ब व। प्रसन्नाभ्य। प्रसन्न।

ब

बत	-	बत अव्य., खेदे। खेदवाचक अव्यय
बाणपथवर्तिनः	-	बाणपथवर्तिन् प्र वि ब व। बाणचालनस्य मार्गे स्थिता. बाण चलाने के मार्ग मे स्थित।

बीभत्सम् – बीभत्स पु द्वि. वि ए व । भयावहम्। भयानक।
बृहत्यः – बृहती स्त्री, प्र. वि बहु. व । महत्य । विशाल, बडी।

भ

भक्त्या – भज् + क्तिन् स्त्री तृ वि. ए. व । श्रद्धया। श्रद्धापूर्वक।
भविता – भू + लुट् प्र पु. ए. व । भविष्यति। होगा
भाषितम् – भाष् + क्त, नपु., प्र वि. ए. व । कथितम्। कही हुई बात।
भिद्यन्ते – भिद् + यक् प्र पु. ब व । पृथक् भवन्ति। अलग होते हैं।
भूयसा – भूयस् तृ वि ए. व.। बहुतरेण। अत्यधिक

म

मद्वचः – मत् + वचः, वचस् नपु प्र वि. ए. व । मम वचनम्। मेरे वचन।
मणिकारश्रेष्ठिनम् – मणिकारस्य श्रेष्ठिनम् ष तत्पु सुवर्ण व्यापारिणम्। सोने के व्यापारी को।
मन्दारवृक्षे – मन्दारवृक्ष पु स. वि ए व । तरुविशेषे। मन्दार के वृक्ष पर।
महद्भिः – महत् पुं तृ वि. ए. व.। महापुरुषैः। महापुरुषो द्वारा।
महाप्लावनम् – महत् च तत् प्लावनम्, कर्मधारय। विशाल बाढ।
महोदधौ – महान् च असौ उदधिः, तस्मिन्। कर्मधा. पु. स. वि ए. व । महासागरे। महासागर पर।
मुच्यन्ताम् – मुच् + यक् + लोट् प्र पु ब व । शिथिली क्रियन्ताम्। ढीली कर दें।
मुमोच – मुच् लिट् प्र. पु ए व.। न्यक्षिपत्। स्थापितवान्। डाल दिया, रख दिया।
मुहुः – अव्य, पुनः पुनः। बार–बार।
मृजया – मृजा स्त्री तृ. वि ए. व । मार्जनेन, स्नानकृतशुद्ध्या। जल द्वारा शुद्धि से।
मृणालपटली – मृणालस्य पटली ष. तत्पु, प्र वि. ए. व । मृणाल समूहः। कमलनाल का समूह।
मृदुनि – मृदु – विशे स. वि. ए. व । सुकोमले। कोमल

य

यास्यति – या + लृट् प्र पु. ए व । गमिष्यति। जाएगा, जाएगी।
यूथिका – सज्ञा, स्त्री., प्र वि. ए. व । यूथी, जूही। पुष्प विशेष।
योक्त्रयित्वा – युज् + ष्ट्रन + णिच् + क्त्वा, अव्यय, बद्ध्वा। बाँधकर।
योगक्षेम – अप्राप्तस्य प्राप्तिः योग । योगस्य रक्षण क्षेमः। अप्राप्त की प्राप्ति योग और प्राप्त का रक्षण क्षेम है।

र

रथजवात् -- रथस्य जव, ष तत्पु पु, प वि ए व। रथवेगात। रथ के वेग से।

राजापथ्यकारिणः -- राज्ञाम् अपथ्यकारिण, ष, तत्पु, ष वि ए व। नृपापकारकारिण। राजाओं का अहित करने वाला।

रोहते -- रुह् + लट् प्र पु ए व। प्ररोहति। उगता है।

व

वक्रम् -- वक्र – नपु, प्र वि ए व विश। कुटिलम टेढा।

वज्रसारा -- वज्रसार, प्र वि ब व, विशे, वज्रतुल्यकठोरा। वज्र के समान कठोर।

वणिज्या -- वणिज् + यत्, स्त्री, प्र वि ए व। वाणिज्यम्। व्यापार।

वणिजा -- वणिज् - पु तृ वि ए व। व्यापारिणा। व्यापारी के द्वारा।

वः -- युष्मद्, सर्व, ष वि ब व। युष्माकम्। तुम्हारा।

वर्त्म -- वर्त्मन्, नपु, प्र वि ए व। मार्ग। रास्ता।

व्रजन्ति -- व्रज् + लट्, प्र पु ब व। गच्छन्ति। जाते है।

वशीकुर्वन् -- वश + च्वि + कृ + शतृ, पु। प्र वि ए व। वशे कुर्वन्। अपने वश में करते हुए।

वाक्शौण्डीर्यम् -- वाच शौण्डीर्यम, ष तत्पु, शौण्डीर + ष्यञ्, नपु, प्र वि ए व। वाचिक वीरत्वम्। वाचिक वीरता।

वाचः -- वाच्, स्त्री, प्र वि ब व। वचनानि। वाणी।

वाजिनः -- पु, प्र वि ब व। अश्वा। घोडे।

वायसः -- सज्ञा, पु, प्र वि ए व। काक। कौआ।

विकरता -- वि + कृ + शतृ तृ वि. ए व जल वर्षयता। जल बरसाते हुए।

विच्छायवदनः -- विगता छाया यस्य वदनस्य स, बहुव्री, पु प्र वि ए व। मलिनमुख। मुरझाए हुए चेहरे वाला।

विचारयामास -- वि + चर् + लिट्, प्र पु, ए व। अचिन्तयत्। सोचा, विचार किया।

विज्ञाय -- वि + ज्ञा + ल्यप्, अव्य, ज्ञात्वा। जानकार।

विदार्य -- वि + दृ + णिच्। अव्य। विदीर्णं कृत्वा। फाडकर।

विद्धम् -- विध् + क्त, नपु, द्वि वि ए व। क्षतम्। विंधा हुआ, घायल।

विधेहि -- वि + धा + लोट्, म पु ए व। रचय। बनाओ।

विनियुक्तः -- वि + नि + युज् + क्त, पु प्र वि ए व। अधिकृत। नियुक्त किया गया।

विप्रकृष्टान्तरः	—	विशेषेण प्रकर्षेण कृष्ट अन्तर, वि + प्र. + कृष् + क्त। अतिदूरवर्ती बहुत दूर तक खीच लाया गया।
विपर्यस्तम्	—	विपरि + अस्तम्, द्वि वि ए व। अस्तव्यस्तम्। अस्तव्यस्त।
विपुलताम्	—	विपुल + तल्, स्त्री. द्वि वि ए व.। विशालताम्। विशाल रूप को।
विभवक्षयात्	—	विभवस्य क्षय, तस्मात् ष तत्पु धनाभावात्। धन के अभाव के कारण।
विमृद्नीयात्	—	वि + मृद्, विधिलङ् प्र पु ए व., मर्दयेत्। मालिश करना चाहिए।
वियति	—	वियत्, नपु. स. वि. ए. व। आकाशे। आकाश में।
विरंचिः	—	पुं. प्र. वि ए व.। ब्रह्मा।
विवदमानौ	—	वि + वद् + शानच्, पु, प्र. वि द्वि व। कलह कुर्वन्तौ। झगड़ते हुए।
विशदयद्भिः	—	तृ. वि ब व। विस्तारयद्भि.। विस्तार करते हुए।
विशीर्णाः	—	वि. + शॄ + क्त प्र. वि ब. व.। नष्टा.। बिखर गए।
विहस्य	—	वि + हस् + ल्यप्, अव्य.। हसित्वा। हँसकर।
वीक्ष्य	—	वि + ईक्ष् + ल्यप्, अव्य.। विलोक्य, दृष्ट्वा। देखकर।
वृत्तेन	—	वृत् + क्त, तृ वि. ए व। सदाचारेण। सदाचार से।
वेत्ति	—	विद् + लट्, प्र पु, ए. व.। जानाति। जानता है।
वेश्मनि	—	वेश्मन्, स. वि ए. व. (नपु) गृहे। घर में।
वैनतेयः	—	विनतायाः अपत्यम्, विनता + ढक्, पु. प्र. वि ए. व, गरुड.। गरुड।
वैखानसः	—	पु, प्र वि. ए. व। तपस्वी। तपस्वी।
व्यापाद्यमानम्	—	वि + आ + पद् + णिच् + शानच्। पु द्वि वि. ए. व.। हन्यमानम। मारे जाते हुए को।

श

शङ्कनीयः	—	शङ्क + अनीयर्, पुं., प्र वि ए व। सन्देहास्पदः। शङ्का के योग्य।
शय्यातः	—	शय्या + तसिल्, पं. वि. ए. व.। पर्यङ्कात्। बिस्तर से।
शरसंधानम्	—	शरस्य संधानम्, ष, तत्पु। बाणस्य आरोहणम्। बाण चढ़ाने का।
श्येनः	—	श्येन, पु., प्र वि ए. व। हिंसक प्रवृत्तिक (पक्षिविशेषः) बाज।
श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः	—	धावनपरिश्रमेण उद्घाटिताल् मुखात् पतद्भि, दौड़ने के श्रम के कारण हुई थकावट से खुले मुख से गिरी हुई।

स

सख्यम्	–	सखि + गत वि नपु प्र वि ए व। मैत्री। मित्रता।
सताम्	–	सत् पु ष वि ब व। सज्जनानाम। सज्जनों का।
सधियः	–	धिया सहित, तृ. तत्पु विशे पु प्र वि ब व। बुद्धिमन्त। बुद्धिमान।
सन्निपात्यः	–	सम् + नि + पत + यत्, पु प्र वि ए व। मोक्तव्य। छोडना चाहिए।
सन्निहिता	–	सम् + नि + धा + क्त + टाप्, स्त्री प्र वि ए व। समीप स्थित। समीप ही रहती है।
समदेशवर्तिनः	–	समदेशे वर्तिन स तत्पु पु प्र वि ब व। समतल भूमौ स्थित। समतल भूमि पर स्थित।
समरेखम्	–	समा रेखा यस्य तम बहुव्री द्वि वि ए व। अकुटिलरेखम। सीधा प्रतीत होता है।
समर्पय	–	सम् + अर्प + लोट म पु ए व। देहि। दो।
समर्प्य	–	सम् + अर्प् + ल्यप् अव्य। दत्वा। देकर।
समवायाः	–	पु प्र वि ब व। समूहा। समूह।
सम्प्रति	–	सम् + प्रति अव्ययपद। अधुना। अब।
संबोध्य	–	सम् + बुध् + ल्यप् अव्य। बोधयित्वा।
संभ्रमम्	–	भ्रमेण सहितम् तृ तत्पु, विचलतया। घबराहट के साथ।
संव्यवहाराणाम्	–	सम् + व्यवहार पु ष वि ब व। व्यापाराणाम्। व्यापारो का।
समानशीलव्यसनेषु	–	समान शील व्यसन च तेषु स तत्पु समाचरणस्वभावेषु। एक जैसे आचरण और स्वभाव वालों मे।
समुल्लसति	–	सम् + उत् + लस् लट् प्र. पु ए व। प्रफुल्लो जायते। प्रफुल्लित होता है।
साधितम्	–	साध् + क्त नपु प वि ए व। कृतम्। कर दिया गया।
साधुकृतसंधानम्	–	साधुरूपेण कृत सधान येन। तम् बहुव्री। सम्यक्तया विहित। ठीक तरह से धनुष पर चढ़ाए हुए बाण को।
सारंगेण	–	सारग पु. तृ वि ए व.। मृगेण। हिरण द्वारा।
सुप्रतिष्ठितः	–	सुष्ठु प्रकारेण स्थित, पु प्र वि ए व। सम्मानित। सम्मानित।
सुमनः सगात्	–	सुमनस सगात्. प तत्पु प वि ए व। पुष्पाणा संसर्गात्। फूलों के सग से।
सुहृदाम्	–	सुष्ठु हृदय यस्य स, सुहृत् बहुव्री. सु + हृत् ष. वि. ब. व। मित्राणाम। मित्रों की।

सेतुः	–	सेतु पु प्र वि ए ५। बन्धः। पुल, बाँध।
सौधम्	–	सौध, पु. द्वि वि ए. व। श्वेतप्रासादम् धवलगृहम्। सफेद महल।
स्तोकम्	–	अव्ययपद न्यूनम्। थोडा।
स्थिरत्वम्	–	स्थिर + त्व अव्य.। स्थायित्वम्। स्थिरता को।
स्थौल्यम्	–	स्थूल + ष्यञ्, नपु, प्र. द्वि वि ए. व.। अति मांसलत्वम्। मोटापा।
स्मारयति	–	स्मृ + णिच् लट् प्र. पु ए व.। स्मरण कारयति। याद करवाता है।
स्यन्दने	–	स्यन्दन नपु स वि ए व। रथे। रथ पर।
स्वज्ञानगरिम्णा	–	स्वज्ञानस्य गरिम्णा, तृ. तत्पु। गरिमन् नपुं तृ वि ए व.। स्वज्ञानस्य गौरवेण। अपने ज्ञान के गौरव से।
स्विन्नगात्रस्य	–	स्विन्न गात्र यस्य तस्य बहुव्री पुं ष वि ए. व., स्वेदेन सिक्तस्य। पसीने से लथपथ शरीर वाले के।
स्वप्रत्ययावृत्तिः	–	स्वप्रत्यये आवृत्ति, स तत्पु आ + वृत् + क्तिन्। आत्मविश्वासे सुदृढः। आत्मविश्वास से सुदृढ।
स्ववीर्यतः	–	स्वस्य वीर्यः, तस्मात् (तसिल्) ष तत्पु. स्वपराक्रमात्। अपने पराक्रम से।

ह

हन्तव्यः	–	हन् + तव्यत्, पुं, कर्मवाच्य। व्यापादितव्य.। मारने योग्य।
हरिणकानाम्	–	हरिण + कन् + ष वि ब व। हरिणशावकानाम्। हिरण के बच्चो का।
हरितः	–	हरित्, द्वि वि. ब. व आदित्यस्य अश्वान्। सूर्य के घोडो को।
हरीन्	–	हरि, पु., द्वि वि ब व। अश्वान्। घोडो को।

BLUE - PRINT
FOR
PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN HINDI

CLASS - III :

क्रम सं० / प्रकरण	प्रश्न रूप/प्रकार
1- जागो प्यारे, 2- सच्चा बालक 3- कबूतर और	- विकल्प चयन
बहेलिया, 4- झूला, 5- किसान का दान,	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
6- मोती सुन्दरी, 7- तितली, 8- गंगा का उतरना (कविता)	- छाँट कर
9- हाथी, 10- फूलों की सभा, 11- काठ का घोड़ा,	- गलत वाक्य को शुद्ध
12- पहला इंजन, 13- नाई, और लकड़हारा,	- करना
14- बड़े भाई, 15- पेट्रोलियम और तेल,	- शब्दार्थ लिखना
16- चावल और कुमाऊँ, 17- चाँद का कुर्ता	- वाक्य में प्रयोग
18- सैंटा क्लाज, 19- रानी लक्ष्मीबाई, 20- नन्हा	- वाक्य क्रम संशोधन
पौधा, 21- कश्मीर, 22- राम का वनवास,	
23- निकले सूरज की किरणें, 24- शकुन्तला	
25- राष्ट्रगान	

उद्देश्य :-

1- छात्र प्रश्नों के उत्तर सही सही लिख सकेंगे ।
2- वे पाठ्य पुस्तक में दिये गए कविताओं को याद कर सकेंगे ।
3- छात्र पढ़े हुए पाठों में वर्णित विषयों के बारे में दो तीन पंक्ति लिख सकेंगे ।
4- छात्र शब्दों के सही वर्तनी को लिख सकेंगे ।
5- वे वाक्य को शुद्ध करके लिखने में सक्षम होंगे ।
6- छात्र कम से कम 10 शब्दों के अर्थ सही सही लिख पायेंगे ।
7- वे कुछ वाक्यों को (कम से कम 10) अपने वाक्यों में प्रयोग करने में समर्थ होंगे ।
8- छात्र कम से कम 10 शब्दों के विलोम एवं समानार्थक शब्द लिख सकेंगे ।

कुल प्रश्न संख्या = 41 पूर्णांक = 125

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN HINDI) FOR CLASS III :

Objective/ Contents	Knowledge							Under Standing							Skill						
	MC	FB	C	W	S	O	A	MC	FB	C	W	S	O	A	MC	FB	C	W	S	O	A
1- जागो प्यारे	1																				
2- अच्छा बालक	1																				
3- कबूतर और बहेलिया								11													
4- कुआ	1	1		1																	
5- किसान का हल								1													
6- सौदी सुन्दरी	1							1													
7- तितली																				1	1
8- गंगा का स्वर्ग उतरना					1	1		1											1	1	
9- हार्नी								1		1											
10- चूहों की कथा	1							1													
11- दाठ का घोड़ा																			1	1	
12- नाई और कबूतरवाला			1					1													
13- बड़े चलो				1				11													
14- पहलवान और सिंह								11													
15- बाबर और हुमायूँ		1						1													
16- चाँद का कुर्ता								1													
17- पहला फैन								1													
18- टैंट बनाओ								1													
19- रानी लक्ष्मी बाई								1													
20- नन्हा पौधा																				11	
21- कश्मीर		1																			
22- राम का वनवास			1																		
23- जिसके सूरज की किरणें								111													
24- शकुन्तला			1																		
25- राष्ट्रगान								1													

MC = Multiple Choice Type
FB = Fill in the blans type
C = Correction type
W = World meaning
S = Sentence making
O = Opposites, Synonyms
A = Arrangement of Sentences.

BLUE-PRINT FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN HINDI

CLASS : V

प्रश्न सं०	प्रकरण	प्रश्न रूप / प्रकार
	1- प्रार्थना, 2-गुरुनानक, 3-मेरा अपना गाँव,	- विकल्प चयन
	4-स्वास्थ्य कैसे रहे, 5-कविता, 6-राम की विजय	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
	7-महानगर की सैर, 8-नीति के दोहे, 9-अन्तर्राष्ट्रीय-शांति प्रसार	
	शान्ति एवं सद्भावना, 10-महामना मालवीय,	- लघु उत्तरीय प्रश्न
	11- पद और दोहे, 12-किताब प्रदर्शनी,	- गलत वाक्यों का शुद्ध करना
	13-महान वैज्ञानिक रमन, 14-[illegible], 15-सुमन	- वाक्य में प्रयोग
	एक उपवन के, 15-पर्यावरणीय प्रदूषण,	- वाक्यक्रम संशोधन
	16-शिवाजी और [illegible], 17-सरदार भगत	- सही अर्थ छाँटना
	सिंह, 18- एक फूल, 19-[illegible] का दर्द, 20-[illegible]	- पर्यायवाची लिखना
	[illegible], 21-परशुराम लक्ष्मण संवाद, 22-सभी जीव-	- विलोम शब्द लिखना
	धारी एक दूसरे पर निर्भर है ?, 23- चाँद बीबी,	- तत्सम रूप लिखना
	24- [illegible], 25-[illegible], 26-हृदय	- मुहावरों के अर्थ छाँटना
	परिवर्तन, 27-राष्ट्रगान	- व्याकरणों को छाँटना तथा लिखना
		- दिये गये शीर्षक पर दस वाक्य लिखना

उद्देश्य :

1- छात्र प्रश्नों के सही-सही उत्तर लिख सकेंगे ।
2- वे पाठ्य पुस्तक में दी गई प्रमुख कविताओं को याद कर सकेंगे ।
3- छात्र पढ़े गये पाठ से सम्बन्धित विभूतियों के बारे में स्वयं दो तीन पंक्ति लिख सकेंगे ।
4- छात्र शब्दों के सही वर्तनी को लिख सकेंगे ।
5- छात्र वाक्य को शुद्ध करके लिख सकेंगे ।
6- छात्र कम से कम 10 शब्दों के सही सही अर्थ लिख सकेंगे ।
7- छात्र शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे ।
8- छात्र शब्दों के सही अर्थ छाँट सकेंगे ।
9- छात्र दिये गये शब्दों के पर्यायवाची, विलोम शब्द तथा तत्सम रूप लिख सकेंगे ।
10- छात्र मुहावरों के अर्थ समझ कर छाँट सकेंगे ।
11- छात्र व्याकरणों की पहचान तथा लिख सकेंगे ।
12- वे शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को छाँट सकेंगे ।
13- छात्र दिये गये शीर्षक पर दस वाक्य लिख सकेंगे ।

कुल प्रश्न संख्या = 47 पूर्णांक = 100

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN HINDI FOR CLASS V)

Objectives/ Contents	Knowledge			Understanding			Skill		
	MC	FB	SA	MC	FB	SA	MC	FB	SA
1- प्रार्थना	1			11					
2- गुरु नानक	1								
3- मेरा असली गाँव			1						
4- स्वास्थ्य कैसे रहें				1					
5- सरिता	1			1					
6- राम की विजय	1			1	1	1			
7- महानगर की सैर	1		11	1		1			
8- नीति के दोहे									
9- अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सद्भावना				1	1				
10- महामना मालवीय	1		1	1	11				
11- पद और सवैया			11	1	1				
12- विज्ञान प्रदर्शनी									
13- महान वैज्ञानिक रमन	1	1		1		1			
14- हम सब सुमन एक उपवन के			11			1			
15- पर्यावरणीय प्रदूषण			1						
16- शिवाजी और गौरवान्	1			1	1				
17- सरदार भगत सिंह	1			1		1			
18- एक बूँद			1						
19- चुम्मन का दर्द	1								
20- रिहन्द बाँध			1						
21- परशुराम लक्ष्मण संवाद									
22- क्या जीवधारी एक दूसरे पर निर्भर हैं ?				1					
23- चाँद बीबी	1								
24- बसन्त			1						
25- पन्ना धाय का त्याग									
26- हृदय परिवर्तन									
27- राष्ट्र-गान									

उपलब्धि परीक्षण

विषय—हिन्दी

कक्षा—३

नाम आशा

विद्यालय का नाम प्रा० पा० पुलिस लाइन बलिया

स्थान पु० ला० जिला बलिया

निर्देश :

नीचे दिये गये प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये है। उनमे से सही उत्तर पर सही (✓) का चिन्ह लगा दो।

इनमे से कविता की कौन सी पंक्ति सही है ?

१—(क) सूरज उग आया, भोर हुआ
(ख) भोर हुआ, उग आया सूरज
(ग) भोर हुआ सूरज उग आया
(घ) सूरज हुआ भोर उग आया।

२—(क) देखो घटा श्याम नभ छायी
(ख) देखो श्याम घटा नभ छायी
(ग) श्याम घटा नभ देखो छायी
(घ) देखो नभ घटा श्याम छायी।

३—बालक ने अपनी अशरफियो का पता इसलिये बता दिया क्योंकि चलते समय उसकी माँ ने कहा था—
(अ) जान कभी न गवाना
(ब) लड़ाई कभी न करना
(स) झूठ कभी न बोलना
(द) लालच कभी न करना।

[illegible]	19.0	0.02	R
24	35.0	0.15	R
25	54.0	0.22	S
26	62.0	0.36	S
27	49.5	0.35	S

१०—लकडहारा न्याय के लिये किसके पास गया —

(अ) काजी के पास ।

(ब) रामजी के पास ।

(स) साथी के पास ।

(द) राही के पास ।

११ भूखे सिंह ने ऐंड्रोक्लीज पर हमला इसलिये नही किया कि—

(अ) वह ऐंड्रोक्लीज को देखकर डर गया ।

(ब) वह बूढा और कमजोर हो गया था ।

(स) वह ऐंड्रोक्लीज को देखकर पहचान गया ।

(द) वह राजा की बात नही मानता था ।

१२—हुमायूँ—

(अ) अकबर का बेटा था ।

(ब) बाबर का बेटा था ।

(स) बीरबर का बेटा था ।

(द) पामर का बेटा था ।

१३—क्रिसमस ईसाइयो का सबसे बडा त्योहार इसलिये है कि —

(अ) उस दिन सेंटाक्लाज सबको मिठाई बाँटता है ।

(ब) उस दिन ईसामसीह का जन्म हुआ था ।

(स) उस दिन खूब धूम-धाम और सजावट होती है ।

(द) उस दिन ईसाई धर्म का जन्म हुआ था ।

१४ – राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र अपने साथ इसलिये ले गये कि :

(अ) उनको जंगल मे अकेले डर लगता था ।

(ब) वे जंगल की सैर करना चाहते थे ।

(स) वे उन्हे शिकार खेलना सिखाना चाहते थे ।

(द) वे राक्षसो का बध करवाना चाहते थे ।

१५—शकुन्तला—

(अ) कर्ण की पुत्री थी ।

(ब) मेनका की पुत्री थी ।

(स) उर्वसी की पुत्री थी ।

(द) दुर्वासा की पुत्री थी ।

	19.0	0.02	R
24	35.0	0.15	R
25	54.0	0.22	S
26	62.0	0.36	S
27	49.5	0.35	S

१६—शकुन्तला ने दुर्वासा को इसलिये प्रणाम नहीं किया कि—

(अ) वह राजा के सोच मे बैठी थी ।

(ब) वह बहुत सुन्दर थी ।

(स) दुर्वासा कुरूप थे ।

(द) उसकी सहेलियाँ उसका शृंगार कर रही थी ।

१७—राजा दशरथ ने कैकेई को दिये दोनो बरदानो को इसलिये पूरा किया कि—

(अ) वे कैकेई को बहुत प्यार करते थे ।

(ब) वे कैकेई से राम को कम प्यार करते थे ।

(स) वे कौशल्या को छोड़ना चाहते थे ।

(द) वे रघुकुल की रीति को नहीं तोड़ना चाहते थे ।

१८—भरत के मनाने पर राम जंगल से वापस नही आये क्योंकि—

(अ) वे पिता को दिये गये बचन नही तोड़ना चाहते थे ।

(ब) वे जंगल मे खूब आनन्द ले रहे थे ।

(स) वे जंगल में राज-काज के झंझट से दूर थे ।

(द) वे कैकेई के लडके भरत के साथ नही रहना चाहते थे ।

१९—मन्थरा ने कैकेई को इसलिये बहकाया कि—

(अ) वह राजा दशरथ से घृणा करती थी ।

(ब) वह अपनी रानी को खुश करना चाहती थी ।

(स) वह भरत से बहुत प्यार करती थी ।

(द) राम-लक्ष्मण ने उसे मारा था ।

२०—लक्ष्मीबाई का नाम सदा अमर रहेगा क्योंकि—

(अ) वह महिला होकर घोड़े की सवारी करती थी ।

(ब) वह तलवार और तीर से खेलती थी ।

(स) वह युद्ध में लड़ते हुए मारी गयी ।

(द) वह देश की आजादी के लिए बलिदान हो गयी ।

२१—बाबर ने हुमायूँ के प्राण बचाने के लिए—

(अ) उसे शाही हकीम के हवाले कर दिया ।

(ब) उसने कोहनूर हीरा दान कर दिया ।

(स) उसने अल्लाह से अपनी जान ले लेने को कहा ।

(द) उसने वजीर से और अच्छा हकीम बुलाने के लिए कहा ।

२२—एंड्रोक्लीज की कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि —

(अ) किये गये उपकार को कभी नही भूलना चाहिये ।

(ब) सिह की सेवा करनी चाहिये ।

(स) किसी के साथ बुराई नही करनी चाहिये ।

(द) गुलामी पाप है ।

२३—नाई और लकड़हारे की कहानी मे सबसे बुद्धिमान कौन है—

(अ) नाई ।

(ब) गधा ।

(स) लकडहारा ।

(द) काजी ।

२४—बिल्ली के गले मे घंटी बॉधने का उपाय —

(अ) बहुत सफल था ।

(ब) बहुत खतरनाक था ।

(स) बहुत सरल था ।

(द) बड़ा आनन्ददायक था ।

२५—हाथियो को भगाने के लिए लोग मशाल जलाते है इसलिये कि —

(अ) हाथी आग से डरता है ।

(ब) हाथी को रोशनी मे भागने का रस्ता मिल जाता है ।

(स) ढोल बजाने मे इससे सहायता मिलती है ।

(द) मशाल सस्ता होता है ।

२६ -राजा ने अपने राज्य से तकली, तकुवा, चर्खा आदि निकलवा दिया फिर पन्द्रह साल बाद राज्य मे चरखा कहॉ से आया ?

(अ) राजकुमारी ने एक चरखा छिपा कर रखा था ।

(ब) राजकुमारी ने जिद करके मॅगवाया ।

(स) वही परी शाप पूरा करने के लिए ले आयी ।

(द) एक बूढी नौकरानी छिपकर चरखा कात रही थी ।

२७--कबूतर और आखेटक कहानी से हमे शिक्षा मिलती है कि —

(अ) बडे बूढो का कहना मानना चाहिये ।

(ब) आखेट करना बेकार है ।

(स) जाल से नही डरना चाहिये ।

(द) चूहे से दोस्ती करनी चाहिये ।

	19.0	0.02	R
24	35.0	0.15	R
25	54.0	0.22	S
26	62.0	0.36	S
27	49.5	0.35	S

२८—कविता की दी हुई पंक्ति के नीचे उसकी अगली पंक्ति लिखो—

(अ) कुहू-कुहू कर गाने वाली ~~प्यारी कोयल काली~~

प्यारी कोयल काली

(ब) साथ मे ध्वजा रहे ~~बाल दल~~ से जा रहे

बाल दल से जा रहे।

२९—अपनी पाठ्य पुस्तक से चार पंक्ति की कोई कविता लिखो जो इस प्रश्न पत्र मे न हो।

एक बीज था
गया बहुत ही गहराई में बोया।
उसी बीज के अन्दर
में था नन्हा पौधा सोया।

३०—हाउस बोट के विषय मे दो वाक्य लिखो।

हाउस बोट लकड़ी का मकान होता है। यह
पानी पर तैरता है।

३१—डल-झील की सुन्दरता पर दो वाक्य लिखो।

डल झील कश्मीर में है। इसमें सारह
और

३२—तितली के बारे मे चार वाक्य लिखो।

तितली के

३३—निम्नलिखित वाक्यों मे गलत शब्दों को काट दो—

(अ) सूर्य उगते ही ~~चाँद~~ निकला।

(ब) मोहन का ~~[illegible]~~ खुश था।

(स) उसने उठकर ~~प्रशंसा~~ किया।

(द) उसने फिर कप प्लेट धोया।

(य) कप मे दूध पीकर वह पढने लगा।

(र) हाथी को देख बालको को आश्चर्य हुआ।

(ल) यूनानियो का घोड़ा लकड़ी का था।

(व) सुन्दर लडकी मुस्कराने लगी।

(श) राजा दशरथ चक्रवर्ती सम्राट थे।

(ष) एक सप्ताह मे सात दिन होते है।

४—निम्नलिखित वाक्यो को शुद्ध करके लिखो—

(अ) राम घर जाती है।

राम घर जाता है।

(ब) चीनी मीठा है।

चीनी मिट्ठी होती है।

(स) दूध मीठी है।

दूध

(द) राम ने सोया।

राम सोता है।

(य) राम को सीता दिखायी दिया।

राम को सीता दिखाई देने

(र) राम का अगूठी हनुमान ले कर गये।

(ल) हनुमान सुरसा का मुख मे गये।

(व) राजकुमार और राजकुमारी का विवाह हुआ।

(श) दिल्ली की तख्त हुमायूँ को मिला।

(ष) पानी खेतो मे बह रही थी।

३५—निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखो -

शब्द	अर्थ
विश्व	
ध्वजा	
शीघ्र	
दुर्ग	
शक्ति	
अन्त	
द्वार	
अल्प	
स्पष्ट	
क्रोध	

३६—निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

(अ) प्रसिद्ध ....

(ब) उत्तर ....

(न) मूर्ख ....

(द) पंक्ति ....

(य) आश्रम ....

(र) नष्ट ....

(ल) दृश्य ....

(व) कीमती ....

(श) त्योहार ....

(ष) प्रिय ....

३७—नीचे दिये गये प्रत्येक शब्द के चार-चार अर्थ लिखे है किन्तु इनमें से एक ही अर्थ सही है। सही को रेखांकित कर दो।

(अ) नेक का अर्थ है—नाक, एक, भला, गला।

(ब) पथ्य का अर्थ है—भोजन, रास्ता, पत्थर, नाश्ता।

(स) विचित्र का अर्थ है—सुन्दर चित्र, मित्र, अनोखा, उल्टा।

(द) चकित का अर्थ है—चाह करना, इशारा करना, अचंभा करना, चक्कर लगाना।

(य) अपूर्व का अर्थ है —जो पहले न हो, जिसका अन्त न हो, जो पूरब मे न हो, जो बाद में हो।

(र) मरदानी का अर्थ है —दानी, वीर, मर्द, अभिमानी ।

(ल) बहकाने का अर्थ है —बहुत कहना, बहुत समझाना, सही समझाना, भुलावा देना ।

(व) प्रण का अर्थ है—दृढ निश्चय, भय करना, प्यार करना, प्राण देना ।

(श) शीश झुकाने का अर्थ है —सर मे दर्द होना, थक जाना, आदर करना, समझ जाना ।

(ष) गडा का अर्थ है —गन्दा, तागे-रस्सी आदि मे लगायी जाने वाली गाँठ, गुण्डा, गन्ना ।

३८—नीचे लिखे गलत वाक्यो मे शब्दो को इधर-उधर कर सही वाक्य लिखो—

जैसे— हूं मै खाता रोटी। (गलत वाक्य)

मै रोटी खाता हूं। (सही वाक्य)

(अ) राम है जाता घर

राम घर जाता है। ....

(ब) कुत्ता जानवर पालतू है।

कुत्ता पालतू जानवार है। ....

(स) राम की है बहन सुन्दर।

राम की बहन सुन्दर है। ....

(द) पानी से कुआँ निकलता है।

पानी कुआँ से निकलता है। ....

(य) आकाश में है छाये बादल।

आकाश मैं बादल छाये है। ....

(र) राम मारा को रावण ने।

....

(ल) एक चिड़िया बैठी है, पेड़ पर।

एक चिड़िया पेड़ पर बैठी है। ....

(व) है शिकार सिंह करता।

शिकारी सिंह करता है। ....

(श) राम सबेरे व्यायाम उठकर करता है।

राम सबेरे उठकर व्यायाम करता है। ....

(ष) दशरथ चार की रानियाँ थी।

दशरथ की चार रानियाँ थी ....

३९—निम्न शब्दों के विलोम (उल्टा) लिखो ।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
रात	दिन	सच	
ठण्डा		भाई	
मीठा		राजा	
बड़ा		तेज	
दूर		बहादुर	

४०—इन शब्दों के लिये दूसरा समानार्थक लिखो—

शब्द	समानार्थक शब्द
गंगा	
पानी	
पृथ्वी	
सूरज	
चाँद	
हवा	
भगवान	
चिड़िया	पक्षि
साल	
जानवर	

४१—शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों पर सही (✓) के निशान लगाओ—

लडका	लड़का	सोरगुल	शोरगुल
धूमधाम	घुमधान	मुनि	मुनी
उपर	ऊपर	प्रकाश	परकाश
वाल-दिवस	बालदिवस	दुवासा	दुर्वासा
चरखियों	चरखीयो	दुष्यन्त	दुषयन्त

उपलब्धि परीक्षण

विषय—हिन्दी

कक्षा—५

नाम फूलचन्द कक्षा ५ ....

विद्यालय का नाम विद्यालय जूनियर बेसिक विद्यालय अगूपुर कलाँ ....

स्थान अगूपुर कलाँ जिला जौनपुर जिला ....

निर्देश :

नीचे दिये गये प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये है। उनमे से सही उत्तर पर सही (✓) का चिन्ह लगा दो।

इनमे से कविता की कौन-सी पंक्ति सही है ?

१—(अ) है चमक रही किरण तुम्हारी।
(ब) चमक रही है किरण तुम्हारी।
(स) है किरण तुम्हारी चमक रही।
(द) किरण रही है चमक तुम्हारी।

२—(अ) बन गये धरा के वारि विमल।
(ब) धरा के बन गये वारि विमल।
(स) वारि के धरा बन गये विमल।
(द) गये धरा के बन वारि विमल।

३—गुरु नानक का जन्म हुआ था—
(अ) रावलपिंडी मे।
(ब) तलवंडी मे।
(स) इमामबंडी मे।
(द) रणचंडी मे।

४— राम की सेना के नायक थे —

(अ) सुग्रीव ।

(ब) भरत ।

(स) अंगद ।

(द) विभीषण ।

५—गांधी जी मालवीय जी को सर्वश्रेष्ठ—

(अ) वकील मानते थे ।

(ब) वक्ता मानते थे ।

(स) विद्वान मानते थे ।

(द) हिन्दू मानते थे ।

६—श्री चन्द्रशेखर वकट रमन को मिला —

(अ) नोबिल पुरस्कार ।

(ब) प्रथम पुरस्कार ।

(स) राज पुरस्कार ।

(द) आचार्य पुरस्कार ।

७—इमामबाड़ा स्थित है—

(अ) इलाहाबाद मे ।

(ब) दिल्ली मे ।

(स) लखनऊ मे ।

(द) कलकत्ता मे ।

८—दक्षिण भारत मे मराठा राज्य की नींव डालने वाले थे —

(अ) मोरोपन्त ।

(ब) शिवाजी ।

(स) ताना जी ।

(द) आवाजी सोनदेव ।

९—साण्डर्स पर पहली गोली चलाई—

(अ) भगत सिह ने ।

(ब) आजाद ने ।

(स) बटुकेश्वर ने ।

(द) राजगुरु ने ।

१०– लेखक ने पहली बार जुम्मन को इस वेश मे देखा था -

(अ) खद्दर का कुर्ता पहने हुए।

(ब) मखमल का कुर्ता पहने हुए।

(स) मलमल का कुर्ता पहने हुए।

(द) रेशम का कुर्ता पहने हुए।

११—चाँद-बीबी ने युद्ध मे हराया—

(अ) मुराद को।

(ब) अकबर को।

(स) आदिल शाह को।

(द) दाराशिकोह को।

१२—गुरु नानक ने चालीस रुपये भूखे साधुओ को खिलाने में खर्च कर दिया, इसे उन्होने खरा सौदा कहा क्योंकि—

(अ) सौदा खरीदकर तुरन्त खिला दिया गया।

(ब) जितना पैसा मिला उसे खर्च कर दिया गया।

(स) भूखो को खिलाने मे खर्च किया गया।

(द) इस सौदे से कोई लाभ या हानि न हुई।

१३ – मनुष्य का स्वास्थ्य इसलिये अच्छा होना चाहिये कि वह —

(अ) खूब जम कर खा सके।

(ब) खूब जम कर खेल सके।

(न) उसके मन मे उच्च विचार आये।

(द) उसे अच्छे-अच्छे सपने आयें।

१४—रावण ने विभीषण को लंका से इसलिये निकाल दिया क्योंकि --

(अ) वह रावण की चापलूसी नही करता था।

(ब) वह मन्दोदरी के पक्ष मे बोला।

(स) उसने हनुमान को छोड़ देने के लिए कहा।

(द) उसने राम से मिलकर रहने के लिए कहा।

१५—मालवीय जी ने वकालत इसलिये छोड़ दी कि —

(अ) वकालत से घर-गृहस्थी के कार्य मे बाधा पड़ रही थी।

(ब) वकालत से देश-सेवा के कार्य मे बाधा पड़ रही थी।

(स) वकालत से हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में बाधा पड़ रही थी।

(द) वकालत से धर्म के कार्य में बाधा पड़ रही थी।

१६ – रसखान की हार्दिक अभिलाषा गोकुल में पुनर्जन्म लेने की थी क्योंकि—

(अ) वे गो-प्रेमी थे।

(ब) वे सौन्दर्य प्रेमी थे।

(स) वे प्रकृति प्रेमी थे।

(द) वे कृष्ण-प्रेमी थे।

१७ –ऊँचे वेतन के सरकारी पद को छोड़कर रमन तुरन्त कलकत्ता विश्वविद्यालय चले गये क्योंकि-

(अ) अपने बड़े अफसर से उनकी लडाई हो गई।

(ब) कलकत्ता ऐसे बडे शहर मे वे रहना चाहते थे।

(स) वे प्राध्यापक पद पर कार्य करना चाहते थे।

(द) वे श्री आशुतोष मुकर्जी के मित्र थे।

१८—भगत सिंह ने स्कूल इसलिये छोड़ दिया क्योंकि—

(अ) वे खेती करना चाहते थे।

(ब) वे व्यापार करना चाहते थे।

(स) वे आन्दोलन करना चाहते थे।

(द) वे खेल-कूद मे भाग लेना चाहते थे।

१९—आवाजी के माफी माँगने पर गौहरबानू की आँखो मे आँसू आ गये क्योकि —

(अ) वह बहुत डर गई थी।

(ब) उसे खुले दरबार मे खड़ा किया गया था।

(स) उसके मां-बाप से उसे दूर कर दिया गया था।

(द) शिवाजी की उदारता पर वह गदगद हो गई थी।

२०—घर छोड़ते समय लोग इसलिये झिझकते है क्योंकि—

(अ) घर छोड़ने पर क्या होगा, यह मालूम नही होता।

(ब) ज्यादा खर्च करने से डरते है।

(स) रेलगाडियाँ और बसे ठीक समय से नहीं चलते।

(द) लौटने पर पता नही घर वाले घर पर रखेंगे कि नहीं।

२१—जीव-जन्तु पेड़ पौधो पर निर्भर है, इसलिये कि जीवजन्तुओ को इनसे —

(अ) भोजन व वस्त्र मिलता है।

(ब) छाया और आराम मिलता है।

(स) इनसे सजावट का सामान मिलता है।

(द) इनसे ईंधन मिलता है।

२२—कविता की दी हुई पंक्ति के नीचे उसको अगली पंक्ति लिखो—

(अ) लेकिन हम सबसे मिलकर ही

इस आप वन की सो आसारी ...

(ब) या जलूँगी गिर अगारे पर किसी

~~आ~~ पड़ूगी ~~फूल~~ पर किसी ...

२३—अपनी पाठ्य-पुस्तक से चार पंक्ति की कोई कविता लिखो जो इस प्रश्न-पत्र मे न हो।

मानुस हो तो वही रसखान बसो बृज गोकुल गाव के ग्वाव
के गावरन जो पसु हो तो कहा बस मेरो चरो नित नन्द की धेनु मझारन
पाहन हो तो वही गीरी को जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन
जो खग हो तो बसेर करो मिल का लिन्द कुल कदम की डारन

२४—लखनऊ के इमामबाड़े का वर्णन चार वाक्यो मे करो—

इमाम बाड़ा बहुत प्रसिद्ध है लखनऊ मे जो इसको
देखता है वह बहुत खुस हो जाता इसको वहा
दूर दूर से आदमी देखने आते है वे बहुत खुस हो
जाते है यह बहुत प्रसिद्ध लगता है

२५—'ल्यूहिल' की विशेषताओ का वर्णन चार वाक्यो में करो—

... ...

२६—बसन्त का वर्णन चार वाक्यो मे करो—

बसन्त यह एक निराला रितु है ...

... ...

२७—फूल की विशेषता बताने वाले दो शब्दो को रेखांकित कर दो—

आँसू, <u>कंटक</u>, हास, सरल, चाँदनी, <u>कोमल</u>।

२८—प्रदर्शनी से सम्बन्धित दो शब्दो को रेखांकित कर दो—

<u>पंडाल</u>, सेना, दुकान, सडक, हाथी, समाचार।

२९—मक्खन न खाने की कृष्ण ने कौन-सी सफाई दी ?

सवेरा होते ही मै ~~माखन~~ ~~मधुबन~~ को दे आया मेरे हाथ इतने
छोटे छोटे मै तेरा सीका हर नही पाया

३०—लखनऊ के चार दर्शनीय स्थानो के नाम बताओ—

(१) इमामबाड़ा ... (२) मेडीकल कालेज ...

(३) दसनीय इमामबाड़ा (४) ...

३१—निम्नलिखित वाक्यो मे गलत शब्दों को काट दो —

(अ) मनुष्य के जिवन मे स्वास्थ्य का बड़ा महत्व है।

(ब) उनके सिहनाद से दिशाएं गुंजे उठी।

(स) बाल्यावस्था से ही वे सन्यमी एवं उदार थे।

(द) उनका हिरदय अतिअन्त निरमल था।

(य) युध मे शत्रूओ के छके छुड़ा दिये थे।

(र) महान परतीभावना होते हुये भी वे अहन्कार से बिल्कुल मुक्त थे।

(ल) पिता जी मूर्छ्नार हो गये और हमे आशीर्वाद दिया।

(व) चितौड़ के राजा विकरमादित्य से परजा रुष्ट थी।

(श) रक्त रंजीत खड्ग बनविर की हाथो मे थी।

(ष) पर्यरतन करना हमारा करतव्य है। गौतमबुद्ध ने कहा।

३२—निम्नलिखित वाक्यो मे शब्दो को उलट-फेरकर लिखा गया है, उन्हे क्रम में रखकर वाक्यो को स
करो—

(अ) जुम्मन को पहली बार सात वर्ष का था तब मै कुल जब मैने देखा।

…जुम्मन जब सात वर्ष का था तब मैने देखा…

(ब) इस सागर का जल के क्षेत्र मे ८६६ वर्ग कि० मी० फैला हुआ है।

इस सागर का जल ८६६ कि० मी० फैला है…

(स) एक बार आक्रमण के समय किले मे घुसना चाहा शत्रुओ ने उनके किले की दीवार तोड़कर।

शत्रु ने एक बार आक्रमण के किले को तोड़कर घुस गये

(द) चाँद बीबी की भारतीय नारी के की कहानी हे साहस और शौर्य की वीरता की।

चाँद बीबी के भारतीय नारी की कहानी है…

(य) एक दिन मार दिया दरबार मे ही घूंसा राजा विक्रमादित्य ने एक वृद्ध को।

एक दिन दरबार में विक्रमादित्य को घूंसा मार दिया…

(र) स्वर्णाक्षरों मे त्याग की यह कहानी पन्ना धाय के अंकित रहेगी।

स्वर्णाक्षरो में त्याग की कहानी पन्ना को मिला…

(ल) के लिए प्रविष्ट हुए कालेज मे उच्च शिक्षा मद्रास के प्रेसीडेन्सी रमन १५ वर्ष की अवस्था में

कालेज मे उच्च शिक्षा मद्रास के प्रेसीडेन्सी रमन १५ को… में

(ब) आलोचित कर रही है परन्तु उसकी अमर कीर्ति दिग दिगन्त को आज भी ।

आलोकित कर रही है उसकी अमर कीर्ति दिग दिगन्त को आज भी

(श) विधान सभा मार्ग हम गोमती नदी के किनारे तथा हजरतगंज होते हुए और वहाँ बिड़ला छात्रावास मे ठहर गये, मोती महल नामक स्थान पर पहुँचे ।

विधान सभा मार्ग हम गोमती नदी के किनारे तथा हजरतगंज होते हुए हम और वहाँ बिड़ला छात्रावास मे ठहर कर मोती महल नामक स्थान पर पहुँचे

(ष) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी फिर से लाने की कल्पना देश मे राम राज्य को ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी फिर से लाने की कल्पना की थी

३३– निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

(अ) राजा के पास एक बडी हाथी थी ।

राजा के पास एक बड़ा हाथी था।

(ब) आज दही खट्टा है ।

आज दही खट्टी है

(स) राम को रोटी खाया ।

राम का रोटी खाया

(द) पं० जी की घोड़ा ने गिर गया ।

पं. जी का घोड़ा गिर गया

(य) यहाँ पर हम सकुशल हूँ ।

यहाँ पर हम सकुशल हैं

(र) तुम विद्यालय पढने के लिए जाते हूँ ।

तुम विद्यालय पढ़ने के लिये जाता हूँ

(ल) अपनी माँ के सेवा करो ।

अपनी माँ का सेवा करो,

(व) हमारा देश को १५ अगस्त के स्वतन्त्रता मिली ।

हमारे देश को १५ अगस्त के स्वतन्त्रता मिली थी।

(श) रामचन्द्र जी की सेना मे बड़े भालू बन्दर था ।

रामचन्द्र जी की सेना में बड़े भालू बन्दर थे

(ष) मै एक और रोटी खाना चाहता है ।

मैं एक रोटी खाना चाहता हूँ

३४- निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो —

शब्द	अर्थ
सन्तुलित	असन्तुलित
वसुधा	पृथ्वी
सुति	सुमित
ओजस्वी	अयोजना
प्रासाद	महल
अद्वितीय	द्वितीय
अदृश्य	अवदृश्य
खिदमत	उनके समय
पुश्तैनी	बहुत पुराने समय के
रमणीय	

३५—निम्नलिखित शब्दो का वाक्यो मे प्रयोग करो—

बीहड़ यह स्थान बहुत बीहड़ है ....

आयोजन आज बहुत बड़ा योजना है ....

उल्लंघन मेरी बात को उल्लंघन न करे ....

हृदय मेरा हृदय बहुत अच्छा है ....

मनोयोग मेरा काम बड़े मनयोग से हो रहा है ....

पूँजी आज उनकी पूँजी बहुत भारी है ....

अविरल ....

शिथिल ....

धार्मिक ....

धवल मेरा कापी बहुत धवल है ....

३६—नीचे दिये गये प्रत्येक शब्द के चार-चार अर्थ लिखे है किन्तु इनमे से एक ही अर्थ सही है। सही अर्थ को रेखांकित कर दो।

(अ) पावन का अर्थ है—पाना, <u>पवित्र</u>, पावस, पावक।

(ब) मॉडल का अर्थ है—नमूना, <u>मार</u>, मना करना, में डालना।

(स) कुशाग्र का अर्थ है—क्रोधी, खुशबू, खराब भाग्य, <u>तेज</u>।

(द) रक्तपात का अर्थ है—खून-खराबा, खून से लिखा पत्र, लाल पता, पतला <u>खून</u>।

(य) अदृश्य का अर्थ है—गुप्त, लुप्त, सुप्त, <u>तृप्त</u>।

(र) अनमनी का अर्थ है—<u>झगडा</u>, बिना मन के, उदास, अभागिन।

(ल) रमणीय का अर्थ है—रमण, मन लायक, रमण, सुन्दर।

(व) आयसु का अर्थ है—आ गया, आज्ञा, आशा, आसान।

(श) निष्कर्ष का अर्थ है—निचोड, निथारना, निकालना, निगलना।

(ष) कलह का अर्थ है—कल ही, कलश, तगडा, झगड़ा।

३७—इन शब्दो के तीन-तीन पर्यायवाची लिखो—

शब्द	पर्यायवाची		
पानी	....	....	....
फूल	....	....	....
हवा	....	....	....
सूर्य	....	....	....
धरती	....	....	....
चॉद	....	....	....
बादल	....	....	....
कमल	....	....	....
भगवान	....	....	....
आसमान	....	....	....

३८—निम्नलिखित शब्दो के विलोम लिखो—

शब्द	विलोम
स्वस्थ	अवस्थ
गुण	अवगुण
स्वतन्त्र	अस्वतन्त्रता
प्रकाश	पकाश
निकट	दूर
अनेक	
आदर	आदर
अस्त	अवस्थ
विजय	पराजय
बहादुरी	बहादूर

३९— निम्नलिखित शब्दों के तत्सम लिखो---

शब्द	तत्सम
वृच्छ	
भसम	
छिमा	
विसाल	
भगत	
साँझ	
सिव	
छन	
विस्व	
रन	

४०---निम्नलिखित मुहावरों के चार-चार अर्थ दिये गये है। सही अर्थ को रेखाकित करो---

(अ) खलबली मचाना----

(क) शोर मचाना। (ख) हलचल मचना।

(ग) छल करना। (घ) बाधा डालना।

(ब) मन रमना—

(क) मनोकामना करना। (ख) मन चचल होना।

(ग) मन लगाना (घ) मन बहलाना।

(स) छक्के छुड़ाना—

(क) छिल्का अलग करना। (ख) हराना।

(ग) छक के खाना। (घ) कर्ज चुका देना।

(द) गदगद होना—

आनन्दित होना, गदराना, मोटाना, गुदगुदाना।

(य) आग पैदा करना—

आग जलाना, तेज करना, जोश भरना, गुस्साना।

(र) ढेर कर देना—

इकट्ठा करना, ज्यादा काम करना, ढेरी लगाना, मार देना।

(ल) खाक कर देना—

नष्ट कर देना, खाकी रंग मे रंगना, आग जलाना, पहले खाकर कुछ करना ।

(व) हृदय जीतना—

वश मे कर लेना, दिल तेजी से धड़कना, हृदय की बीमारी अच्छा होना, हृदय निकाल लेना ।

(श) लोहे के चने चबाना—

बकवास करना, गलत बात करना, असम्भव होना, बहुत कठिन काम कर देना ।

(ष) तीर की भाँति—

तेजी से, खतरनाक, जान मारने वाला, कठोर ।

४१—'ईय' लगाकर तीन शब्द बनाओ जैसे दर्शनीय..................

४२— अवस्था लगाकर तीन शब्द बनाओ जैसे बाल्यावस्था.................

४३—(अ) निम्नलिखित वाक्यो मे से संज्ञा को रेखांकित करो—

(१) राम विद्यालय जाता है ।

(२) अध्यापक कक्षा मे सत्य बोलने के लिए कहते है ।

(ब) निम्नलिखित वाक्यो मे सर्वनाम शब्दो को रेखांकित करो—

(१) तुम अपनी पुस्तक उसके घर से लाओ ।

(२) मेरी माँ अपने गाव गई है ।

(स) निम्न वाक्यो मे विशेषण शब्दो को रेखांकित करो—

(१) यह काली गाय मोटे ग्वाले की है ।

(२) सुन्दर पुष्प लम्बे वृक्ष पर बहुत मनोहर लगते है ।

(द) निम्नलिखित वाक्यो मे क्रिया-शब्दो को रेखांकित करो—

(१) वह खिचड़ी पकाती है, सबको बाटती है, तब खुद खाती है ।

(२) रावण को मारकर राम अयोध्या लौटे ।

(य) निम्नलिखित वाक्यो मे क्रिया-विशेषण शब्दों को रेखांकित करो —

(१) वह बहुत तेज दौडती है ।

(२) धीरे-धीरे दौडकर कछुआ पहले पहुँच गया ।

४४—निम्नलिखित विशेषणो के संज्ञा रूप लिखो—

विशेषण	संज्ञा रूप
स्वस्थ	
आवश्यक	
उपयोगी	
सन्तुलित	
सुन्दर	

४५—निम्नलिखित संज्ञाओं को विशेषण रूप में लिखो—

संज्ञा	विशेषण रूप
नियम	अनियम
मूर्खता	मूर्खता
लालच	लालची
रंग	रंगीन
क्रोध	क्रोधी

४६—निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों पर सही (✓) के निशान लगाओ —

बन्दी	वन्दी	प्रतिभावान	प्रतीभावान
डाकु	डाकू	विज्ञानिक	वैज्ञानिक
पूर्वक	पूर्वक	भाषा	भाशा
बिक्रमादित्य	विक्रमादित्य	महत्वाकांछा	महत्वाकांक्षा
निष्कंटक	निरकंटक	ट्रैक्टर	टरैक्टर
शृङ्गार	शृङ्गार	सुत्र	सूत्र

४७—'मेरा उपवन' शीर्षक पर दस वाक्य लिखो।

मेरे उपवन बहुत सुन्दर इसमें फूल है इसमें पहता लोग टहलने को और सुन्दर होते है। यरफूल सबको लगते है मेरा उपवन घर के पास है इस इसमें हरी भरी घास है और इसमें बैठकर तमाने है इसमें मेरे घर के सब लोग रहते है और दूर दूर के टहलने को आते है इसमें तमाम तरह के पेड़ पौधा है इसमें तमाम तरह की फल है और फूल भी होते है और इसमें छाया भी रहती है इसमें सब लोग और है

APPENDIX - V

ITEM ANALYSIS CHART FOR ACHIEVEMENT TEST IN HINDI

Class III :

Q.No.	Difficulty value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1	77.5	0.13	R
2	50.5	0.33	S
3	61.0	0.36	S
4	76.0	0.14	R
5	37.0	0.24	R
6	47.0	0.12	R
7	44.0	0.26	S
8	51.2	0.09	R
9	41.0	0.04	R
10	47.5	0.01	R
11	56.5	0.14	R
12	77.0	0.12	R
13	72.0	0.32	R
14	59.5	0.35	S
15	50.0	0.14	R
16	53.5	0.13	R
17	80.0	0.24	R
18	75.0	0.32	R
19	48.0	0.00	R
20	40.5	0.25	S
21	23.5	0.05	R
22	29.0	0.16	R
23	19.0	0.02	R
24	35.0	0.15	R
25	54.0	0.22	S
26	62.0	0.36	S
27	49.5	0.35	S

28 (a)	71.5	0.41	R
28 (b)	61.0	0.32	S
29	59.0	0.39	S
30	21.0	0.16	R
31	27.0	0.12	R
32	45.2	0.12	R
33	59.5	0.54	S
34	57.0	0.24	S
35	46.0	0.24	S
36	51.8	0.26	S
37	48.1	0.39	S
38	45.0	0.34	S
39	50.7	0.41	S
40	44.4	0.21	S
41	53.0	0.41	S

Total Questions = 41

R = Rejected

S = Selected

APPENDIX - VI

ITEM ANALYSIS CHART FOR ACHIEVEMENT TEST IN HINDI

CLASS : V

Q.No.	Difficulty value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1	89.5	0.09	R
2	90.5	0.13	R
3	69.5	0.07	R
4	69.0	0.18	R
5	57.0	0.11	R
6	54.5	0.07	R
7	67.0	0.18	R
8	73.0	0.44	R
9	29.0	0.35	R
10	39.5	0.36	R
11	70.0	0.14	R
12	59.5	0.49	S
13	43.5	0.11	R
14	58.5	0.11	R
15	58.2	0.25	S
16	51.5	0.29	S
17	52.0	0.12	R
18	53.5	0.41	S
19	47.5	0.21	S
20	82.0	0.12	R
21	73.0	0.24	R
22	69.0	0.51	R
23	61.5	0.17	R
24	71.0	0.86	R
25	46.5	0.10	R
26	48.2	0.10	R
27	88.0	0.38	R
28	83.0	0.33	R
29	59.0	0.32	S
30	58.0	0.37	S
31	55.8	0.48	S
32	76.0	0.17	R

33	55.3	0.25	S
34	45.5	0.21	S
35	76.8	0.23	R
36	56.0	0.24	S
37	57.4	0.24	S
38	60.0	0.22	S
39	47.7	0.30	S
40	50.7	0.33	S
41	50.5	0.35	S
42	78.2	0.42	R
43	49.7	0.23	S
44	52.2	0.47	S
45	58.4	0.28	S
46	60.1	0.35	S
47	40.3	0.10	R

Total No. of Items = 47

R = Rejected

S = Selected

उपलब्धि परीक्षा

विषय—हिन्दी

कक्षा – ३

नाम ....

विद्यालय का नाम ....

स्थान .... जिला ....

निर्देश :

नीचे दिये गये प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये हैं। उनमें से सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगा दो।

१—इनमें से कविता की कौन सी पंक्ति सही है ?

(अ) देखो घटा श्याम नभ छायी

(ब) देखो श्याम घटा नभ छायी

(स) श्याम घटा नभ देखो छायी

(द) देखो नभ घटा श्याम छायी।

२—बालक ने अपनी अशरफियो का पता इसलिये बता दिया क्योंकि चलते समय उसकी माँ ने कहा था—

(अ) जान कभी न गवाना

(ब) लड़ाई कभी न करना

(स) झूठ कभी न बोलना

(द) लालच कभी न करना।

३—गंगा को भगीरथी इसलिये कहते है—

(अ) क्योंकि भगीरथ गंगा जी को पृथ्वी पर लाये थे

(ब) क्योंकि वे भगीरथ की पुत्री थी

(स) क्योंकि वे रथ पर चढ़कर स्वर्ग से भागी थी

(द) क्योंकि इसमें नहाने से सभी का भाग्य खुल जाता है।

४—राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र अपने साथ इसलिये ले गये कि—

(अ) उनको जंगल मे अकेले डर लगता था

(ब) वे जंगल की सैर करना चाहते थे

(स) वे उन्हे शिकार खेलना सिखाना चाहते थे

(द) वे राक्षसों का बध करवाना चाहते थे ।

५—भरत के मनाने पर राम जंगल से वापस नही आये क्योंकि—

(अ) वे पिता को दिये गये बचन नही तोडना चाहते थे

(ब) वे जंगल मे खूब आनन्द ले रहे थे

(स) वे जंगल मे राज-काज के झंझट से दूर थे

(द) वे कैकेई के लडके भरत के साथ नही रहना चाहते थे ।

६—लक्ष्मीबाई का नाम सदा अमर रहेगा क्योंकि—

(अ) वह महिला होकर घोडे की सवारी करती थी

(ब) वह तलवार और तीर से खेलती थी

(स) वह युद्ध मे लडते हुए मारी गयी

(द) वह देश की आजादी के लिए बलिदान हो गयी ।

७—हाथियों को भगाने के लिए लोग मशाल जलाते है इसलिये कि—

(अ) हाथी आग से डरता है ।

(ब) हाथी को रोशनी मे भागने का रास्ता मिल जाता है ।

(स) ढोल बजाने मे इससे सहायता मिलती है ।

(द) मशाल सस्ता होता है ।

८—राजा ने अपने राज्य से तकली, तकुवा, चर्खा आदि निकलवा दिया फिर पन्द्रह साल बाद राज्य मे चरखा कहाँ से आया ?

(अ) राजकुमारी ने एक चरखा छिपा कर रखा था ।

(ब) राजकुमारी ने जिद करके मँगवाया ।

(स) वही परी शाप पूरा करने के लिए ले आयी ।

(द) एक बूढ़ी नौकरानी छिपकर चरखा कात रही थी ।

९ – कबूतर और आखेटक कहानी से हमे शिक्षा मिलती है कि—

(अ) बडे बूढो का कहना मानना चाहिये

(ब) आखेट करना बेकार है

(स) जाल से नही डरना चाहिये

(द) चूहे से दोस्ती करनी चाहिये ।

१०—कविता की दी हुई पंक्ति के नीचे उसकी अगली पक्ति लिखो—

साथ मे ध्वजा रहे

११—अपनी पाठ्य पुस्तक से चार पंक्ति की कोई कविता लिखो जो इस प्रश्न पत्र मे न हो ।

१२—निम्नलिखित वाक्यो मे गलत शब्दो को काट दो—

(अ) सूर्य उगते ही दीन निकला

(ब) मोहन का हीरदय खुश था ।

(स) हाथी को देख बालको को आश्चर्य हुआ ।

(द) सुन्दर लड़की मुसकराने लगी ।

१३—निम्नलिखित वाक्यो को शुद्ध करके लिखो—

(अ) दूध मीठी है

(ब) राम ने सोया

(स) राम का अंगूठी हनुमान ले कर गये ।

(द) पानी खेतों मे बह रही थी ।

१४—निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखो—

शब्द	अर्थ
शीघ्र	जल्दी
दुर्ग	किला
शक्ति	ताकत
अल्प	थोड़ा

१५—निम्नलिखित शब्दो का वाक्यों मे प्रयोग करो—

(अ) प्रसिद्ध उत्तर बनारस प्रसिद्ध नगर है

(ब) मूर्ख

किसी गाँव मे एक मूर्ख रहता था।

(स) आश्रम

साधु औरत रहते है जो आश्रम कहते है।

(द) त्योहार

हमारा होली का त्यौहार है

१६—नीचे दिये गये प्रत्येक शब्द के चार-चार अर्थ लिखे है किन्तु इनमे से एक ही अर्थ सही है। सही अर्थ को रेखाकित कर दो।

(अ) नेक का अर्थ है—नाक, एक, भला, गला।

(ब) अपूर्व का अर्थ है—जो पहले न हो, जिसका अन्त न हो, जो पूरब मे न हो, जो बाद मे हो।

(स) मरदानी का अर्थ है—दामी, वीर, मर्द, अभिमानी।

(द) शीश झुकाने का अर्थ है—सर मे दर्द होना, थक जाना, आदर करना, समझ जाना।

१७—नीचे लिखे गलत वाक्यों मे शब्दों को इधर-उधर कर सही वाक्य लिखो—

जैसे— हूँ मै खाता रोटी। (गलत वाक्य)

मै रोटी खाता हूँ। (सही वाक्य)

(अ) राम की है बहन सुन्दर। राम की बहन सुन्दर है।

(ब) राम मारा को रावण ने। राम ने रावण को मारा

(स) है शिकार सिंह करता। सिंह शिकार करता है।

(द) राम सवेरे व्यायाम उठकर करता है। राम सवेरे उठकर व्यायाम करता है

१८—निम्न शब्दो के विलोम (उल्टा) लिखो ।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दूर	पास	तेज	[illegible]
सच	झूठ	बहादुर	[illegible]

१९ – इन शब्दो के लिये दूसरा समानार्थक लिखो—

शब्द	समानार्थक शब्द
गगा	[illegible]
पृथ्वी	[illegible]
हवा	[illegible]
चिड़िया	

२०—शुद्ध वर्तनी वाले शब्दो पर सही (✓) के निशान लगाओ—

लडका लड़का मुनि मुनी

सोरगुल शोरगुल दुवार्सा दुर्वासा

उपलब्धि परीक्षण

विषय—हिन्दी

कक्षा—५

नाम .... प्यारेलाल ....

विद्यालय का नाम जू० बे० प्रा० पा० दुर्गाकुण्ड वाराणसी ....

स्थान .... दुर्गाकुण्ड वाराणसी ...... जिला वाराणसी ....

निर्देश :

नीचे दिये गये प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये हैं। उनमें से सही उत्तर पर सही (√) का चिन्ह लगा दो।

---

१. गुरु नानक ने चालीस रुपये भूखे साधुओं को खिलाने मे खर्च कर दिया, इसे उन्होंने खरा सौदा कहा क्योंकि—

(अ) सौदा खरीदकर तुरन्त खिला दिया गया।

(ब) जितना पैसा मिला उसे खर्च कर दिया गया।

(स) भूखो को खिलाने में खर्च किया गया।

(द) इस सौदे से कोई लाभ या हानि न हुई।

२. मालवीय जी ने वकालत इसलिये छोड दी कि—

(अ) वकालत से घर-गृहस्थी के कार्य में बाधा पड़ रही थी।

(ब) वकालत से देश सेवा के कार्य मे बाधा पड़ रही थी।

(स) वकालत से हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मे बाधा पड़ रही थी।

(द) वकालत से धर्म के कार्य मे बाधा पड़ रही थी।

३. रसखान की हार्दिक अभिलाषा गोकुल मे पुनर्जन्म लेने की थी क्योकि—

(अ) वे गो-प्रेमी थे।

(ब) वे सौन्दर्य प्रेमी थे।

(स) वे प्रकृति प्रेमी थे।

(द) वे कृष्ण-प्रेमी थे।

४. भगत सिंह ने स्कूल इसलिये छोड दिया क्योंकि—

(अ) वे खेती करना चाहते थे।

(ब) वे व्यापार करना चाहते थे।

(स) वे आन्दोलन करना चाहते थे।

(द) वे खेलकूद मे भाग लेना चाहते थे।

५. आवाजी के माफी मॉगने पर गौहरबानू की ऑखो में आँसू आ गये क्योंकि —

(अ) वह बहुत डर गई थी।

(ब) उसे खुले दरबार में खडा किया गया था।

(स) उसके मा-बाप से उसे दूर कर दिया गया था।

(द) शिवाजी की उदारता पर वह गदगद हो गई थी।

६. मक्खन न खाने की कृष्ण ने कौन-सी सफाई दी ?

श्री कृष्ण ने कहा कि माता मैं बालक हो र हूं कैसे सिका को पाऊंगा। ... ...

७. निम्नलिखित वाक्यो मे गलत शब्दों को काट दो—

(अ) मनुष्य के जीवन मे स्वास्थ्य का बडा महत्व है।

(ब) उनके सिंहनाद से दिशाएँ गूज उठी।

(स) बाल्यावस्था से ही वे सन्यमी एवं उदार थे।

(द) उनका हिरदय अतिअन्त निरमल था।

(य) युँध मे वे शत्रूओ के छक्के छुडा दिये थे।

(र) महान परतीभावन होते हुए भी वे अहन्कार से बिल्कुल मुक्त थे।

(ल) पिता जी मुस्कितार हो गये और हमें आशोर्वाद दिया।

(व) चितौड़ के राजा विकरमादित्य से परजा रुष्ट थी।

८. निम्नलिखित वाक्यो को शुद्ध करके लिखो—

(अ) राजा के पास एक बडी हाथी थी।

राजा के पास एक बडी हाथी था। ... ...

(ब) पं० जी की घोडा ने गिर गया।

पं० जी की घोड़ा गिर गया। ... ...

(स) यहाँ पर हम सकुशल हू।

मैं यहाँ पर कुशल हूँ।

(द) तुम विद्यालय पढने के लिए जाते हू।

तुम विद्यालय पढने के लिए जाते हूँ

(य) अपनी माँ के सेवा करो।

अपनी माँ के सेवा करो।

(र) हमारा देश को १५ अगस्त के स्वतन्त्रता मिली।

हमारा देश १५ अगस्त को स्वतन्त्रता मिली

(ल) रामचन्द्र जी की सेना मे बडे भालू बन्दर था।

रामचन्द्र जी की सेना में बड़े भालू बन्दर थे।

(व) मैं एक और रोटी खाना चाहता है।

मैं एक और रोटी खाना चाहता हूँ।

९. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

शब्द	अर्थ
वसुधा	पृथ्वी
सुति	बेटा
प्रासाद	
पुस्तैनी	खानदानी

१०. नीचे दिये गये प्रत्येक शब्द के चार-चार अर्थ लिखे है किन्तु इनमे से एक ही अर्थ सही है। सही अर्थ को रेखाकित कर दो।

(अ) कुशाग्र का अर्थ है—क्रोधी, खुशबू, खराब भाग्य, तेज।

(ब) रक्तपात का अर्थ है—खून-खराबा, खून से लिखा पत्र, लाल पत्ता, पतला खून।

(स) रमणीय का अर्थ है—भ्रमण, मनलायक, रमण, सुन्दर।

(द) आयसु का अर्थ है—आ गया, आज्ञा, आशा, आसान।

११ इन शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखो—

शब्द	पर्यायवाची		
फूल	सुमन		
धरती	वसुन्धरा	पृथ्वी	
बादल	आकाश	अम्बर	नीभ
भगवान	ब्रह्मा	विष्णु	महेश

१२. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखो—

शब्द	विलोम पर्यायवाची
स्वस्थ	अस्वस्थ
स्वतन्त्र	अस्वतन्त्र
प्रकाश	अप्रकाश
अस्त	उदय

१३. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम लिखो—

शब्द	तत्सम
वृच्छ	वृक्ष
भसम	भस्म
भगत	भक्त
विश्व	विश्व

१४. निम्नलिखित मुहावरों के चार-चार अर्थ दिये गये हैं। सही अर्थ को रेखांकित करो—

[अ] खलबली मचाना—

(क) शोर मचाना। (ख) हलचल मचाना।

(ग) छल करना। (घ) बाधा डालना।

[ब] मन रमना—

(क) मनोकामना करना। (ख) मन चंचल करना।

(ग) मन लगाना। (ग) मन बहलाना।

[स] छक्के छुड़ाना—

(क) छिल्का अलग करना। (ख) हराना।

(ग) छक के खाना (घ) कर्ज चुका देना।

[द] गदगद होना—

आनन्दित होना, गदराना, मोटाना, गुदगुदाना।

[य] आग पैदा करना—

आग जलाना, तेज करना, जोश भरना, गुस्साना।

[र] ढेर कर देना—

इकट्ठा करना, ज्यादा काम करना, ढेरी लगाना, मार देना।

[ल खाक कर देना—

नष्ट कर देना, खाकी रंग मे रंगना, आग जलाना, पहले खाकर कुछ करना।

[व ' हृदय जीतना—

वश में कर लेना, दिल तेजी से धडकना, हृदय की बीमारी अच्छा होना, हृदय निकाल लेना।

१५ 'ईय' लगाकर तीन शब्द बनाओ जैसे दर्शनीय ·· ··· ··· ··· ·· ···· ··· ··· ··· ····

१६ (अ) निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा को रेखाकिन करो—

(१) राम जाता है।

(२) अध्यापक पढाते है।

(ब) निम्नलिखित वाक्यो में सर्वनाम शब्दों को रेखाकित करो—

(१) तुम पुस्तक ले आओ।

(२) मेरी माँ गाँव गई है।

(स) निम्न वाक्यो मे विशेषण शब्दो को रेखांकित करो--

(१) यह काली गाय ग्वाले की है।

(२) सुन्दर पुष्प वृक्ष पर लगे है।

(द) निम्नलिखित वाक्यो मे क्रिया शब्दो को रेखाकित करो--

(१) वह खिचडी पकाती है।

(२) राम अयोध्या लौटे।

(य) निम्नलिखित वाक्यों मे क्रिया-विशेषण शब्दों को रेखाकित करो—

(१) वह बहुत तेज दौडती है।

(२) कछुआ पहले पहुँच गया।

१७. निम्नलिखित विशेषणों के संज्ञा रूप लिखो—

विशेषण	संज्ञा रूप
स्वस्थ	स्वास्थ्य
आवश्यक	आवश्यकता
उपयोगी	[illegible]
सन्तुलित	

१८. निम्नलिखित संज्ञाओ को विशे।ण रूप मे लिखो –

संज्ञा	विशेषण रूप
नियम	नियमती
मूर्खता	मूरखेताई
लालच	लालची
रंग	रंगीला

(1)

१९. निम्नलिखित शब्दो में से शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों पर सही (√) के निशान लगाओ–

बिक्रमादित्य   विक्रमादित्य   विज्ञानिक   वैज्ञानिक

प्रतिभावान   प्रतीभावान   महात्वाकाक्षा   महत्वाकाछा

(1)

APPENDIX - IX

BLUE-PRINT

FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN ARITHMETIC

CLASS - III :

क्रम सं0	प्रकरण	प्रश्न रूप/प्रकार
1	11 से 16 तक पहाड़े	
2	10 लाख तक की संख्याओं का लिखना-पढ़ना	- विकल्प चयन
3	बड़ी संख्या का जोड़ बाकी	- रिक्त स्थानों
4	10, 100, 1000 से मौखिक गुणा का अभ्यास	- अति लघु उत्तरीय
5	भिन्न का ज्ञान	
6-	दी हुई संख्याओं का भाग निकालना	
7	रकमों का लिखना	
8	रुपये, पैसे का जोड़-बाकी	
9	नाप, तौल पैमाने का ज्ञान	
10	घण्टा, मिनट, सप्ताह तथा महीनों के नाम	
11	घड़ी व कैलेन्डर देखना	
12	वर्गाकार, घनाकार एवं आयताकार ठोस की पहचान	
13	त्रिभुज, आयत एवं वृत्त की पहचानना	

उद्देश्य :

1- छात्र 11 से 16 तक के पहाड़े याद करेंगे तथा उनका उपयोग गुणन के प्रश्नों को हल करने में कर सकेंगे ।
2- वे बड़ी संख्याओं को लिखना एवं पढ़ना सीख जायेंगे ।
3- छात्र बड़ी संख्याओं को जोड़ने तथा घटाने में सक्षम होंगे ।
4- वे 10, 100 या 1000 से विभिन्न संख्याओं का मौखिक गुणा कर सकेंगे ।
5- छात्र भिन्न भाग तथा रुपये पैसे का जोड़ तथा घटाना सीख जायेंगे ।
6- रकमों को शब्दों में लिखने में छात्र सफल होंगे ।
7- वे नाप तौल के पैमाने, घण्टा, मिनट, सप्ताह, महीनो के नाम तथा घड़ी व कैलेन्डर को देखना सीखेंगे ।
8- घनाकार एवं आयताकार ठोस तथा त्रिभुज, आयत एवं वृत्त के आकृति की छात्र सही सही पहचानने में सक्षम होंगे ।

कुल प्रश्न संख्या = 53 पूर्णांक = 85

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN ARITHMETIC)

FOR CLASS III

Objectives / Concents	KNOWLEDGE			UNDERSTANDING			SKILL		
	MC	FB	VSA	MC	FB	VSA	MC	FB	VSA
1- 11 से 16 तक पहाड़े	11			11					
2- 10 लाख तक की संख्याओं का लिखना पढ़ना	111			1					
3- बड़ी संख्याओं का जोड़ बाकी	11	1		11					
4- 10, 100, 1000 में मौखिक गुणा का अभ्यास	1			111					
5- भिन्न का ज्ञान	11			111					
6- दी हुई संख्याओं का भाग निकालना	1			11					
7- रकमों का लिखना	11			1					
8- रुपये पैसे का जोड़ बाकी	1			11					
9- नाप, तौल के पैमाने का ज्ञान		1							
10- घण्टा, मिनट, सप्ताह तथा महीनों के नाम	11			1					
11- घड़ी और कैलेण्डर देखना	11111			111		111			
12- वर्गाकार, घनाकार एवं आयताकार ठोस की पहचान	11			11					
13- त्रिभुज, आयत एवं वृत्त की पहचान					1	1			

BLUE-PRINT FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN ARITHMETIC

CLASS : V

क्रम संख्या	प्रकरण	प्रश्न रूप / प्रकार
1-	गणित का अधिक अभ्यास	
2-	तीन अंकों की संख्या से भाग	
3-	मीटर प्रणाली का ज्ञान	- विकल्प चयन
4-	दशमलव का जोड़ घटाना	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
5-	10, 100, 1000 और दशमलव संख्या से गुणा	- लघु उत्तरीय प्रश्न
6-	दो या तीन अंक तक शुद्ध मान निकालना ।	- पटरी और परकार की सहायता से रचना करना ।
7-	दशमलव संख्या को भिन्न में बदलना ।	
8-	समान और असमान दर की भिन्नों के सरल प्रश्न ।	
9-	साधारण भिन्न को दशमलव में बदलना ।	
10-	औसत, लाभ-हानि एवं प्रतिशत ।	
11-	रेखाओं का नापना, खींचना, परकार का प्रयोग ।	
12-	आधे समकोण और तिहाई समकोण की पहचान ।	
13-	वृत्त के केन्द्र, परिधि एवं त्रिज्या तथा व्यास की पहचान ।	

उद्देश्य :

1- छात्र तीन अंकों की संख्या से भाग दे सकेंगे ।
2- छात्र मीटर प्रणाली के ज्ञान का प्रयोग व्यावहारिक जीवन में कर सकेंगे ।
3- छात्र दशमलव अंकों के जोड़ तथा घटाने के प्रश्नों को हल कर सकेंगे ।
4- छात्र 10, 100, 1000 और दशमलव संख्या से गुणा कर सकेंगे ।
5- छात्र दशमलव संख्याओं का दो या तीन अंक तक शुद्ध मान निकाल सकेंगे ।
6- छात्र दशमलव संख्याओं को साधारण भिन्न में बदल सकेंगे ।
7- छात्र समान और असमान दर की भिन्नों के सरल प्रश्न कर सकेंगे ।
8- छात्र साधारण भिन्न को दशमलव में बदल सकेंगे ।
9- छात्र प्रतिशत, हानि-लाभ तथा औसत के प्रश्नों को हल कर सकेंगे ।
10- छात्र दी हुई नाप की रेखा खींच सकेंगे तथा परकार का प्रयोग कर सकेंगे ।
11- छात्र पटरी तथा परकार की सहायता से वृत्त तथा कोणों की रचना कर सकेंगे ।

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN ARITHMETIC)

CLASS : V

Objectives/Contents	Knowledge			Understanding		Skill		
	MC	FB	SA	MC	FB	MC	FB	SA
1- गणित का अधिक अभ्यास					11			
2- तीन अंको की संख्या से भाग					1			
3- मीटर प्रणाली का ज्ञान	11				111			
4- दशमलव का जोड़-घटाना					1111			
5- 10, 100, 1000 और दशमलव संख्या से गुणा	1				111			
6- दो या तीन अंक तक शुद्धमान			1					
7- दशमलव संख्या को भिन्न में बदलना			1					
8- समान और असमान दर की भिन्नों के सरल प्रश्न								
9- साधारण भिन्न को दशमलव में बदलना		1	1					
10- औसत, लाभ-हानि तथा प्रतिशत	11				11	1.1		
11- रेखाओं का नापना, खींचना तथा परकार का प्रयोग								
12- आड़ी समकोण की पहचान								
13- वृत्त के केन्द्र परिधि एवं व्यास की पहचान			1		11			1

ITEM ANALYSIS CHART
FOR
ACHIEVEMENT TEST IN ARITHMETIC

CLASS : III

Q.No.	Difficulty Value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1	81.5	0.29	R
2	62.5	0.07	R
3	76.5	0.39	R
4	55.5	0.22	S
5	62.0	0.24	S
6	74.5	0.29	R
7	50.5	0.00	R
8	71.0	0.52	R
9	17.5	0.19	R
10	56.0	0.59	S
11	61.0	0.54	S
12	79.5	0.39	R
13	75.0	0.34	R
14	59.0	0.44	S
15	57.5	0.59	S
16	56.5	0.55	S
17	50.8	0.33	S
18	70.0	0.28	R
19	61.5	0.31	S
20	72.5	0.45	R
21	66.0	0.52	R
22	54.0	0.58	S
23	77.5	0.29	R
24	73.5	0.47	R
25	67.5	0.35	R
26	58.0	0.20	S
27	67.5	0.53	R
28	63.5	0.47	R
29	60.0	0.40	S
30	39.5	0.21	S

31	70.5	0.35	R
32	55.5	0.57	R
33	47.0	0.48	S
34	59.5	0.62	R
35	63.0	0.44	R
36	60.0	0.40	S
37	59.5	0.25	S
38	59.5	0.51	S
38	60.5	0.55	S
38	0.49	0.20	S
39	36.0	0.56	R
40	76.0	0.38	R
41	63.5	0.57	R
42	57.0	0.54	S
43	56.0	0.42	R
44	66.5	0.57	R
45	50.0	0.62	R
46	69.5	0.49	R
47	61.0	0.44	S
48	70.0	0.49	R
49	47.0	0.28	S
50-	53.5	0.57	S
50-	80.0	0.20	R
50-	58.5	0.37	S
50-	84.0	0.20	R
50-	60.0	0.40	S

50 -	76.5	0.21	R
50 -	54.0	0.58	S
50 -	67.5	0.51	R
51 -	71.0	0.13	R
51 -	49.5	0.15	R
51 -	55.5	0.25	R
51 -	34.0	0.51	R
51 -	49.0	0.42	R
51 -	45.0	0.65	R
52	50.9	0.36	S
53	58.6	0.22	S

Total Questions = 53

R = Rejected

S = Selected

APPENDIX - XII

Item Analysis Chart for Achievement TEST in Arithmetic

Class : V

Item No.	Difficulty Value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1 (k)	81.0	0.12	R
(kh)	74.0	0.02	R
2 (k)	90.0	0.15	R
(kh)	58.0	0.32	S
(g)	41.0	0.44	S
3	49.0	0.23	S
4	60.0	0.31	S
5	48.8	0.23	S
6	59.8	0.39	S
7	78.4	0.62	R
8	54.8	0.49	S
9	56.0	0.52	S
10	56.5	0.45	S
11	59.3	0.40	S
12	57.9	0.35	S
13	59.0	0.30	S
14	86.8	0.64	R
15	88.0	0.2	R
16	59.8	0.41	S
17	59.5	0.27	S
18	57.8	0.28	S
19	47.0	0.52	S
20	51.2	0.41	S
21	59.5	0.25	S

22	48.8	0.39	S
23	84.0	0.24	R
24	59.6	0.49	R
25	55.8	0.37	S
26	52.4	0.25	S
27 (k)	69.0	0.07	R
(kh)	57.4	0.41	S
(g)	49.8	0.40	S
28	61.4	0.60	R
29	49.8	0.14	R
30	63.4	0.01	R
31	64.0	0.08	R
32 (k)	50.2	0.34	S
(kh)	66.4	0.16	R
(g)	49.8	0.29	S
(gh)	71.5	0.31	R

Total No. of question = 32

R = Rejected

S = Selected

(17)

उपलब्धि परीक्षण

विषय– गणित

कक्षा—३

नाम ....

विद्यालय का नाम ....

स्थान .... जिला ....

निर्देश :

नीचे दिये गये प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये है। इनमे से सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाओ।

उदाहरण—१ :

१४ का ८ गुना है

(अ) २२

(ब) ११२

(स) ९२

(द) ८४

इस प्रश्न मे १४ का ८ गुना करने पर अर्थात् १४ का पहाडा ८ बार पढने से ११२ आता है। हम देखते है कि अ, ब, स, द इन चार उत्तरो मे से ब के सामने ११२ लिखा हुआ है। अत ब पर सही (√) का चिन्ह लगा दिया गया है।

उदाहरण—२ :

घटाने के इस प्रश्न मे खाली स्थान पर इनमे से कौन-सा अक भरा जायेगा ?

(अ) ८ ९७३६

(ब) २ —६४५८

(स) ६ ———

(द) ७ ३२□८

घटाने पर हम देखते है कि खाली स्थान पर ७ आना चाहिये।इसलिये द पर सही (√) का चिन्ह लगा दिया गया है।

इसी प्रकार के प्रश्न इस प्रश्न-पत्र मे है। सही उत्तरो को चुनकर उन पर सही (√) का चिन्ह लगाना है।

१—संख्या ११ की ७ गुनी है—

(अ) ७०
(ब) ११७
(स) ७७
(द) १७

२—संख्या ९१

(अ) १३ की ७ गुनी है।
(ब) ९ की ६ गुनी है।
(स) १४ की ९ गुनी है।
(द) १५ की ८ गुनी है।

३ - १२ का ९ गुना है —

(अ) १२९
(ब) १२६
(स) १०८
(द) ११२

४—संख्या ११२

(अ) ११ की २ गुनी है।
(ब) १६ की ७ गुनी।
(स) १४ की ३ गुनी है।
(द) १३ की ९ गुनी है।

५—चार लाख, पैंतीस हजार, सात सौ चार, अंको में लिखने पर होगा —

(अ) ४३५७४
(ब) ४३५७०४
(स) ४०३५०६०४
(द) ४३५७००४

६—संख्या ४००३०५ को शब्दों में लिखने पर कौन-सा उत्तर सही है ?

(अ) चार सौ पैंतीस ।

(ब) चालीस हजार तीन सौ पाँच ।

(स) चार लाख तीन सौ पाँच ।

(द) चार लाख तीन हजार पाँच ।

७—दस लाख, तीस हजार, दो सौ तेरह अंकों में लिखने पर होगा—

(अ) १०३०२१३

(ब) १०३०२००१३

(स) १०३०२०१३

(द) १०३००२१३

८—संख्या ७८३००४ शब्दों में है—

(अ) अठत्तर हजार तीन सौ चार ।

(ब) सात लाख तीन सौ चार ।

(स) सात लाख तिरासी हजार चार ।

(द) अठत्तर लाख तीन हजार चार ।

९—दायें हाथ की ओर दिये गये जोड़ के प्रश्न में खाली स्थान में कौन-से अंक भरे जायेंगे ?

(अ) १ और ५

(ब) १५ और ९

(स) ० और ५

(द) ६ और २

```
   ७ ६ ८
 + २ ८ ७
 -------
 १ ☐ ५ ☐
```

१०—खाली स्थान पर इनमें से कौन सा अंक भरा जायेगा ?

(अ) ७

(ब) ८

(स) ०

(द) ६

```
  ३२४५
  ४३१५
  ७२६८
 ------
 १४☐२८
```

११—घटाने के इस प्रश्न में खाली स्थान पर इनमें से कौन सा अंक भरा जायेगा ?

(अ) १

(ब) २

(स) ८

(द) ३

```
   ७५०३
 — १३७८
 ------
   ६☐२५
```

१२ - घटाने के इस प्रश्न मे खाली स्थान पर अंक भरा जायेगा —

(अ) १
(ब) ५
(स) २
(द) ०

  ८३७
— ७८९
[ ]४८

१३ —किसी संख्या को १०० से गुणा करने के लिए संख्या के आगे —

(अ) एक शून्य लगा देते है ।
(ब) दो शून्य लगा देते है ।
(स) शून्य नही लगाते
(द) तीन शून्य लगाते है ।

१४—किसी संख्या के आगे तीन शून्य लगाने पर .. ..

(अ) वह संख्या पहले की तीन गुनी हो जाती है ।
(ब) वह संख्या एक तिहाई रह जाती है ।
(स) वह संख्या सौ गुनी हो जाती है ।
(द) वह एक हजार गुनी हो जाती है ।

१५—४०५००० संख्या, ४०५० की ... .

(अ) सौ गुनी है
(ब) १००० गुनी है
(स) १० गुनी है
(द) १०००० गुनी है ।

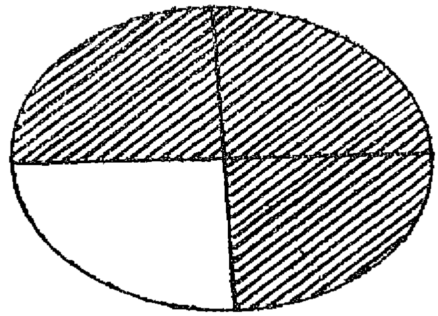
१६ — ४३०२ का १०० गुना है ... ...

(अ) ४३००२
(ब) ४३००२०
(स) ४३०२०००
(द) ४३००२००

१७ — भिन्न $\frac{७}{८}$ का अर्थ है—

(अ) ७ और ८ का योग
(ब) ७ को ८ से भाग देना
(स) ७ मे से ८ घटाना
(द) ८ मे से ७ घटाना ।

१८—रंगीन भा पूरे वृत्त का कौन सा भाग है ?



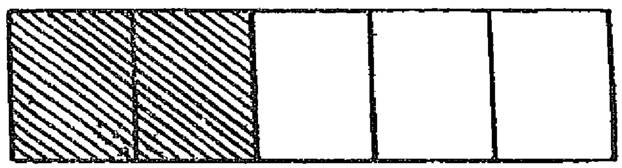
(अ) १/२

(ब) १/८

(स) ३/४

(द) २/३

१९—संगीन भाग पूरे आयत का कौन सा भाग है ?



(अ) १/३

(ब) २/५

(स) १/२

(द) २/३

२०—तीन चौथाई को अंको मे कैसे लिखोगे ?

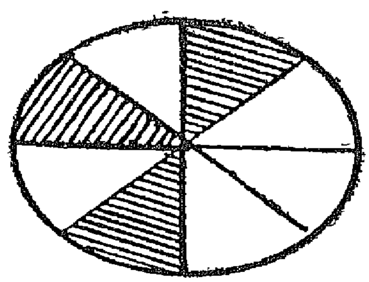
(अ) ४/३

(ब) १/३

(स) १/४

(द) ३/४

२१—रंगीन भाग पूरे वृत्त का कौन-सा भाग है ?



(अ) ३/४

(ब) १/८

(स) ३/८

(स) १/२

२२—भाग देने की क्रिया—

(अ) बार-बार जोड़ने की क्रिया है

(ब) गुणा की क्रिया की उल्टी है

(स) जोड़ने की क्रिया की उल्टी है

(द) घटाने की क्रिया के समान है।

२३—२२५ को १५ से भाग देने का अर्थ है —

(अ) २२५ मे १५ कितनी बार शामिल है

(ब) १५ मे २२५ कितनी बार शामिल है

(स) १५ और २२५ मे क्या अन्तर है

(द) २२५ और १५ मे क्या समानता है ?

२४ —साथ मे दिये गये भाग के प्रश्न मे संख्या ५६

(अ) शेषफल है

(ब) भागफल है

(स) भाजक है

(द) भाज्य है

```
        ५६
   १३)७३८
      ६५
      ८८
      ७८
      १०
```

२५ – अठारह रुपये छब्बीस पैसे को अकों मे लिखा जाता है —

(अ) १८२६ रुपये

(ब) १८ २६ रुपये

(स) १८.२६ पैसे

(द) १८२६

२६ — २०.२४ रुपये का अर्थ है —

(अ) २०२ रुपये ४ पैसे

(ब) २० रुपये २४ पैसे

(स) २ रुपये २४ पैसे

(द) २०२४ रुपये ० पैसे

२७ एक रुपये का मूल्य

(अ) ६४ नये पैसे होता है

(ब) २२० नये पैसे होता है

(स) १०० नये पैसे होता है

(द) १००० नये पैसे होता है ।

२८ – ३ रुपये ६५ पैसे तथा २ रुपये ४० पैसे का योगफल

(अ) ५ रुपये ५ पैसे होता है

(ब) ५ रुपये ५० पैसे होता है

(स) ६ रुपये ५० पैसे होता है

(द) ६ रुपये ५ पैसे होता है ।

२९—एक लड़के के पास ५ रुपये ३२ पैसे थे, उससे ३ रुपये ४० पैसे खो गये तो शेष

(अ) २ रुपये ८ पैसे बचे

(ब) २ रुपये ८० पैसे बचे

(स) १ रुपया ९८ पैसे बचे

(द) १ रुपया ९२ पैसे बचे।

३०—पप्पू, मौनी और मीनू के पास क्रमशः ८३ पैसे, ४५ पैसे तथा ७७ पैसे है। तीनों के पास कुल कितन धन है?

(अ) २ रुपये १५ पैसे

(ब) १ रुपया ६५ पैसे

(स) २ रुपये ५ पैसे

(द) १ रुपया १५ पैसे।

३१—एक घण्टे में

(अ) ६४ मिनट होते है

(ब) १०० मिनट होते है

(स) २४ मिनट होते है

(द) ६० मिनट होते है।

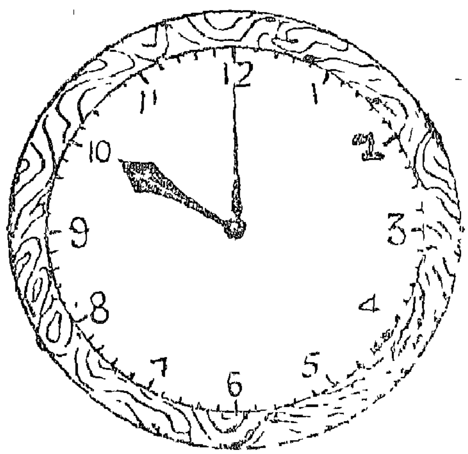
३२—घड़ी में इस समय

(अ) १० बजे है

(ब) १० बजकर १० मिनट है

(स) १२ बजे है

(द) ११ बजकर ५० मिनट है।



३३ १२५ मिनट का समय

(अ) एक घण्टा २५ मिनट के बराबर होता है

(ब) १२ घण्टे ५ मिनट के बराबर होता है

(स) २ घण्टे ५ मिनट के बराबर होता है।

(द) २ घण्टे १५ मिनट के बराबर होता है।

३४—२ घण्टे ३५ मिनट में

(अ) १५५ मिनट होते हैं

(ब) २३५ मिनट होते हैं

(स) ८३ मिनट होते है

(द) ९५ मिनट होते हैं।

३५ - इस समय १० बजकर ३० मिनट हुए है, २ घण्टे बाद कितना बजेगा ?

(अ) १० बजकर ३२ मिनट

(ब) २ बजकर २० मिनट

(स) १२ बजकर ३० मिनट

(द) ३ बजकर १२ मिनट।

३६ - इस समय ११ बजकर ५५ मिनट है, २ घण्टे ४५ मिनट बाद क्या समय होगा ?

(अ) २ बजेगे

(ब) २ बजकर ४० मिनट होंगे

(स) २ बजकर ५० मिनट होंगे

(द) ३ बजेगे।

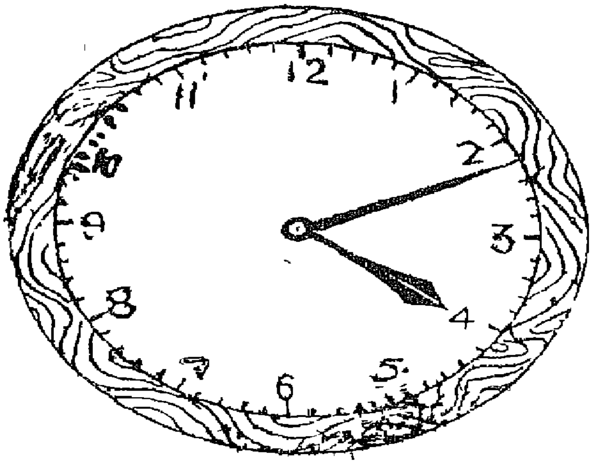
३७ घड़ी में इस समय —

(अ) ४ बजकर १० मिनट है

(ब) २ बजकर ४ मिनट है

(स) ४ बजकर १२ मिनट है

(द) २ बजकर २० मिनट है।



३८—नीचे जनवरी माह का कलेण्डर दिया गया है। इसे पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दो—

जनवरी

रवि	सोम	मगल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि
		१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२७	२८	२९	३०	३१		

(क) १७ तारीख को होगा —

(अ) रविवार

(ब) शनिवार

(स) बृहस्पतिबार

(द) बुधवार।

(ख) जनवरी के महीने मे —

(अ) २६ दिन होते है

(ब) ३१ दिन होते है

(स) २७ दिन होते है

(द) ३० दिन होते है।

(ग) द्वितीय शनिवार होगा—

(अ) २ तारीख को

(ब) ७ तारीख को

(स) १६ तारीख को

(द) १२ तारीख को।

३९—एक सप्ताह मे कुल—

(अ) २४ दिन होते है

(ब) ८ दिन होते है

(स) ७ दिन होते हैं

(द) ३० दिन होते हैं।

४०—मंगलवार के बाद आता है—

(अ) सोमवार

(ब) बुधवार

(स) रविवार

(द) शनिवार।

४१—शनिवार से पहले आता है—

(अ) रविवार

(ब) सोमवार

(स) शुक्रवार

(द) मंगलवार।

४२—यदि किसी महीने में ८ तारीख को रविवार हो तो अगले रविवार की तारीख होगी—

(अ) १६

(ब) १५

(स) ३०

(द) १८

४३—यदि १० तारीख को मंगलवार हो तो २१ तारीख को होगा—

(अ) रविवार

(ब) शनिवार

(स) मंगलवार

(द) बुधवार।

४४—जनवरी मे चार सप्ताह से—

(अ) २ दिन अधिक होते है

(ब) १ दिन अधिक होता है

(स) ३ दिन अधिक होते है

(द) ४ दिन अधिक होते हैं।

४५—एक महीने मे—

(अ) ७ सप्ताह होते है

(ब) ४ सप्ताह होते है

(स) ३ सप्ताह होते है

(द) ५ सप्ताह होते है।

४६—वर्गाकार आकृति की—

(अ) आमने-सामने की भुजाएँ असमान होती है
(ब) चारो भुजायें समान होती हैं
(स) भुजाओ मे कोई सम्बन्ध नही होता
(द) चारो भुजायें असमान होती हैं।

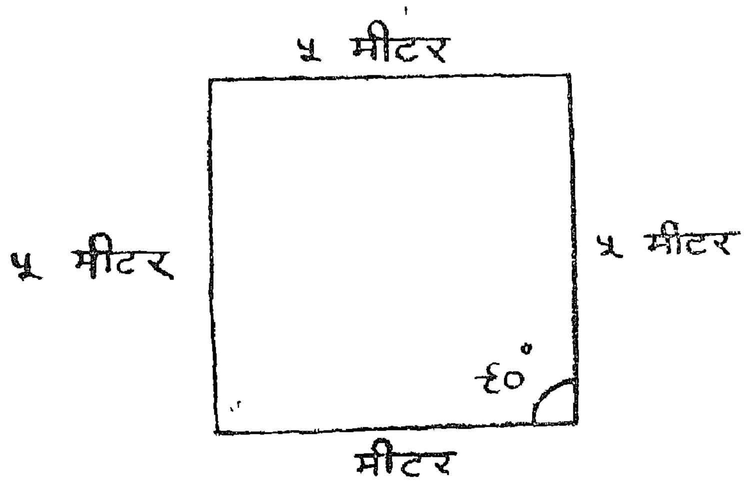
४७—दी गई आकृति—

(अ) वर्ग है

(ब) आयत है

(स) त्रिभुज है

(द) वृत्त है।



४८—वर्गाकार आकृति में—

(अ) केवल एक कोण ९०° का होता है
(ब) केवल दो कोण ९०° के होते है
(स) चारो कोण ही ९०° के होते है
(द) कोणो मे कोई सम्बन्ध नही होता।

४९—वर्ग तथा आयत मे यह समानता है कि—

(अ) दोनो एक जैसी आकृतियाँ है
(ब) दोनो की भुजाये समान है
(स) दोनो के चारो कोण ९० अंश के होते है
(द) दोनो एक ही समतल मे होते है।

५०—निम्न प्रश्नो मे खाली स्थानों को भरो—

(क)
```
  ७५८
+ ३४६
------
 ११□४
```

(ख) ४२५
५३८५
+ २३३
६□४२

(ग) ५३६
− ३□४
१४२

(घ) ९३०८
− ७२१
८□८७

(च) ३२५
× १४
□५५०

(छ) ४३३५
× १५
६५०□५

(ज) ३ ७ ६
९) ३ २ ४
२□
५ ४
५ ४
×

(झ) ९□
८) ७ ५ ६
७ २
३ ६
३ २
× ४

५१—पैमाने के इन प्रश्नो मे खाली स्थानो को भरो—

(क) एक मीटर = ... से० मी०

(ख) ५ मीटर = ... से० मी०

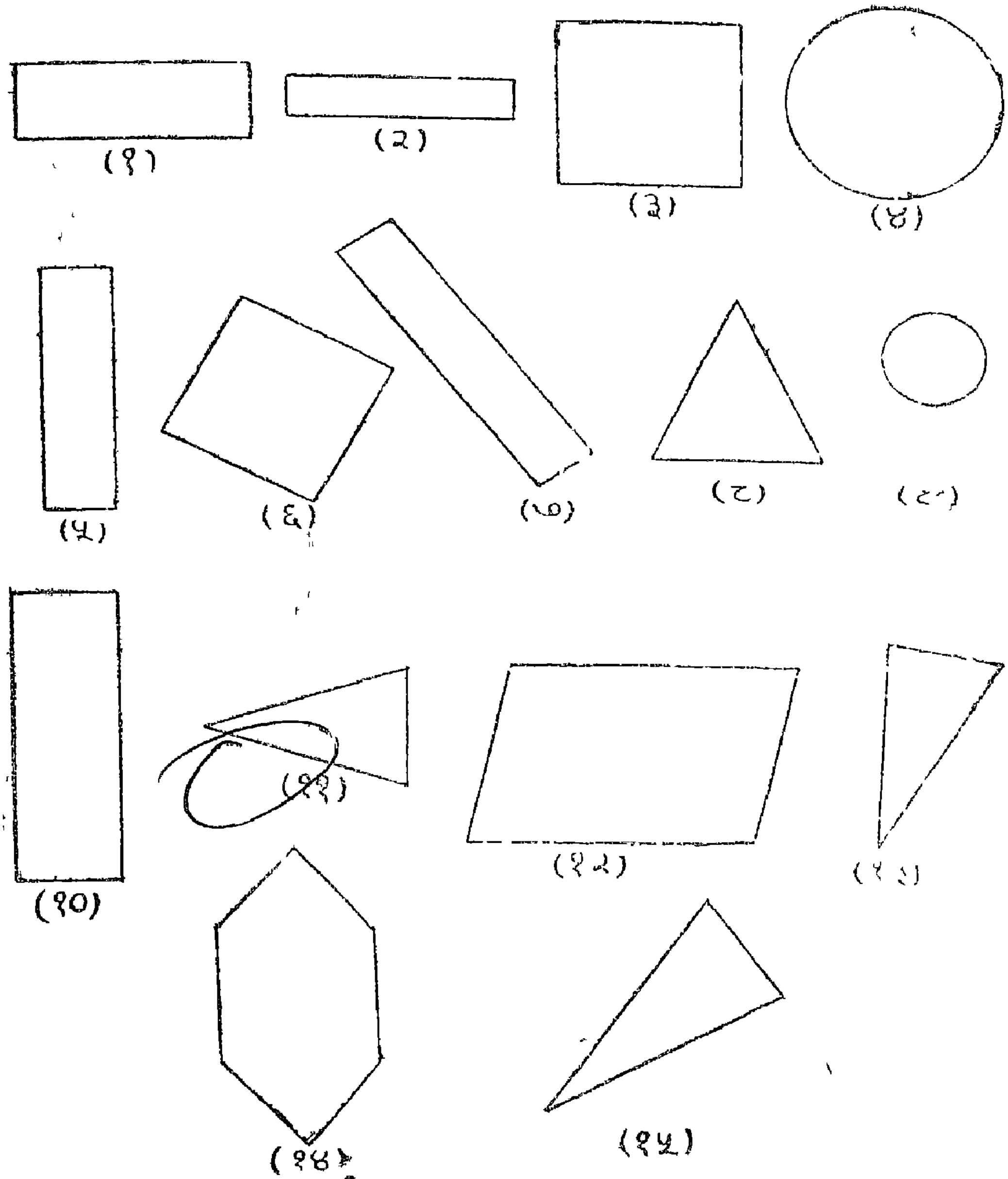
(ग) ४०० से० मी० = ... मीटर

(घ) ४८५ से० मी० = ... मी० ...... से० मी०

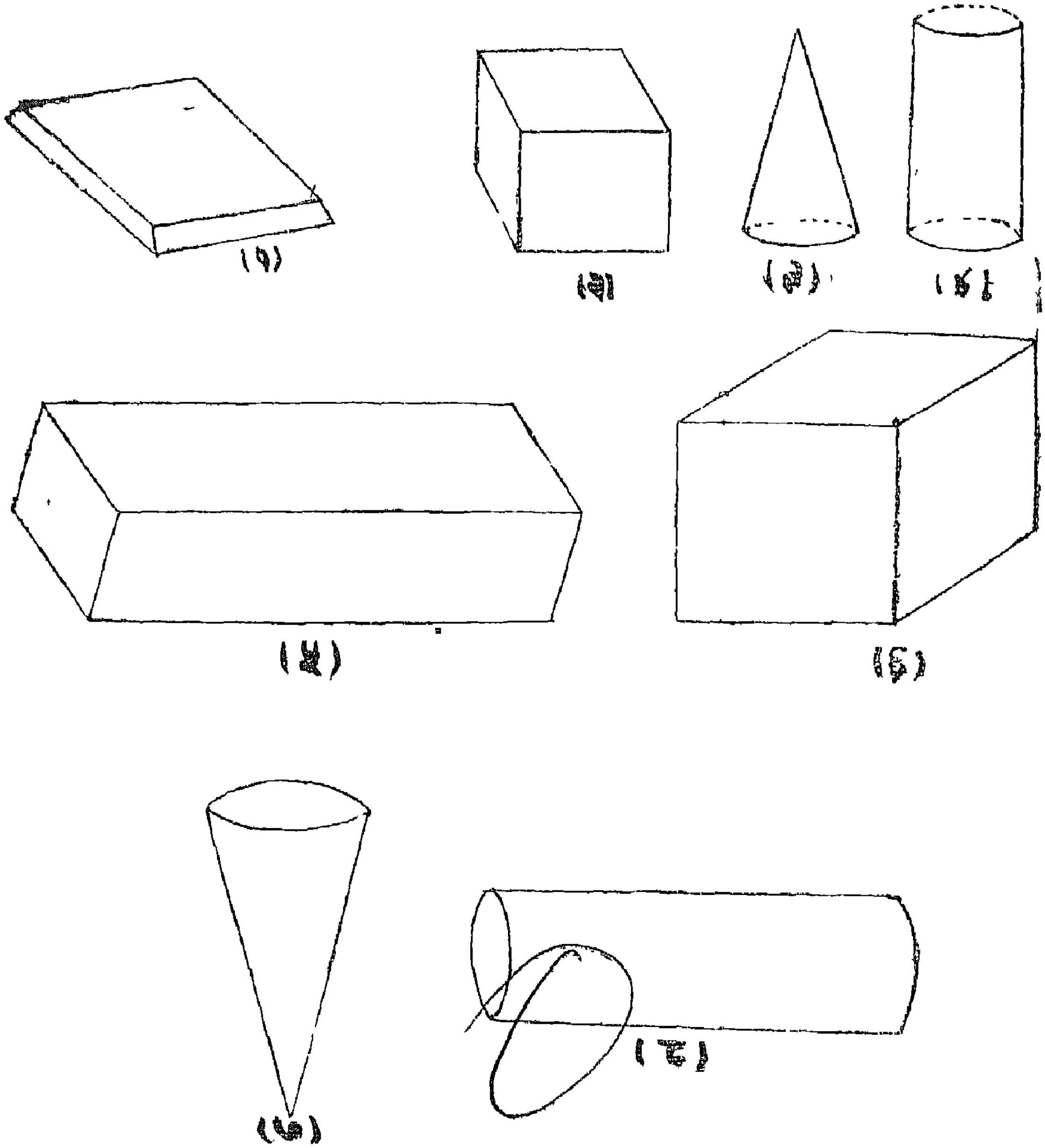
(च) ५ कि० ग्रा० = ... ग्राम

(छ) १८२५ ग्राम = ... कि० ग्रा० ...... ग्राम

५२—निम्न आकृतियो में जो वर्ग, आयत, त्रिभुज तथा वृत्त हों उनपर उनका नाम लिख दे—



५३ – निम्नलिखित मे से घनाकार तथा आयताकार ठोस के नम्बर नीचे रिक्त स्थान मे भरो––



नम्बर

घनाकार ....

नम्बर

आयताकार ....

उपलब्धि परीक्षण

विषय — गणित

कक्षा — ३

नाम ....

विद्यालय का नाम ....

स्थान .... जिला ....

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के चार-चार उत्तर दिये गये है। इनमें से जो उत्तर सही हो उसपर सही (✓) का निशान लगाओ।

उदाहरण १—

१४ का ८ गुना है

(अ) २२

(ब) ११२

(स) ९२

(द) ८४

इस प्रश्न मे १४ का ८ गुना करने पर अर्थात् १४ का पहाड़ा ८ बार पढ़ने से ११२ आता है। हम देखते है कि अ ब, स, द इन चार उत्तरो मे से ब के सामने ११२ लिखा हुआ है। अतः ब पर सही (✓) का चिह्न लगा दिया गया है।

उदाहरण २ –

घटाने के इस प्रश्न मे खाली स्थान पर इनमे से कौन-सा अक भरा जायेगा ?

(अ) ८   ९७३६

(ब) २   – ६४५८

(स) ६

(द) ७   ३२☐८

घटाने पर हम देखते है कि खाली स्थान पर ७ आना चाहिये। इसलिये द पर सही (✓) का चिह्न लगा दिया गया है।

इसी प्रकार के प्रश्न इस प्रश्न-पत्र मे है। सही उत्तरों को चुनकर उन पर सही (✓) का चिह्न लगाओ।

[अब पन्ना उलटो और प्रश्न करना शुरू करो]

१ संख्या ११२

(अ) ११ की २ गुनी है
(ब) १६ की ७ गुनी है
(स) १४ की ८ गुनी है
(द) १३ की ९ गुनी है।

२ चार लाख, पैंतीस हजार, सात सौ चार अंको मे लिखने पर होगा —

(अ) ४३५७४
(ब) ४३५७०४
(स) ४०३५०५०४
(द) ४३५७००४

३. खाली स्थान पर इनमे से कौन सा अंक भरा जायेगा ?

(अ) ७   ३२४५
(ब) ८   ४३१५
(स) ०   ७२६८
(द) ६   १४□२८

४. घटाने के इस प्रश्न मे खाली स्थान पर इनमे से कौन सा अंक भरा जायेगा ?

(अ) १   ७५०३
(ब) २   —१३७८
(स) ८   ६□२५
(द) ३

५. किसी संख्या के आगे तीन शून्य लगाने पर ....

(अ) वह संख्या पहले की तीन गुनी हो जाती है।
(ब) वह संख्या एक तिहाई रह जाती है।
(स) वह संख्या सौ गुनी हो जाती है।
(द) वह एक हजार गुनी हो जाती है।

६. ४०५००० संख्या, ४०५० की ... ...

(अ) १०० गुनी है

(ब) १००० गुनी है

(स) १० गुनी है

(द) १०००० गुनी है।

७. ४३०२ का १०० गुना है ... .

(अ) ४३००२

(ब) ४३००२०

(स) ४३०२०००

(द) ४३०२००

८. भिन्न ७/८ का अर्थ है—

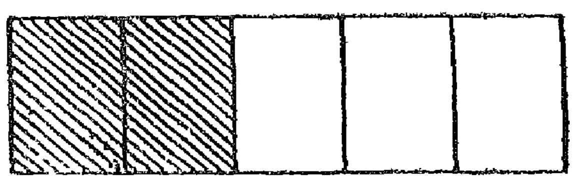
(अ) ७ और ८ का योग

(ब) ७ को ८ से भाग देना

(स) ७ में से ८ घटाना

(द) ८ में से ७ घटाना।

९. रंगीन भाग पूरे आयत का कौन सा भाग है ?



(अ) १/३

(ब) २/५

(स) १/२

(द) २/३

१०. भाग देने की क्रिया—

(अ) बार-बार जोडने की क्रिया है

(ब) गुणा की क्रिया की उल्टी है

(स) जोड़ने की क्रिया की उल्टी है

(द) घटाने की क्रिया के समान है।

११. २०.२४ रुपये का अर्थ है —

(अ) २०२ रुपये ४ पैसे

(ब) २० रुपये २४ पैसे

(स) २ रुपये २४ पैसे

(द) २०२४ रुपये ० पैसे

१२. एक लडके पास ५ रुपये ३२ पैसे थे। उससे ३ रुपये ४० पैसे खो गये तो शेष

(अ) २ रुपये ८ पैसे बचे

(ब) २ रुपये ८० पैसे बचे

(स) १ रुपया ६८ पैसे बचे

(द) १ रुपया ९२ पैसे बचे।

१३. पप्पू, मौनी और मीनू के पास क्रमश ८३ पैसे, ४५ पैसे तथा ७७ पैसे है। तीनो के पास कुल कितना धन है ?

(अ) २ रुपये १५ पैसे

(ब) १ रुपया ६५ पैसे

(स) २ रुपया ५ पैसे

(द) १ रुपया १५ पैसे।

१४ १२५ मिनट का समय

(अ) एक घण्टा २५ मिनट के बराबर होता है

(ब) १२ घण्टे ५ मिनट के बराबर होता है

(स) २ घण्टे ५ मिनट के बराबर होता है

(द) २ घण्टे १५ मिनट के बराबर होता है।

१५. इस समय ११ बजकर ५५ मिनट है, २ घण्टे ४५ मिनट बाद क्या समय होगा ?

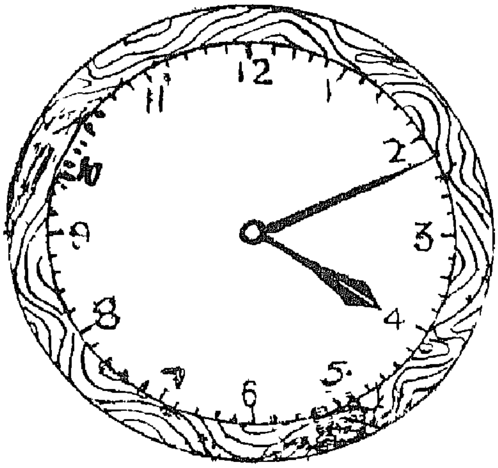
(अ) २ बजेंगे

(ब) २ बजकर ४० मिनट होंगे

(स) २ बजकर ५० मिनट होंगे

(द) ३ बजेंगे।

१६. घडी मे इस समय —



(अ) ४ बजकर
१० मिनट है

(ब) २ बजकर
४ मिनट है

(स) ४ बजकर
११ मिनट है

(द) २ बजकर
२० मिनट है ।

१ . नीचे जनवरी माह का कलेण्डर दिया गया है । इसे पढकर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दो —

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
		१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२७	२८	२९	३०	३१		

(क) १७ तारीख को होगा —

(अ) रविवार
(ब) शनिवार
(स) बृहस्पतिवार
(द) बुधवार ।

(ख) जनवरी के महीने में—

(अ) २६ दिन होते है
(ब) ३१ दिन होते है
(स) २७ दिन होते हैं
(द) ३० दिन होते है ।

(ग) द्वितीय शनिवार होगा—

(अ) २ तारीख को

(ब) ७ तारीख को

(स) १६ तारीख को

(द) १२ तारीख को ।

१८. यदि किसी महीने मे ८ तारीख को रविवार हो तो अगले रविवार की तारीख होगी—

(अ) १६

(ब) १५

(स) ३०

(द) १८

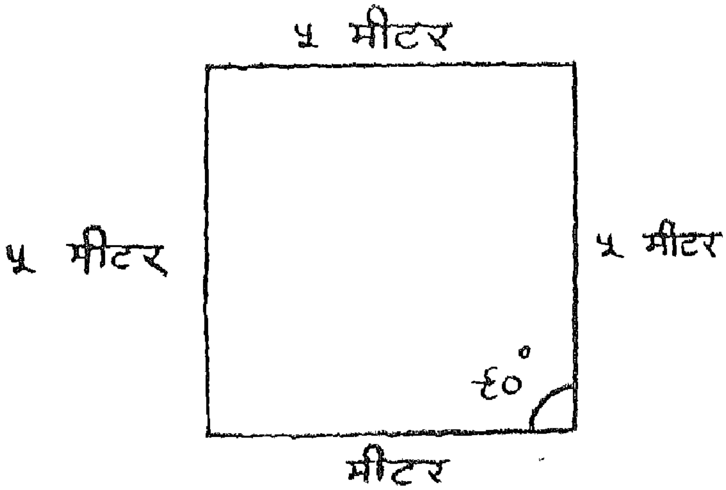
१९. दी गई आकृति —

(अ) वर्ग है

(ब) आयत है

(स) त्रिभुज है

(द) वृत्त है ।



२०. वर्ग तथा आयत मे यह समानता है कि --

(अ) दोनो एक जैसी आकृतियाँ होती है

(ब) दोनो की भुजाये समान होती है

(स) दोनो के चारो कोण ९० अंश के होते है

(द) दोनो एक ही समतल मे होते है ।

२१. निम्न प्रश्नो में खाली स्थानो को भरो—

(क)

```
  ७५८
+ २४६
------
 ११□४
```

(ख)

```
  ५३६
− ३□४
------
  १४२
```

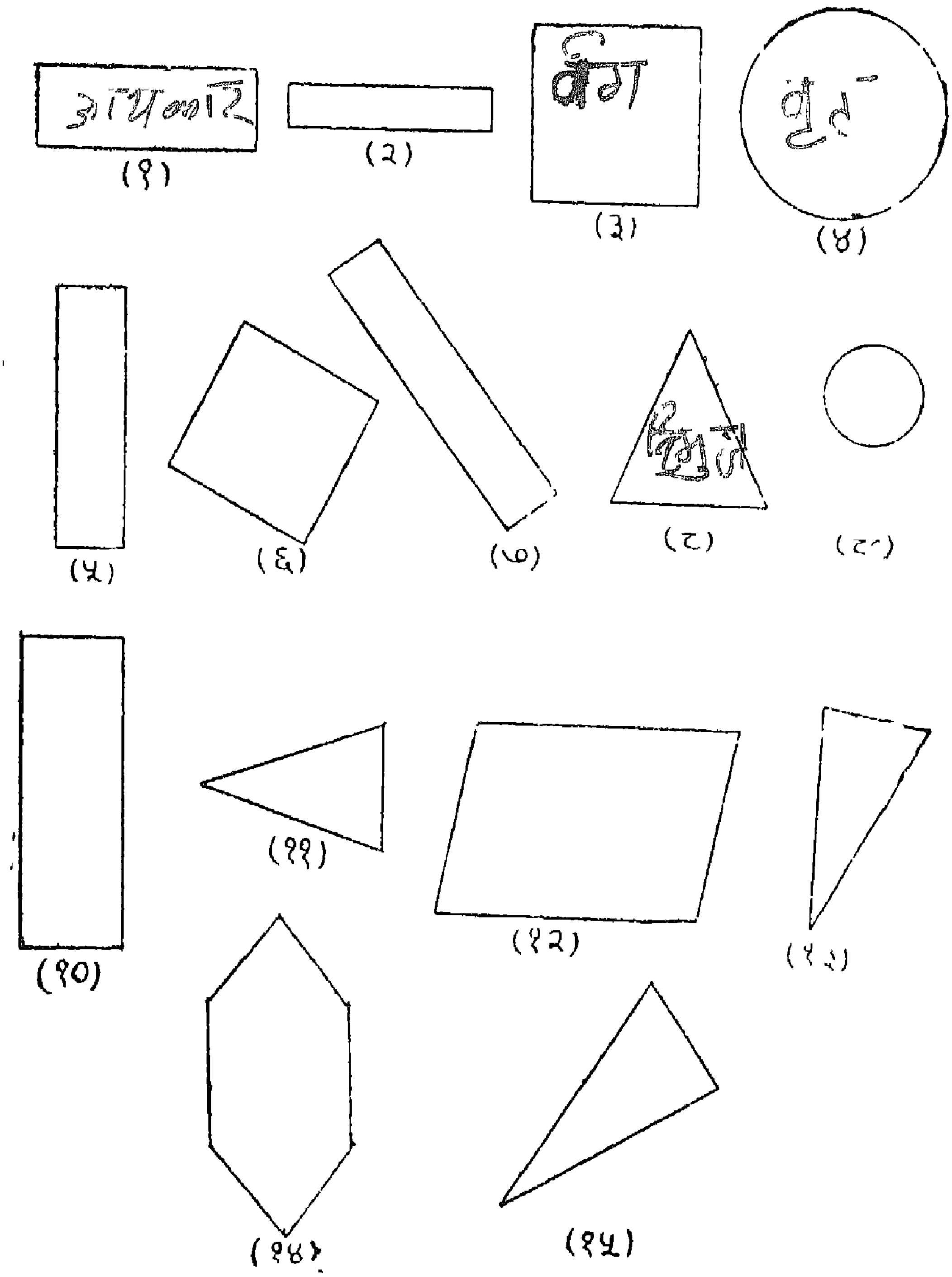
(ग)

```
  ३२५
× १४
------
 □५५०
```

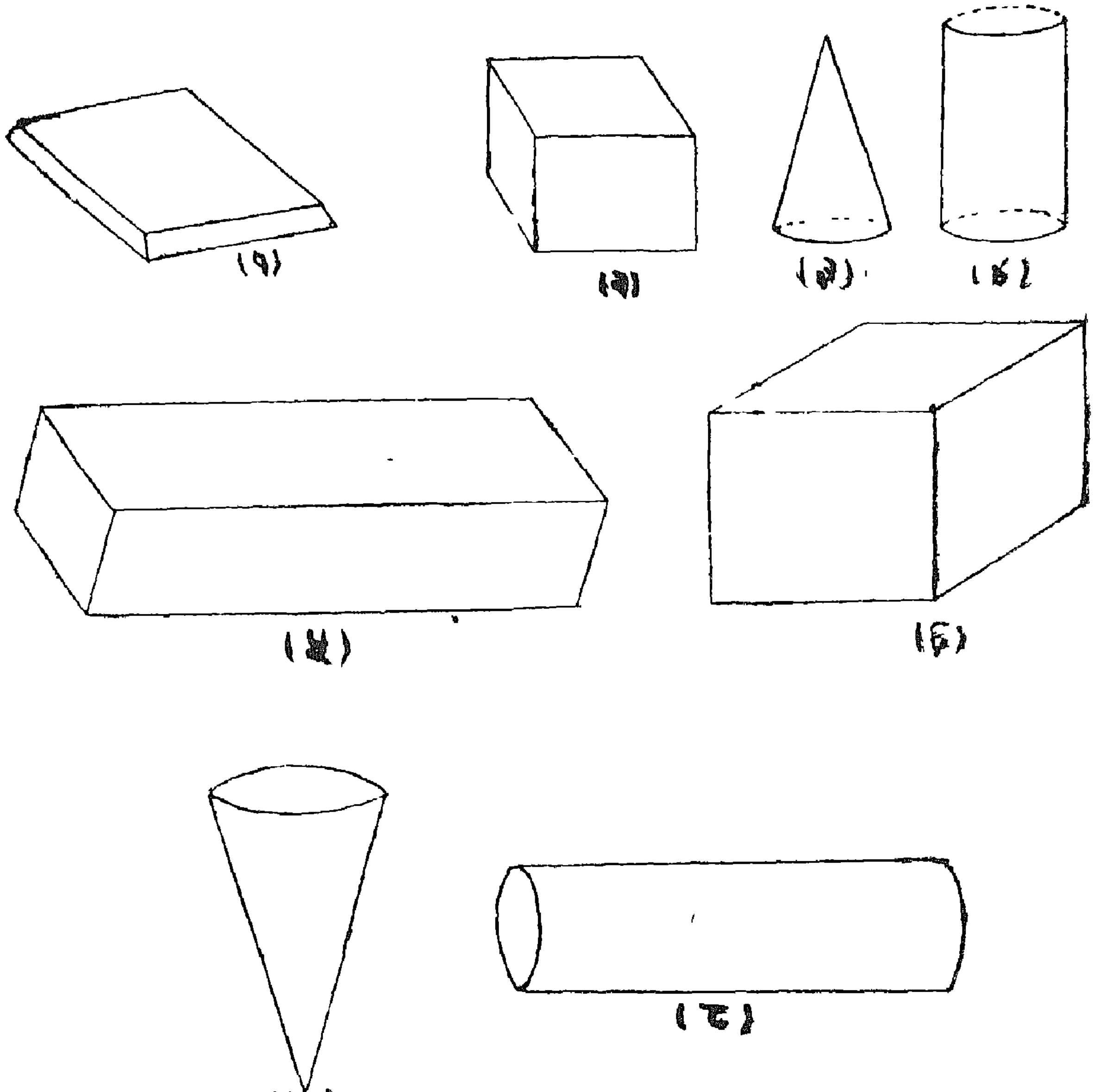
(घ)

```
     ३ ७ ६
    -------
९)  ३ २ ४
    २ □
    -----
    ५ ४
    ५ ४
    -----
     ×
```

२२. निम्न आकृतियो मे जो वर्ग, आयत, त्रिभुज तथा वृत्त हो उनपर उनका नाम लिख दो—



३. निम्नलिखित में से घनाकार तथा आयातकार ठोस के नम्बर नीचे खाली स्थान मे भरो -



नम्बर

घनाकार ... ... 2 .. ..

नम्बर

आयताकार . ... 2 ... ...

उपलब्धि परीक्षण

विषय—गणित

कक्षा—५

नाम .... कुमारी कुसुम सिंह ....

विद्यालय का नाम .... जू० हा० वि० अमरपुर [illegible] ....

स्थान .... जौनपुर कला .... जिला .... जौनपुर ....

निर्देश :

१—इन संख्या क्रमों में रिक्त स्थानो को भरो :

(क) १०,१५,२०,[२५],३०,३५,४०,[४५],५०,५५

(ख) १००,९३,[८६],७९,७२,६५,[५८],५१,४४

२—(क)

५	७	१०
१५	२१	[३०]

(ख)

२५	७०	१००
५	१४	[२०]

(ग)

२५	१६९	३२१५
२५	[१६९]	३२१५

३—इन भाग के प्रश्नो में खाली स्थानो मे सही अंक भरो :

(क) ४२५)६२८७(१५
४२५
२१३७
२१२५
× × [ ]२

(ख) २३१)१५५७८(६[ ]
१३८६
१७१८
१६१७
१०१

(ग) ३८४)१६१३८(४२
१५३६
७७[ ]
७६८
१०

(घ) २६४)६०७८(२३
५२८
७९८
७[ ]२
× ६

(च) २०८)१४५६६१(७०[ ]
१४५६
६१

४—इन भिन्न के प्रश्नो में खाली स्थानो में सही अंक भरो :

(क) $\frac{३}{४} = \frac{[\ ]}{२०}$

(ख) $\frac{१}{५} + \frac{३}{५} = \frac{[\ ]}{५}$

(ग) $\frac{१}{२} + \frac{१}{३} = \frac{३ + २}{[\ ]}$

(घ) $\frac{२}{३} - \frac{२}{५} = \frac{\square - ६}{१५}$

(च) $२\frac{५}{८} + १\frac{५}{८} = \frac{\square}{८}$

५—१०० से०मी० का मान बराबर होता है—

(अ) १ मीटर

(ब) १० मीटर

(स) १०० मीटर

(द) ०.१ मीटर

६—१ लीटर का मान बराबर होता है—

(अ) १० मिलीलीटर

(ब) १०० मिलीलीटर

(स) १०००० मिलीलीटर

(द) १००० मिलीलीटर।

७—१७ मीटर, ७० डेसी मी० तथा ५५ से०मी० का मान से०मी० में होगा—

(अ) १७७५ से० मी०

(ब) १७७७५ से० मी०

(स) १८२५ से० मी०

(द) १८५५ से० मी०

८—२० कुन्तल एवं २५ कि० ग्रा० का मान कि० ग्रा० में होगा—

(अ) २०२५ कि० ग्राम०

(ब) २२५० कि० ग्रा०

(स) २००२५ कि० ग्रा०

(द) २२५०० कि० ग्रा०

९—५७६५ मिली ली० का मान लीटर में होगा—

(अ) ०·५७६५ लीटर

(ब) ५७६·५ लीटर

(स) ५७·६५ लीटर

(द) ५·७६५ लीटर

१०—३·५४३ + १·२४६ का मान है...

(अ) १६·००३
(ब) ४·७८९
(स) १६०·०३
(द) १५·५८९

११—·०१२ + १·१२ + १०·२ का मान है—

(अ) ११·२३३
(ब) १०·२१३
(स) ११·३३२
(द) ११·०३३

१२—०·१११ + १·११ + ११·१ का मान है—

(अ) ११·१२३
(ब) १२·३३१
(स) ११·३२१
(द) १२·३२१

१३—१·३२१ – ०·२३१ का मान है—

(अ) १·५५२
(ब) १·०९
(स) ०·००९
(द) ०·५५२

१४—१०·१०१ – १·०१०१ का मान है—

(अ) ९·०९०३
(ब) ·९०९०
(स) १·००००
(द) ९·११११

१५—किसी दशमलव संख्या को १०० से गुणा करने पर दशमलव बिन्दु—

(अ) दो स्थान दाहिनी ओर हट जाता है
(ब) दो स्थान बाये ओर हट जाता है
(स) एक स्थान दाहिनी ओर, हट जाता है
(द) एक स्थान बायें ओर हट जाता है।

१६—२·०१३६ × १०० का मान होगा—

(अ) २० १३६

(ब) २०१·३६

(स) २०१३·६

(द) २०१३६

१७—०·००९ × १००० का मान होगा—

(अ) ०·०९

(ब) ०·९०

(स) ९०·०

(द) ९·०

१८—संख्या ५, संख्या ·५० की—

(अ) ०·५ गुनी है।

(ब) १० गुनी है।

(स) १/१० गुनी है।

(द) १०० गुनी है।

१९—निम्नलिखित संख्याओं का शुद्ध मान दशमलव के २ स्थानो तक निकालो —

(क) ४·१२६ ( )

(ख) १५·२०३६ ( )

(ग) १३·८७४ ( )

(घ) २६१·८५४९ ( )

(च) ११५·०८५४ ( )

२०—निम्नलिखित दशमलव संख्याओ को साधारण भिन्न में बदलो—

(क) ०·३७ ( )

(ख) ०·७ ( )

(ग) ०·१०३ ( )

(घ) ५·३१ ( )

(च) ७·७२३ ( )

२१ –निम्नलिखित भिन्नों को दसमलव में बदलो—

(क) २/५

(ख) २/८

(ग) ५/८

(घ) ७/८

(च) १३/२०

२२—४०, ४५ तथा ४७ का औसत होगा —

(अ) ४५

(ब) ४४

(स) १३२

(द) ३९६

२३—यदि ५ संख्याओं का औसत ३५ हो तो उन संख्याओ का योगफल होगा —

(अ) १८०

(ब) १००

(स) १७५

(द) १५०

२४—जितने मूल्य में कोई वस्तु खरीदी जाती है उसे—

(अ) लाभ कहते है।

(ब) विक्रय मूल्य कहते है।

(स) क्रय मूल्य कहते है।

(द) हानि कहते है।

२५—लाभ बराबर होता है—

(अ) क्रय मूल्य – विक्रय मूल्य

(ब) विक्रय मूल्य + क्रय मूल्य

(स) $\frac{\text{विक्रय मूल्य}}{\text{क्रय मूल्य}}$

(द) विक्रय मूल्य – क्रय मूल्य

२६—किसी वस्तु को १७५ रुपये में खरीदकर २१० रुपये मे बेचने पर—

(अ) ३५ रुपये की हानि होगी

(ब) २१० रुपये का लाभ होगा

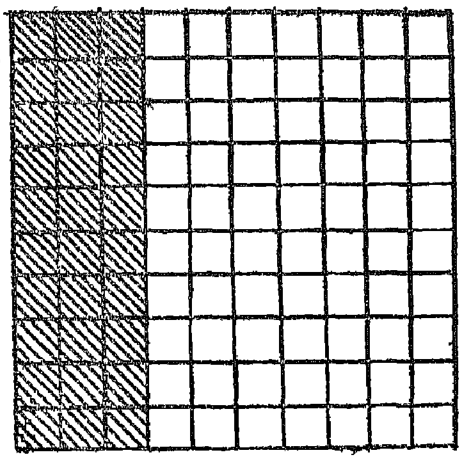
(स) ३५ रुपये का लाभ होगा

(द) लाभ या हानि कुछ नही होगी।

२७—निम्नलिखित चित्रो मे छायांकित भाग पूरे के कितने प्रतिशत है

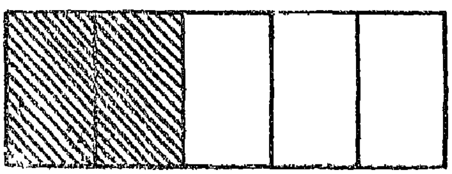
(अपने उत्तर चित्र के सामने दिये गये बाक्स मे लिखो)

(क)



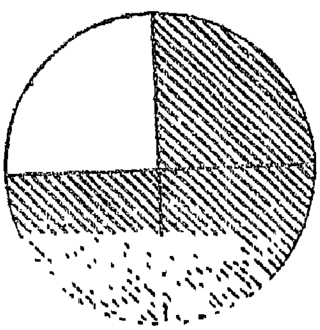
उत्तर

(ख)



उत्तर

(ग)



उत्तर

२८— ७०० रुपये का १२ प्रतिशत कितना रुपया होगा ?

२९ - वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खींची गई रेखा को—

(अ) व्यास कहते है

(ब) त्रिज्या कहते हैं

(स) लम्ब कहते है

(द) स्पर्श रेखा कहते हैं।

३०—एक पहिये की परिधि १० मीटर है। २ चक्कर लगाने पर वह कितनी दूरी तय करेगी ?

२० मी०

३१—किसी वृत्त का व्यास ३५ से० मी० है तो उसकी त्रिज्या कितनी होगी ?

१७½

३२—पटरी और परकार की सहायता से निम्न रचनायें करो—

(अ) ३ से० मी० अर्द्धव्यास का एक वृत्त खींचो

(ब) ४ से० मी० व्यास का एक वृत्त खींचो

(स) ६०° का कोण बनाओ

(द) ४५° का कोण बनाओ।

उपलब्धि परीक्षा

विषय—गणित

कक्षा—५

नाम .... [illegible] ....

विद्यालय का नाम .... [illegible] ....

स्थान .... [illegible] .... जिला .... [illegible] ....

निर्देश :

१. इन संख्या क्रमो मे खाला स्थानो को भरो :

(क)

२५	७०	१००
५	१४	□

(ख)

२५	१६९	३२१५
०.०२५	□	३.२१५

२. इन भाग के प्रश्नों मे खाली स्थान पर सही अंक भरो—

(क) २३१)१५५७८(६□

    १३८६
    ———
    १७१८
    १६१६
    ———
    १०१

३. इन भिन्न के प्रश्नो मे खाली स्थानों पर सही अंक भरो—

(क) $\frac{३}{४} = \frac{\square}{२०}$

(ख) $\frac{१}{२} + \frac{१}{३} = \frac{३+२}{\square}$

(ग) $\frac{२}{३} - \frac{२}{५} = \frac{१०-६}{१५}$

(घ) $२\frac{५}{८} + १\frac{५}{८} =$ [illegible]

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के साथ-साथ उत्तर दिये सही हो उस पर सही (✓) का निशान लगा दें।

४. १०० से० मी० का मान बराबर होता है—

(अ) १ मीटर ✓

(ब) १० मीटर

(स) १०० मीटर

(द) ०.१ मीटर

५. १ लीटर का मान बराबर होता है —

(अ) १० मिलीलीटर

(ब) १०० मिलीलीटर

(स) १०००० मिलीलीटर

(द) १००० मिलीलीटर। ✓

६. २० कुन्तल एवं २५ कि० ग्रा० का मान कि० ग्रा० में होगा—

(अ) २०२[illegible] कि० ग्राम०

(ब) २०५० कि० ग्रा०

(स) २००२५ कि० ग्रा० ✓

(द) [illegible] कि० ग्रा०

७. ५७२५ मिली० लि० का मान लीटर में होगा—

(अ) ०.५७२[illegible] लीटर

(ब) [illegible] लीटर

(स) ५७.२५ लीटर ✓

(द) [illegible] लीटर

८. ३·५४३ + १२·४६ का मान है ··

(अ) ५६.००३

(ब) ४·७८९

(स) १६० ०३

(द) १५·५८९

९. ०·०१२ + १·११ + १०·२ का मान है—

(अ) ११·३२२

(ब) १०·२१३

(स) ११·३२२

(द) ११·०३३

१०. ०·१११ + १ ११ + ११·१ का मान है—

(अ) ११ १२३

(ब) १२ २३१

(स) ११·३२१

(द) १२ ३२१

११. १·३२१ – ०·२३१ का मान है—

(अ) १ ५५२

(ब) १·०९

(स) ० ००९

(द) ०·५५२

१२. २·०१३६ × १०० का मान होगा

(अ) २०·१३६

(ब) २०१·३६

(स) २०१३ ६

(द) २०१३६

१३. ०·००९ × १००० का मान होगा–

(अ) ०·०९

(ब) ०·९०

(स) ९०·०

(द) ९०

१४. संख्या ५, संख्या ·५० की–

(अ) ०·५ गुनी है।

(ब) १० गुनी है।

(स) १/१० गुनी है।

(द) १०० गुनी है।

१५. निम्नलिखित संख्याओ का शुद्ध मान दशमलव के २ स्थानो तक निकालो–

(क) ४.१२६ ( )

(ख) १५ २०३६ ( )

(ग) १३ ४७४ ( )

(घ) २६१ ८५४९ ( )

(च) ११५·०८५४ ( )

१६. निम्नलिखित दशमलव संख्याओ को साधारण भिन्न में बदलो–

(क) ०·३७ ( )

(ख) ०·७ ( )

(ग) ०·१०३ ( )

(घ) ५·३१ ( )

(च) ७·७२३ ( )

१७. निम्नलिखित भिन्नों को दशमलव मे बदलो–

(क) २/५ ( )

(ख) २/८ ( )

(ग) ५/८ ( )

(घ) ७/८ ( )

(च) १३/२० ( )

१८. ४०, ४५ तथा ८७ का औसत होगा -

(अ) ४५

(ब) ४४

(स) ५७

(द) १९६

१९. लाभ बराबर होता है-

(अ) क्रय मूल्य — विक्रय मूल्य

(ब) विक्रय मूल्य + क्रय मूल्य

(स) $\frac{\text{विक्रय मूल्य}}{\text{क्रय मूल्य}}$

(द) विक्रय मूल्य — क्रय मूल्य

२०. किसी वस्तु को १७५ रुपये में खरीदकर २१० रुपये में बेचने पर :

(अ) ३५ रुपये की हानि होगी

(ब) २१० रुपये का लाभ होगा

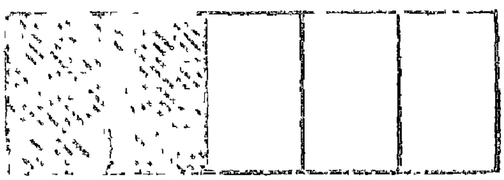
(स) ३५ रुपये का लाभ होगा

(द) लाभ या हानि कुछ नहीं होगा।

२१. निम्नलिखित चित्रों में छायांकित भाग पूरे के कितने प्रतिशत है ?

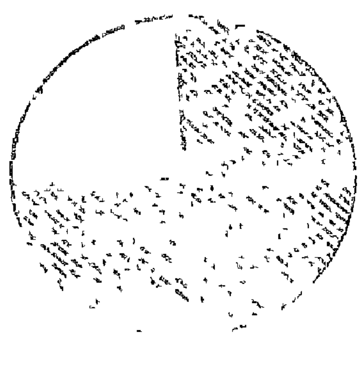
(अपने उत्तर चित्र के सामने दिये गये खानों में लिखो)

(अ)



उत्तर

(ब)



उत्तर

२२. पटरी और परकार की सहायता से निम्न रचनायें करो।

(अ) ३ से० मी० अर्द्धव्यास का वृत्त खींचो

(ब) ६० अंश का कोण बनाओ

BLUE-PRINT

FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN GENERAL SCIENCE

CLASS - III :

क्रम सं०	प्रकरण	प्रश्न रूप/प्रकार
1	हमारा विश्व	- विकल्प चयन
2	वायु, जल और मौसम	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
3	बल और कार्य	- जोड़े मिलाना
4	चट्टान, मिट्टी और खनिज	
5	पदार्थ और सामग्री	
6	हमारा घर	
7	सजीव वस्तुएँ	
8	वनस्पति जगत	
9	जन्तु जगत	
10	पक्षी	
11	हमारा शरीर और स्वास्थ्य	

उद्देश्य :

1- विश्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
2- वे वायु, जल तथा मौसम के बारे में बता सकेंगे ।
3- छात्र बल तथा कार्य के उदाहरण दे सकेंगे ।
4- छात्र चट्टान, मिट्टी तथा खनिज के बारे में जानकारी दे सकेंगे।
5- छात्र पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं के नाम तथा उनके उदाहरण दे सकेंगे ।
6- वे सजीव तथा निर्जीव वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे तथा उनके नाम बता सकेंगे ।
7- छात्र विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों तथा जन्तुओं की विशेषताओं एवं उनके कार्यों को समझा सकेंगे ।
8- वे विभिन्न प्रकार के पक्षियों के रहन सहन तथा उनके स्वभाव को बता सकेंगे
9- वे मानव शरीर की रचना, तथा स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के बारे में बता सकेंगे ।

कुल प्रश्न संख्या = 55   पूर्णांक = 60

BLUE-PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN GENERAL SCIENCE)

FOR CLASS III

Objectives / Contents	KNOWLEDGE			UNDERSTANDING			SKILL		
	MC	FB	MT	MC	FB	MT	MC	FB	MT
1- हमारा विश्व	11111	11		11		1			
2- वायु, जल और मौसम									
3- बल और कार्य	11111 1			111 1		1			
4- चट्टान मिट्टी और खनिज									
5- पदार्थ और सामग्री	1	11		1	11				
6- हमारा घर									
7- सजीव वस्तुएँ	11								
8- वनस्पति जगत	11	1		11		1			
9- जन्तु जगत	11	1		11					
10- पक्षी	1111	1		1		1			
11- हमारा शरीर और स्वास्थ्य		11		1					

MC = Multiple Choice Type

FB = Fill in the blank type

MT = Matching Type Questions.

APPENDIX - XVI

BLUE - PRINT FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN GENERAL SCIENCE

CLASS : V

क्रम संख्या	प्रकरण	प्रश्न रूप / प्रकार
1-	हमारा विश्व	- विकल्प चयन
2-	वायु और जल	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
3-	बल, कार्य और मशीन	- जोड़ मिलाना
4-	चट्टान, मिट्टी और खनिज	- लघु उत्तरीय प्रश्न
5-	पदार्थ और सामग्री	
6-	वनस्पति जगत	
7-	जन्तु जगत	
8-	मानव तथा उसका संसार	
9-	मानव शरीर	
10-	स्वास्थ्य विज्ञान	

उद्देश्य :

1- छात्र विश्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।

2- छात्र वायु और जल के बारे में अवगत हो सकेंगें ।

3- वे बल तथा कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें तथा विभिन्न प्रकार के मशीनों के उदाहरण दे सकेंगें ।

4- वे चट्टान, मिट्टी तथा खनिज के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।

5- छात्र पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं से परिचित हो सकेंगें तथा उनके उदाहरण दे सकेंगें ।

6- छात्र विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों तथा जन्तुओं की विशेषताओं एवं उनके कार्यों को समझ सकेंगें ।

7- छात्र मनुष्य तथा पर्यावरण के बीच उसके सम्बन्धों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।

8- छात्र मानव शरीर की रचना तथा स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।

कुल प्रश्न संख्या = 53 पूर्णांक = 70

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN GENERAL SCIENCE

FOR CLASS V

Objective/Contents	Knowledge				Understanding				Skill			
	MC	FB	SA	MT	MC	FB	SA	MT	MC	FB	SA	MT
1- हमारा विश्व	1111	1111										
2- वायु और जल	111				1							
3- बल, कार्य और मशीन	1	1111			1111	1						
4- चट्टान, मिट्टी और खनिज	11	1	11		1111							
5- पदार्थ और सामग्री	1111		1									
6- वनस्पति जगत	11											
7- जन्तु जगत	1111				1							
8- मानव तथा उसका संसार												
9- मानव शरीर	1111											
10- स्वास्थ्य विज्ञान	11											

उपलब्धि परीक्षण

विषय—विज्ञान

कक्षा —२

नाम बैजनाथ ओझा कक्षा ३ ....

....

....

....

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों मे प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तर दिये गये है। इनमे से जो उत्तर तुम्हें सबसे सही लगता हो उसके सामने सही (✓) का निशान लगा दो।

१. सूर्य निकलता है --

(अ) उत्तर मे

✓(ब) पूर्व मे

(स) पश्चिम में

(द) दक्षिण मे।

२ सूर्य डूबता है –

✓(अ) पूर्व मे

(ब) उत्तर मे

(स) दक्षिण मे

(द) पश्चिम मे।

३. पृथ्वी पर हमको प्रकाश और गरमी मिलतीहै --

(अ) चन्द्रमा स,

(ब) तारो से

✓(स) सूर्य से

(द) हवाओ से

४. पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर लगाने से –

(अ) रात और दिन होता है

(ब) चन्द्र ग्रहण होता है

(स) सूर्य ग्रहण होता है

(द) भूकम्प आता है।

५. भारत वर्ष मे जब रात होती है, अमेरिका मे उस समय–

(अ) रात होती है

(ब) दिन होता है

(स) दिन-रात दोनो होते है

(द) अमेरिका मे उस समय क्या होता है, कुछ ठीक नही है।

६. पानी पाया जाता है –

(अ) केवल द्रव के ही रूप में

(ब) केवल ठोस के रूप मे

(स) ठोस, द्रव एवं गैस तीनो रूपों मे

(द) केवल गैस के रूप मे।

७. पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है --

(अ) उत्तर से दक्षिण की ओर

(ब) पूर्व से पश्चिम की ओर

(स) पश्चिम से पूर्व की ओर

(द) दक्षिण से उत्तर की ओर।

८. हमें पृथ्वी का केवल थोड़ा भाग दिखाई पड़ता है इसलिए हमे पृथ्वी–

(अ) चपटी दिखाई देती है

(ब) गोल दिखाई देती है

(स) चौकोर दिखाई देती है

(द) अण्डाकार दिखाई देती है।

९. अमावस्या को चन्द्रमा —

(अ) बिल्कुल नही दिखाई पड़ता

(ब) आधा दिखाई पड़ता है

(स) हसिया की तरह दिखाई देता है

(द अण्डे के आकार का दिखाई देता है।

१० चन्द्रमा —

(अ रोजाना दिखाई पड़ता है

(ब, केवल रात को दिखाई देता है

(स, कुछ ही दिन रात और दिन मे दिखाई पड़ता है

(द, रोजाना ही लेकिन रात और दिन दोनो समय दिखाई पड़ सकता है।

११ इनमे से हम किसके बिना जीवित नहीं रह सकते —

(अ, कपड़ा

(ब बिजली

(स, पानी

द) मिट्टी ।

१२ नहाने-धोने, खाना बनाने एव पीने के लिये आवश्यकता होती है—

(अ, टोटी की

(ब) साबुन की

(स) पानी की

(द) दूध की ।

१३ बरसात का पानी -

(अ) तुरन्त बादल मे बदल जाता है

(ब, समुद्र मे चला जाता है

(स) केवल नदियो मे रह जाता है

(द) केवल पृथ्वी के अन्दर चला जाता है ।

१४ झीलो एव नदियो का पानी सूर्य की गर्मी से —

(अ) समुद्र की ओर चला जाता है

(ब) जमीन द्वारा शोख लिया जाता है

(स) वाष्प बनकर बादल बन जाता है

(द स्थिर रहता है ।

१५, ओला —

(अ) पानी का ही रूप है

(ब) पत्थर का टुकड़ा है

(स) एक तरह का कीड़ा है

(द) सफेद मिट्टी का ढेला है ।

१६. बरफ इसलिए ठण्डी लगती है क्योकि—

(अ) इसमे वाष्प होती है

(ब) वर्फ की गर्मी हाथ मे चली आती है

(स) हाथ की गर्मी वर्फ मे चली जाती है

(द) इसमे पानी होता है।

१७. वाष्पन—

(अ) पानी को बरफ में बदलने को कहते है

(ब) पानी को भाप मे बदलने को कहते है

(स) पानी के बहने को कहते है

(द) वाप्प के जमने को कहते है।

१८. बहने वाली गरम हवा को—

(अ) पवन कहते है

(ब) लू कहते है

(स) वायु कहते है

(द) हवन कहते है।

१९. तापमापी का प्रयोग होता है—

(अ) केवल वायु का ताप नापने के लिए

(ब) केवल शरीर का ताप नापने के लिए

(स) केवल वायु और शरीर का ताप नापने के लिए

(द) किसी भी वस्तु का ताप नापने के लिए।

२०. पवन-सूचक से पवन की दिशा का ज्ञान होता है—

(अ) पंख से

(ब) तिकोन से

(स) खपची से

(द) लकड़ी के गुटके से।

२१. ऊपर की ओर फेंकी गयी गेंद नीचे आ जाती है—

(अ) विद्युतीय बल के कारण

(ब) घर्षण बल के कारण

(स) चुम्बकीय बल के कारण

(द) गुरुत्वीय बल के कारण।

२२. जब किसी वस्तु पर दूसरी वस्तु रगड़ी जाती है तब उनके सतह के बीच -

(अ) गुरुत्वीय बल लगता है

(ब) चुम्बकीय बल लगता है

(स) घर्षण बल लगता है

(द) विद्युतीय बल लगता है ।

२३. किसी वस्तु पर भार उस पर लगे —

(अ) पेशीय बल के कारण होता है

(ब) गुरुत्वीय बल के कारण होता है

(स) चुम्बकीय बल के कारण होता है

(द) घर्षण बल के कारण होता है ।

२४. पदार्थ पाये जाते हैं---

(अ) दो अवस्थाओं में

(ब) तीन अवस्थाओं में

(स) पांच अवस्थाओं में

(द) छः अवस्थाओं में ।

२५. इनमें से सजीव वस्तु है -

(अ) कुर्सी

(ब) कुत्ता

(स) मेज

(द) घड़ी ।

२६. इनमें से निर्जीव वस्तु है --

(अ) गाय

(ब) बिल्ली

(स) किताब

(द) फूल ।

२७. मधुमक्खियाँ एक फूल से दूसरे फूल को ले जाती है —

(अ) पानी

(ब) पराग

(स) नमक

(द) खनिज पदार्थ ।

२८. पौधे को मिट्टी में जकड़े रहना काम है —

(अ) जड़ो का

(ब) शाखाओं का

(स) तनो का

(द) पत्तियो का ।

२९. जड़ो के कार्य है —

(अ) मिट्टी से खनिज पदार्थ एव पानी लेना

(ब) भोजन बनाना।

(स) पौधो के लिए रोशनी बनाना

(द) पेड़ के लिए मिट्टी इकट्ठी करना ।

३०. बीज पौधो के किस भाग में होते हैं —

(अ) फूल मे

(ब) फल में

(स) तना मे

(द) जड़ में ।

३१ मास काटने के लिए चील और बाज की चोच —

(अ) सपाट होती है

(ब) मुड़ी हुई होती है

(स) सीधी होती है

(द) धारीदार होती है ।

३२. बीज खाने वाली चिड़ियों की चोच :-

(अ) मजबूत होती है

(ब) सुन्दर होती है

(स) सपाट होती है

(द) मुलायम होती है ।

३३. जुगाली करने वाला जन्तु है —

(अ) कुत्ता

(ब) गाय

(स) बिल्ली

(द) सियार ।

३४. जुगाली करने वाले जन्तुओ के दाँत —

(अ) नुकीले होते है

(ब) सपाट होते है

(स) मुड़े होते है

(द) गोलाकार होते है ।

३५. मांसाहारी जन्तु- -

(अ) पौधो को खाते है

(ब) मल पदार्थो को खाते है

(स) दूसरे जन्तुओ को खाते है

(द) अनाजो को खाते है ।

३६. मासाहारी जन्तुओ के दाँत—

(अ) बहुत तेज होते हैं

(ब) सपाट होते है

(स) सुन्दर होते है

(द) छोटे-छोटे होते हैं ।

३७. जालयुक्त पैरो के कारण बत्तख को—

(अ) शिकार करने मे सुविधा होती है

(ब) चलने मे सुविधा होती है

(स) तैरने मे सुविधा होती है

(द) उड़ने मे सुविधा होती है ।

३८. मछली पकड़ने के लिए बगुले की चोच —

(अ) गोल होती है

(ब) लम्बी होती है

(स) चपटी होती है

(द) छोटी होती है ।

३९ कोयल अपने अण्डे देती है—

(अ) गौरैये के घोंसले मे

(ब) कबूतर के घोंसले मे

(स) बाज के घोंसले मे

(द) कौवे के घोसले मे ।

४० दर्जिन चिड़िया अपना घोंसला बनाती है—

(अ) कागज से

(ब) पत्तियों से

(स) टहनियों से

(द) घास से।

४१. ज्वर की अवस्था में नाड़ी की धड़कन—

(अ) बढ़ जाती है

(ब) घट जाती है

(स) पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

(द) बन्द हो जाती है।

४२ जब तुम देर तक केवल रोटी चबाते हो, तो वह—

(अ) मीठी लगती है

(ब) स्वादहीन लगती है

(स) नमकीन लगती है

(द) तीखी या कड़ुवी लगती है।

४३. स्वस्थ आदमी की नाड़ी एक मिनट में—

(अ) लगभग ४० बार धड़कती है

(ब) लगभग ७० बार धड़कती है

(स) लगभग १०० बार धड़कती है

(द) लगभग १५० बार धड़कती है।

नीचे लिखे हुए वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठकों में दिये गये ठीक शब्दों से भरो।

४४ धरती से ऊपर का सारा स्थान .... कहलाता है। (आकाश, हवा, दिशा, स्वर्ग)

४५ पूर्णमासी को चन्द्रमा का आकार .... होता है। (हँसियाकार, आधागोल, पूरा गोल, अण्डे के आकार का)

४६ सूर्य के प्रकाश, पानी और हवा से पत्तियाँ पौधों के लिए .... बनाती है। (भोजन, खाद, सुगन्ध, पेड़ के लिए छाया)

४७. तने पत्तियों, फूलों और फलों को .... देते हैं। (सहारा, गरमी, नमी, प्रकाश)

४८ तितलियाँ फूलों से .... लेती है। (सुगन्ध, मकरन्द, रंग, जल)

४९. तेल लगाने से पहिये की धुरी का .... कम हो जाता है। (आकार, घर्षण, भार, बल)

११ लोह की गोली गैस है। (द्रव, गैस, ठोस)

१२ तेल द्रव है क्योंकि इसकी अपनी कोई तेल ...नही है। (आयतन, आकृति, भार)

१३ हवा ...... घेरती है। (जगह, गैस, भार)

१४ तोते की तरह के पक्षी अपने अण्डे पर पजे को ...... बैठते है। (जकडकर, सिमेट कर, फैलाकर)

१५ नीचे पौधे के भागो के नाम कालम 'अ' मे दिये हैं। इन भागो का काम कालम 'आ' का उन संख्याओ को लिखो जिससे दोनो वाक्याशो को मिलाने से पौधे के उन भागो के सही कार्य की जानकारी हो सके।

कालम 'अ'		कालम 'आ'
(अ) जडें	(३)	१—पत्तो को सहारा देते है और धूप मे रखते है।
(ब) तने	(१)	२—के अन्दर बीज बनता है।
(स) पत्ते	(२)	३—मिट्टी से पानी और खनिज पदार्थ लेती है।
(द) फल	(४)	४—पौधो के लिए भोजन बनाते है।

उपलब्धि परीक्षण

विषय—विज्ञान

कक्षा—५

नाम ....

विद्यालय का नाम ....

स्थान .... जिला ....

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तर दिये गये है। इनमें से जो उत्तर तुम्हे सबसे सही लगता हो उसके सामने सही (✓) का निशान लगा दो।

१. सूर्य ग्रहण होता है—
   (अ) सप्तमी को
   (ब) पूर्णिमा को
   (स) अष्टमी को
   (द) अमावस्या को।

२ चन्द्र ग्रहण होता है—
   (अ) अमावस्या को
   (ब) अष्टमी को
   (स) पूर्णिमा को
   (द) सप्तमी को।

३ चन्द्रमा का व्यास पृथ्वी के व्यास का—
   (अ) तिगुना है
   (ब, आधा है
   (स) दूना है
   (द) एक चौथाई है।

४. जब चन्द्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाता है तब –
(अ) सूर्य ग्रहण होता है
(ब) चन्द्र ग्रहण होता है
(स) दिन होता है
(द) रात होती है ।

५. पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी —
(अ) २८१ हजार कि०मी० है
(ब) ३८४ हजार किमी० है
(स) १८६ हजार किमी० है
(द) ३८० हजार कि०मी० है ।

६. किसी चीज को जलाने मे सहायता करती है —
(अ) कार्बन-डाई आक्साइड गैस
(ब) हाइड्रोजन गैस
(स) आक्सीजन गैस
(द) नाइट्रोजन गैस ।

७. पेड पौधे भोजन बनाने के लिए —
(अ) आक्सीजन गैस का प्रयोग करते हैं
(ब) कार्बन-डाई आक्साइड गैस का प्रयोग करते
(स) नाइट्रोजन गैस का प्रयोग करते है
(द) हाइड्रोजन गैस का प्रयोग करते है ।

८. वायुमण्डल मे उपस्थित हवा दाब डालती है —
(अ) केवल नीचे की ओर
(ब) केवल ऊपर की ओर
(स) चारो ओर
(द) ऊपर तथा नीचे दोनो ओर ।

९. तैरती हुई वस्तुओ का भार —
(अ) शून्य हो जाता है
(ब) पहले से अधिक हो जाता है
(स) पहले से कम हो जाता है
(द) पहले जितना ही रहता है ।

१०. घर्षण कम करने के लिए उपयोग किया जाता है—

(अ) उत्तोलक का

(ब) घिरनी का

(स) नत-समतल का

(द) मोटर का ।

११. साइफन की क्रिया द्वारा पानी —

(अ) एक ही तल मे ले जाया जा सकता है

(ब) ऊपर से नीचे ले लाया जा सकता है

(स) नीचे से ऊपर ले जाया जा सकता है

(द) किसी भी ओर ले जाया जा सकता है ।

१२. सी-सा झूला इनमे से उदाहरण है—

(अ) घिरनी का

(ब) नत-समतल का

(स) उत्तोलक का

(द) इंजन का ।

१३. ठोस के द्रव मे घुलने से बने मिश्रण को—

(अ) विलायक कहते है

(ब) विलेय कहते हैं

(स) विलयन कहते है ।

१४. अमोनियम सल्फेट से पौधो को—

(क) कार्बन प्राप्त होता है

(ब) नाइट्रोजन प्राप्त होता है

(स) आक्सीजन प्राप्त होता है

(द) सल्फर प्राप्त होता है ।

१५. घुले हुए ठोस को विलयन मे से अलग किया जा सकता है—

(अ) छानकर

(ब) निथार कर

(स) क्रिस्टल बनाकर

(द) वाष्पन करके ।

१६. जंगलों के काटने से—

(अ) संरक्षण होता है

(ब) अनुकूलन होता है

(स) अपरदन होता है

(द) प्रदूषण होता है ।

१७. नालियो एवं गन्दे नालों के पानी के निकास की व्यवस्था—

(अ) शहरो से दूर होनी चाहिए

(ब) शहरों के नजदीक होनी चाहिए

(स) शहरों मे ही होना चाहिए

(द) घरो में ही होना चाहिए ।

१८. पहाड़ी ढलानों पर पेड़ न रहने के कारण भारी वर्षा से—

(अ) मिट्टी उपजाऊ हो जाती है

(ब) मिट्टी ऊसर हो जाती है

(स) मिट्टी कटकर बह जाती है

(द) मिट्टी पथरीली हो जाती है ।

१९. ज्ञानेन्द्रियों की संख्या है—

(अ) ५

(ब) ४

(स) ६

(द) ३

२०. तन्त्रिकायें अनुभव संदेशों को—

(अ) हृदय तक ले जाती है

(ब) मस्तिष्क तक ले जाती है

(स) फेफड़ो तक ले जाती है

(द) आँखों तक ले जाती है ।

२१. स्पर्श की ज्ञानेन्द्री है—

(अ) कान

(ब) नाक

(स) आँख

(द) त्वचा ।

२२. स्वाद की ज्ञानेन्द्री है—
(अ) त्वचा
(ब) जीभ
(स) नाक
(द) कान।

२३. सूँघने की ज्ञानेन्द्री है -
(अ) जीभ
(ब) त्वचा
(स) नाक
(द कान।

२४. जिस तलकी सहायता से भारी बोझ आसानी से उठाया जा सके, उसे
(अ) घर्षण-तल कहते है
(ब) नत-समतल कहते है
(स) समतल कहते है
(द) टेढ़ा तल कहते हैं।

२५. कोयला और पेट्रोलियम निकाले जाते है—
(अ) जंगल के पेड़ पौधो से
(ब) ज्वालामुखी के पिघली वस्तु से
(स) पृथ्वी के अन्दर से
(द) रेगिस्तान के बालू से।

२६. विहार मे सिंह भूमि की खानो मे अधिक मात्रा मे, पाया जाता है-
(अ) ताँबे का खनिज
(ब) लोहे का खनिज
(स) एलुमिनियम का खनिज
(द) चाँदी का खनिज।

२७. चीनी के छोटे से छोटे कण को—
(अ) क्रिस्टल कहते है
(ब) अणु कहते है
(स) विलयन कहते
(द) विलेय कहते है।

२८. पौधे की वृद्धि के लिए आवश्यक है —

(अ) नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और पोटैशियम

(ब) आक्सीजन, हाइड्रोजन और पोटैशियम

(स) नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम

(द) नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और आक्सीजन।

२९. अमोनियम सल्फेट—

(अ) खाने वाला नमक है

(ब) कृषि मे काम आने वाला लवण है

(स) लवण नहीं है

(द) कपड़ा साफ करने वाला सोडा है।

३०. गेहूँ का एक पौधा—

(अ) केवल एक बीज उत्पन्न करता है

(ब) ६० बीज उत्पन्न करता है

(स) १०० बीज उत्पन्न करता है

(द) ज्यादा या कम कुछ भी बीज उत्पन्न करता है।

३१. किसान धान के छोटे-छोटे पौधे को उखाड़कर दूसरी जगह रोपते है क्योंकि —

(अ) पहली जगह पर पोषक तत्व कम होते है

(ब) वहाँ पौधों के बढ़ने तथा जड़ों के फैलने के लिए जगह नहीं होती

(स) वहाँ जीव जन्तु खा जाते है

(द) वहाँ पानी की कमी होती है।

३२ सभी पदार्थ छोटे-छोटे कणो से बने होते है जिन्हे—

(अ) अणु कहते है

(ब) क्रिस्टल कहते है

(स) धूल कहते है

(द) सामग्री कहते है।

३३. बीज अंकुरित होकर—

(अ) फल बनाते है

(ब) फूल बनाते है

(स) नये पौधे बनाते हैं

(द) पत्ती बनाते हैं।

३४. मछली सांस लेती है —

(अ) त्वचा से

(ब) फेफड़ा से

(स) गिल से

(द) नाक से ।

३५ पक्षियो मे भोजन प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से—

(अ) उनकी चोंच अनुकूलित होती है

(ब) उनके हाथ अनुकूलित होते हैं

(स) उनके दाँत अनुकूलित होते हैं

(द) उनकी जीभ अनुकूलित होती है ।

३६ तैरने वाली पक्षी है—

(अ) सारस

(ब) बगुला

(स) मछमरनी

(द) बत्तख ।

३७, उड़ने, तैरने तथा गोता लगाने वाले पक्षी हैं —

(अ) मछमरनी और बगुला

(ब) बगुला और सारस

(स) सारस और मछमरनी

(द) बत्तख और पनकौआ ।

३८. नदियो पर बाँध बनाये जाते हैं—

(अ) केवल यातायात के लिए सडक और बिजली प्राप्त करने के लिए

(ब) केवल बाढ नियन्त्रण और नदी की शोभा बढाने के लिए

(स) केवल बाढ नियंत्रण, बिजली तथा सिंचाई के लिये जल प्राप्त करने के लिये

(द) केवल यातायात के लिए सड़क तथा नदी को शोभा बढ़ाने के लिये ।

(ब) कोष्ठक मे दिये हुये शब्दो मे से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानो को भरो :—

३९. जब पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्रमा आ जाता है तब .... होता है

(सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, रात, दिन)

४०. चन्द्रमा पृथ्वी का प्राकृतिक .... है ।

(ग्रह, उपग्रह, तारा, नक्षत्र)

४१. मनुष्य .... पर पहुँच चुका है।

(चन्द्रमा, बृहस्पति, मंगल, शनि)

४२. चन्द्रमा .... प्रकाश से चमकता है।

(अपने, सूर्य के, पृथ्वी के, मंगल के)

४३. वस्तु को द्रव से डुबाने पर उसका भार .... मालूम पडता है।

(कम, अधिक, शून्य, उतना ही)

४४. द्रव का दाब गहराई बढने से .... है।

(घटता, बढ़ता, समान रहता, शून्य हो जाता)

४५. हम साँस लेने मे आक्सीजन का उपयोग करते है तथा साँस से .... निकालते है।

(कार्बन-डाई आक्साइड गैस, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, शुद्ध हवा

४६. किसी वस्तु पर बल लगाकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाने को .... कहते है।

(विश्राम करना, कार्य करना, वेग, चाल)

४७. जिन किन्ही भी वस्तुओ की सहायता से कार्य आसानी से किया जाता है उन्हे .... कहते हैं।

(मशीन, इंजन, ईंधन, बल)

४८. .... की सहायता से भारी बोझ आसानी से उठाया जा सकता है।

(घिरनी, साइफन, नत-समतल, पहिया)

४९. मिट्टी मे पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए .... का उपयोग किया जाता है।

(हवा, पानी, खाद, धूप)

५०. पूँछ और पंख मछली के .... में सहायता करते है।

(उड़ने, तैरने, साँस लेने, भोजन निगलने)

५१. नीचे कालम 'अ' और कालम 'आ' में कुछ वाक्यांश दिये गये है। कालम 'अ' के सामने बने कोष्ठक में कालम 'आ' की उन संख्याओ को लिखो जिससे दोनो वाक्यांशो के मिलाने से अर्थपूर्ण वाक्य बन जायँ।

कालम 'अ'		कालम 'आ'
(क) कीडे मकोड़े, चूहे और पशु-पक्षी	(३)	१. अंकुरित नही हो पाते।
(ख) एक पौधे के सभी बीज	(१)	२. फलो के बीजो को बिखेरने में सहायता करते है।
(ग) उबालने से पानी की	(४)	३. फसलो को नुकसान पहुँचाते है।
(घ) मनुष्य और पशु	(२)	४. हवा निकल जाती है।

(II)	(क) बत्तख और पनकौआ पक्षी उड़ने, तैरने एवं गोता लगाने के अतिरिक्त	( )	१ कठोर भूमि पर सरलता से दौड़ सकते है।
	(ख) पेड़ो से पत्तियाँ	( )	२ पृथ्वी पर भी चल सकते है।
	(ग) गाय तथा घोड़े आदि कठोर खुर होने के कारण	( )	३. हाथी अपनी सूंड की सहायता से तोड़ लेता है।
	(घ) तितलियाँ फूलो से रस	( )	४. अपनी कुँडलित सूंड द्वारा चूसती है।
(III)	(क) तलछटो के जमने से	( )	१. आग्नेय चट्टाने बनती है।
	(ख) मिट्टी मे नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी	( )	२. स्तरित चट्टाने बनती है।
	(ग) पृथ्वी के अन्दर मे निकली चट्टानो के ठंडी होने से	( )	३. उर्वरक डालकर पूरी की जाती है।

५२ निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर एक वाक्य मे लिखो --

(अ) टेक या आलम्ब किसे कहते है ?

(ब) उत्तोलक से क्या अभिप्राय है ?

(स) किसी एक सरल मशीन का नाम बताओ ?

(द) अभ्रक (माइका) किस काम आता है ?

(य) परतो से बनी चट्टानों को क्या कहते है ?

(र) ताँबे के दो उपयोग लिखो ?

५३ एलुमिनियम के दो उपयोग लिखो :--

(१) .... (२) ....

ITEM ANALYSIS CHART FOR ACHIEVEMENT TEST IN GEN.SCIENCE

CLASS - III

Q.No.	Difficulty value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1	54.00	0.28	S
2	75.500	0.45	R
3	69.50	0.51	R
4	61.50	0.45	S
5	53.50	0.33	S
6	43.50	0.17	R
7	36.00	0.25	R
8	42.00	0.38	S
9.	42.00	0.40	S
10	22.00	0.00	R
11	76.50	0.37	R
12	76.50	0.13	R
13	44.00	0.24	S
14	55.00	0.40	S
15	51.50	0.55	S
16	56.00	0.00	R
17	51.50	0.27	S
18	60.50	0.43	S
19	29.50	0.00	R
20	40.00	0.26	S
21	53.50	0.61	S
22	53.50	0.61	S
23	25.00	0.00	R
24	50.50	0.37	S
25	58.50	0.33	S
26	64.00	0.28	R
27	53.00	0.26	S
28	60.50	0.53	S
29	42.50	0.53	S
30	48.00	0.14	R
31	62.00	0.54	S
32	45.50	0.41	S
33	69.00	0.38	R

34	47.00	0.22	S
35	69.50	0.39	R
36	45.50	0.41	S
37	64.50	0.27	R
38	58.00	0.30	S
39	43.00	0.40	S
40	50.50	0.00	R
41	57.50	0.41	S
42	72.00	0.44	R
43	50.00	0.14	R
44	55.50	0.51	S
45	50.50	0.63	S
46	59.50	0.49	R
47	41.50	0.51	S
48	36.50	0.39	S
49	37.00	0.54	S
50	71.00	0.40	R
51	48.00	0.50	S
52	65.00	0.52	R
53	43.00	0.40	S
54	64.00	0.68	R

Total Questions = 54

R = Rejected

S = Selected

Item Analysis Chart for Achievement Test in General Science

CLASS : V

Item No.	Difficulty Value (in %)	Discriminating Index	Remarks
1	71.5	0.35	R
2	76.0	0.30	R
3	71.5	0.45	R
4	59.8	0.28	S
5	73.5	0.35	R
6	57.5	0.15	R
7	59.2	0.39	S
8	49.6	0.50	S
9	85.0	0.26	R
10	78.5	0.33	R
11	57.4	0.46	S
12	60.2	0.35	S
13	51.3	0.32	S
14	46.6	0.06	R
15	41.8	0.24	S
16	53.4	0.54	S
17	54.0	0.50	S
18	55.5	0.41	S
19	59.2	0.58	S
20	49.7	0.42	S
21	74.5	0.39	R
22	80.0	0.28	R
23	81.5	0.49	R
24	59.0	0.08	R
25	71.0	0.33	R
26	56.5	0.23	S
27	67.2	0.03	R
28	52.5	0.31	S
29	57.6	0.58	S
30	41.0	0.12	R

31	68.5	0.35	R
32	70.5	0.43	R
33	53.4	0.41	S
34	58.0	0.52	S
35	72.0	0.32	R
36	83.0	0.26	R
37	59.2	0.43	S
38	48.5	0.27	S
39	50.8	0.55	S
40	52.0	0.28	S
41	89.0	0.14	R
42	79.0	0.04	R
43	39.0	0.2	R
44	68.4	0.13	R
45	78.5	0.31	R
46	77.2	0.42	R
47	81.5	0.27	R
48	57.4	0.48	S
49	50.5	0.53	S
50	72.0	0.30	R
51	58.9	0.41	S
52	47.4	0.33	S
53	52.4	0.56	S

Total No. of question = 53

R = Rejected

S = Selected

उपलब्धि परीक्षण

(18)

विषय—विज्ञान

कक्षा—२

नाम..

विद्यालय का नाम...

स्थान... जिला.......................................

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तर दिये गये है। इनमें से जो उत्तर सही हो उस पर सही (✓) का निशान लगा दो।

१. सूर्य डूबता है—

(अ) पूरब मे

(ब) उत्तर मे

(स) दक्षिण मे

✓ (द) पश्चिम में।

२. पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर लगाने से—

✓ (अ) रात और दिन होता है

(ब) चन्द्र ग्रहण होता है

(स) सूर्य ग्रहण होता है

(द) भूकम्प आता है।

३. भारतवर्ष मे जब रात होती है, अमेरिका में उस समय—

(अ) रात होती है

✓ (ब) दिन होता है

(स) दिन-रात दोनों होते है

(द) अमेरिका मे उस समय क्या होता है, कुछ ठीक नही है।

४. हमे पृथ्वी का केवल थोड़ा भाग दिखाई पड़ता है इसलिए हमें पृथ्वी—

(अ) चपटी दिखाई देती है

(ब) गोल दिखाई देती है

(स) चौकोर दिखाई देती है

(द) अण्डाकार दिखाई देती है ।

५. अमावस्या को चन्द्रमा—

(अ) बिल्कुल नही दिखाई पड़ता

(ब) आधा दिखाई पडता है

(स) हंसिया को तरह दिखाई देता है

(द) अण्डे के आकार का दिखाई देता है ।

६. बरसात का पानी—

(अ) तुरन्त बादल मे बदल जाता है

(ब) समुद्र मे चला जाता है

(स) केवल नदियो मे रह जाता है

(द) केवल पृथ्वी के अन्दर चला जाता है ।

७. झीलो एवं नदियो का पानी सूर्य की गर्मी से—

(अ) समुद्र की ओर चला जाता है

(ब) जमीन द्वारा शोख लिया जाता है

(स) वाष्प बनकर बादल बन जाता है

(द) स्थिर रहता है ।

८. ओला—

(अ) पानी का ही रूप है

(ब) पत्थर का टुकडा है

(स) एक तरह का कीडा है

(द) सफेद मिट्टी का ढेला है ।

९. वाष्पन—

(अ) पानी को बरफ में बदलने को कहते है

(ब) पानी को भाप में बदलने को कहते है

(स) पानी के बहने को कहते है

(द) वाष्प के जमने को कहते है ।

१०. बहने वाली गरम हवा को—

(अ) पवन कहते है

(ब) लू कहते है

(स) वायु कहते है

(द) हवन कहते है ।

११. पवन-सूचक से पवन की दिशा का ज्ञान होता है—

(अ) पंख से

(ब) तिकोन से

(स) खपची से

(द) लकडी के गुटके से ।

१२. ऊपर की ओर फेंकी गयी गेंद नीचे आ जाती है—

(अ) विद्युतीय बल के कारण

(ब) घर्षण बल के कारण

(स) चुम्बकीय बल के कारण

(द) गुरुत्वीय बल के कारण ।

१३. पदार्थ पाये जाते है—

(अ) दो अवस्थाओ मे

(ब) तीन अवस्थाओ मे

(स) पाँच अवस्थाओ में

(द) छः अवस्थाओ मे ।

१४. इनमे से सजीव वस्तु है—

(अ) कुर्सी

(ब) कुत्ता

(स) मेज

(द) घडी ।

१५. मधुमक्खियाँ एक फूल से दूसरे फूल को ले जाती है—

(अ) पानी

(ब) पराग

(स) नमक

(द) खनिज पदार्थ ।

१६. पौधे को मिट्टी में जकडे रहना काम है—

(अ) जड़ो का

(ब) शाखाओ का

(स) तनो का

(द) पत्तियो का।

१७. जडो के कार्य है—

(अ) मिट्टी से खनिज पदार्थ एवं पानी लेना

(ब) भोजन बनाना

(स) पौधो के लिए रोशनी बनाना

(द) पेड के लिए मिट्टी इकट्ठी करना।

१८. मास काटने के लिए चील और बाज की चोच—

(अ) सपाट होती है

(ब) मुड़ी हुई होती है

(स) सीधी होती है।

(द) धारीदार होती है।

१९. बीज खाने वाली चिडियो की चोच—

(अ) मजबूत होती है

(ब) सुन्दर होती है

(स) सपाट होती है

(द) मुलायम होती है।

२०. मांसाहारी जन्तुओ के दॉत—

(अ) बहुत तेज होते है

(ब) सपाट होते है

(स) सुन्दर होते है

(द) छोटे-छोटे होते है।

२१. मछली पकडने के लिए बगुले की चोच —

(अ) गोल होती है

(ब) लम्बी होती है

(स) चपटी होती है

(द) छोटी होती है।

२२. कोयल अपने अण्डे देती है—

(अ) गोरैये के घोसले मे

(ब) कबूतर के घोसले मे

(स) बाज के घोसले में

(द) कौवे के घोसले में।

२३. ज्वर की अवस्था मे नाडी की धडकन—

(अ) बढ जाती है

(ब) घट जाती है

(स) पर कोई प्रभाव नही पड़ता

(द) बन्द हो जाता है।

निर्देश :

नीचे लिखे हुए वाक्यों में खाली स्थानों को कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में सही उत्तर चुनकर भरो।

२४. धरती से ऊपर का सारा स्थान ... ... कहलाता है। (आकाश, हवा, दिशा, स्वर्ग)

२५. पूर्णमासी को चन्द्रमा का आकार ... ... होता है। (हसियाकार, आधागोल, पूरा गोल, अण्डे के आकार का)

२६. तने पत्तियो, फूलो और फलो को ... ... देते है। (सहारा, गरमी, नमी, प्रकाश)

२७. तितलियाँ फूलो से ... ... लेती है। (सुगन्ध, मकरन्द, रग, जल)

२८. तेल लगाने से पहिये की धुरी का ... ... कम हो जाता है। (आकार, घर्षण, भार, बल)

२९ तेल द्रव है क्योकि इसको अपनी कोई ... ... नही है। (आयतन, आकृति, भार)

३०. तोते की तरह के पक्षी अपने अण्डे पर पंजे को ... ... बैठते है। (जकड़कर, सिनेटकर, फैलाकर)

उपलब्धि परीक्षण

विषय—विज्ञान

कक्षा - ५

नाम ....

विद्यालय का नाम ....

स्थान .... जिला ....

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तर दिये गये हैं। इनमें से जो उत्तर सही हो उसपर सही (✓) का निशान लगा दो।

---

(१) जब चन्द्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाता है तब —

(अ) सूर्य ग्रहण होता है

(ब) चन्द्र ग्रहण होता है

(स) दिन होता है

(द) रात होती है।

(२) पेड़-पौधे भोजन बनाने के लिए—

(अ) आक्सीजन गैस का प्रयोग करते है

(ब) कार्बन-डाई आक्साइड गैस का प्रयोग करते है

(स) नाइट्रोजन गैस का प्रयोग करते है

(द) हाइड्रोजन गैस का प्रयोग करते है।

(३) वायुमण्डल मे उपस्थित हवा दाब डालती है—

(अ) केवल नीचे की ओर

(ब) केवल ऊपर की ओर

(स) चारो ओर

(द) ऊपर तथा नीचे दोनों ओर।

(४) साइफन की क्रिया द्वारा पानी —

(अ) एक ही तल मे ले जाया जा सकता है

(ब) ऊपर से नीचे ले जाया जा सकता है

(स) नीचे से ऊपर ले जाया जा सकता है

(द) किसी भी ओर ले जाया जा सकता है।

(५) सी-सा झूला इनमें से उदाहरण है—

(अ) घिरनी का

(ब) नत-समतल का

(स) उत्तोलक का

(द) इंजन का।

(६) ठोस के द्रव मे घुलने से बने मिश्रण को—

(अ) विलायक कहते हैं

(ब) विलेय कहते है

(स) विलयन कहते है।

(द) यौगिक कहते है।

(७) घुले हुए ठोस को विलयन मे से अलग किया जा सकता है —

(अ) छानकर

(ब) निथार कर

(स) क्रिस्टल बनाकर

(द) वाष्पन करके।

(८) जगलों के काटने से—

(अ) संरक्षण होता है

(ब) अनुकूलन होता है

(स) अपरदन होता है

(द) प्रदूषण होता है।

(९) नालियों एवं गन्दे नालो के पानी के निकास की व्यवस्था—

(अ) शहरो से दूर होनी चाहिए

(ब) शहरो के नजदीक होनी चाहिए

(स) शहरों मे ही होना चाहिए

(द) घरो मे ही होना चाहिए।

(१०) पहाड़ी ढलानों पर पेड न रहने के कारण भारी वर्षा से —

(अ) मिट्टी उपजाऊ हो जाती है

(ब) मिट्टी ऊसर हो जाती है

(स) मिट्टी कटकर बह जाती है

(द) मिट्टी पथरीली हो जाती है।

(११) ज्ञानेन्द्रियो की संख्या है—

(अ) ५

(ब) ४

(स) ६

(द) ३

(१२) तन्त्रिकाये अनुभव सदेशों को—

(अ) हृदय तक ले जाती है

(ब) मस्तिष्क तक ले जाती है

(स) फेफडो तक ले जाती है

(द) आँखों तक ले जाती है।

(१३) बिहार मे सिंह भूमि की खानो मे अधिक मात्रा मे पाया जाता है—

(अ) ताँबे का खनिज

(ब) लोहे का खनिज

(स) एलुमिनियम का खनिज

(द) चाँदी का खनिज।

(१४) पौधे की वृद्धि के लिए आवश्यक है—

(अ) नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और पोटैशियम

(ब) आक्सीजन, हाइड्रोजन और पोटैशियम

(स) नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम

(द) नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और आक्सीजन।

(१५) अमोनियम सल्फेट—

(अ) खाने वाला नमक है

(ब) कृषि में काम आने वाला लवण है

(स) लवण नही है

(द) कपड़ा साफ करने वाला सोडा है।

(१६) बीज अंकुरित होकर —

(अ) फल बनाते है

(ब) फूल बनाते हैं

(स) नये पौधे बनाते है

(द) पत्ती बनाते है।

(१७) मछली साँस लेती है—

(अ) त्वचा से

(ब) फेफड़ा से

(स) गिल से

(द) नाक से।

(१८) उडने, तैरने तथा गोता लगाने वाले पक्षी है—

(अ) मछमरनी और बगुला

(ब) बगुला और सारस

(स) सारस और मछमरनी

(द) बतख और पनकौआ।

(१९) नदियो पर बाँध बनाये जाते है—

(अ) केवल यातायात के लिए सडक और बिजली प्राप्त करने के लिए

(ब) केवल बाढ नियन्त्रण और नदी की शोभा बढाने के लिए

(स) केवल बाढ नियन्त्रण, बिजली तथा सिचाई के लिए जल प्राप्त करने के लिए

(द) केवल यातायात के लिए सडक तथा नदी की शोभा बढाने के लिए।

निर्देश : कोष्ठक मे दिये हुये शब्दो में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानो को भरो :—

(२०) जब पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्रमा आ जाता है तब .... होता है

(सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, रात दिन)

(२१) चन्द्रमा पृथ्वी का प्राकृतिक .... है। (ग्रह, उपग्रह, तारा, नक्षत्र)

(२२) वस्तु को द्रव में डुबाने पर उसका भार .... मालूम पडता है।

(कम, अधिक, शून्य, उतना ही)

(२३) .... की सहायता से भारी बोझ आसानी से उठाया जा सकता है।

(घिरनी, साइफन, नत-समतल, पहिया)

(२४) मिट्टी मे पोषक तत्वो की कमी को पूरा करने के लिए .... का उपयोग किया जाता है।

(हवा, पानी, खाद, धूप)

(२५) नीचे कालम 'अ' और कालम 'आ' में कुछ वाक्यांश दिये गये है। कालम अ' के सामने बने कोष्ठक मे कालम 'आ' की उन संख्याओ को लिखो जिससे दोनो वाक्याशो के मिलाने से अर्थपूर्ण वाक्य बन जायें।

कालम 'अ'		कालम 'आ'
(i) (क) कीडे मकोड़े, चूहे और पशु-पक्षी	( )	१ अंकुरित नही हो पाते।
(ख) एक पौधे के सभी बीज	( )	२. फलों के बीजो को बिखेरने मे सहायता करते है।
(ग) उबालने से पानी की	( )	३. फसलो को नुकसान पहुँचाते है।
(घ) मनुष्य और पशु	( )	४. हवा निकल जाती है।
(ii) (क) बतख और पनकौआ पक्षी उड़ने, तैरने एव गोता लगाने के अतिरिक्त	( )	१. कठोर भूमि पर सरलता से दौड सकते है।
(ख) पेड़ों से पत्तियाँ	( )	२. पृथ्वी पर भी चल सकते है।
(ग) गाय तथा घोडे आदि कठोर खुर होने के कारण	( )	३. हाथी अपनी सूड की सहायता से तोड लेता है।
(घ) तितलियाँ फूलो से रस	( )	४ अपनी कुँडलित सूड़ द्वारा चूसती है।
(iii) (क) तलछटो के जमने से	( )	१. आग्नेय चट्टाने बनती है।
(ख) मिट्टी मे नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी	( )	२. स्तरित चट्टानें बनती है।
(ग) पृथ्वी के अन्दर से निकली चट्टानो के ठडी होने से	( )	३. उर्वरक डालकर पूरी की जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर एक वाक्य मे लिखो —

२६) किसी एक सरल मशीन का नाम बताओ ? ....

२७) अभ्रक (माइका) किस काम आता है ? ....

२८) परतो से बनी चट्टानो को क्या कहते है ? ....

२९) ताँबे के दो उपयोग लिखो ? ....

३०) एलुमिनियम के दो उपयोग लिखो :--

(१) .... (२) ....

BLUE-PRINT

FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN SOCIAL

CLASS : III

क्रम सं0	प्रकरण
1-	दिशाएँ
2-	विद्यालय तथा गाँव का मानचित्र
3-	हमारी पृथ्वी
4-	हमारा देश तथा उसका भारतवर्ष
5-	हमारा प्रदेश, कश्मीर, राजस्थान, केरल तथा असम के बालकों का जीवन
6-	रामायण तथा महाभारत की कहानी ।
7-	महात्मा बुद्ध, अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन ।
8-	हमारा समाज
9-	राष्ट्र ध्वज

उद्देश्य :

1- छात्र विभिन्न दिशाओं को पहचान सकेंगे तथ
के मानचित्र से अवगत हो सकेंगे ।

2- छात्र पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति एवं भारत
बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

3- छात्र उत्तर प्रदेश, कश्मीर, राजस्थान, केरल
के जीवन से परिचित हो सकेंगे ।

4- छात्र रामायण तथा महाभारत की कहानी

5- छात्र महात्मा बुद्ध, अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमा
की जीवनी तथा उनकी शिक्षाओं से परिचि

6- छात्र अपने समाज तथा राष्ट्र-ध्वज के महत्व

कुल प्रश्न संख्या = 91 पूर्ण

BLUE-PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN GEN. SCIENCE)

FOR CLASS : III

Objective/ Contents	Knowledge			Understanding			Skill		
	MC	FB	SA	MC	FB	SA	MC	FB	SA
1- दिशायें		1		1	1				
2- विद्यालय तथा गाँव का मानचित्र		1							1
3- हमारी पृथ्वी	1111	11	11		11				
4- हमारा देश तथा उसका धरातल	11	11			111				
5- हमारा प्रदेश, कश्मीर, राजस्थान, केरल तथा असम के बालकों का जीवन		1111	1111	1111	1111	1	1111		
6- रामायण तथा महाभारत की कहानी		1111	111	111	1111			1	
7- महात्मा बुद्ध, चन्द्रगुप्त अशोक, विक्रमादित्य तथा हर्षवर्धन	1111	11	111	1111	11		11		
8- हमारा समाज			1		111				
9- राष्ट्र-ध्वज		1	1						

MC = Multiple Choice Type

FB = Fill in the blanks type

SA = Short answer type.

APPENDIX - 'XXIV

BLUE - PRINT FOR

PREPARATION OF ACHIEVEMENT TEST IN SOCIAL STUDIES

CLASS V :

क्रम सं०	प्रकरण	प्रश्न रूप / प्रकार
1-	भारत देश की प्राकृतिक रचना	
2-	जलवायु	- विकल्प चयन
3-	प्राकृतिक वनस्पति ।	- रिक्त स्थानों की पूर्ति
4-	मिट्टी, सिंचाई एवं जल विद्युत ।	- लघु उत्तरीय प्रश्न
5-	कृषि, खनिजपदार्थ और उद्योग धंधे ।	- मानचित्र में भरना
6-	राज्य तथा संघीय क्षेत्र	- मिलान के प्रश्न
7-	हमारी दुनिया के विभिन्न देश	
8-	क्लाइव, मराठा शक्ति, बाजीराव प्रथम	
9-	हैदर अली और टीपू	
10-	लार्ड विलियम बैन्टिक और राजा राम मोहन राय ।	
11-	महाराजा रणजीत सिंह	
12-	1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम	
13-	नवजागरण, महात्मा गांधी, स्वतन्त्रता के बाद ।	
14-	संसद, राष्ट्रपति तथा मंत्री परिषद ।	
15-	उच्चतम न्यायालय ।	

उद्देश्य :

1- छात्र भारतवर्ष की प्रकृतिक रचना से परिचित हो सकेंगें ।
2- छात्र भारतवर्ष की जलवायु तथा प्रकृतिक वनस्पति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।
3- छात्र मिट्टी, सिंचाई एवं जल विद्युत से अवगत हो सकेंगें ।
4- छात्र अपने देश की कृषि, खनिज पदार्थ और उद्योग धन्धों से परिचित हो सकेंगें ।
5- छात्र राज्य तथा संघीय क्षेत्र से अवगत हो सकेंगें ।
6- छात्र दुनिया के विभिन्न देशों के बारे में अवगत हो सकेंगें ।
7- वे लार्ड-क्लाइव, शिवाजी तथा बाजीराव प्रथम के शासन प्रबन्ध तथा विशेषताओं से परिचित हो सकेंगें ।
8- छात्र हैदरअली, टीपू सुल्तान, लार्ड विलियम बैन्टिक, राजाराम मोहन राय तथा महाराजा रणजीत सिंह के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें ।

9- वे 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कारणों तथा उसके परिणामों से अवगत हो सकेंगे ।

10- छात्र महात्मा गाँधी का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान तथा स्वतन्त्रता के पश्चात भारत वर्ष की स्थिति से अवगत हो सकेंगे ।

11- छात्र संसद, राष्ट्रपति, मंत्रिपरिषद तथा उच्चतम न्यायालय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

कुल प्रश्न संख्या = 95
प्राप्तांक = 70

BLUE PRINT (ACHIEVEMENT TEST IN SOCIAL STUDIES)

FOR CLASS : V

Objective/Contents	Knowledge				Understanding				Skill		
	MC	FB	MT	SA	MC	FB	MT	SA	MC	FB	SA
1- भारत देश की प्राकृतिक रचना	111	111				11				11111	
2- जलवायु	111	1			11	11					
3- प्राकृतिक वनस्पति					11						
4- मिट्टी, खनिज पदार्थ और उद्योग धन्धे		111			1						
5- कृषि, खनिज पदार्थ और उद्योग धन्धे	1	111			111	1111					
6- राज्य और संघीय क्षेत्र	1	1					1				
7- हमारी दुनिया के विभिन्न देश		11					1				
8- कान्हव, मराठा शक्ति, बाजी राव प्रथम	11	1	111						1		
9- हैदरअली और टीपू		1									
10- लार्ड विलियम वैन्टिक और राजा राम मोहन राय		1		1	11						
11- महाराजा रणजीत सिंह		1		1	1				1		
12- 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम	1	1	11		1						
13- नव जागरण, महात्मागाँधी स्वतन्त्रता के बाद	1111			1111	1				11		
14- संसद, राष्ट्रपति तथा मंत्रि परिषद	11	111			1						
15- उच्चतम न्यायालय	1	11			1						

MC = Multiple Choice, FB = Fill in the blanks

MT = Matching type SA = Short answer type

उपलब्धि परीक्षण

विषय- सामाजिक अध्ययन

कक्षा—३

नाम बिनय कुमार

विद्यालय का नाम प्रा० पा० कटका

स्थान कटका जिला मिर्जापुर

निर्देश :

(अ) नीचे लिखे प्रश्नो मे प्रत्येक के तीन-तीन उत्तर दिये गये है। इनमे से प्रत्येक प्रश्न का जो उत्तर तुम्हें सबसे सही लगता हो उसके सामने सही (√) का निशान लगाओ।

१—यदि हम पूर्व की ओर मुह करके खडे हों तो हमारे दाहिने हाथ की ओर जो दिशा होगी वह है –

(अ) उत्तर

(ब) दक्षिण

(स) पश्चिम।

२—हमारी पृथ्वी का आकार है –

(अ) चपटा

(ब) चौकोर

(स) गोल।

३—पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है—

(अ) पश्चिम से पूर्व की ओर

(ब) पूर्व से पश्चिम की ओर।

(स) उत्तर से दक्षिण की ओर।

४— जल का छोटा भाग जो प्राकृतिक रूप से चारो ओर से थल से घिरा हो उसका नाम है—

(अ) खाडी

(ब) झील

(स) महासागर ।

५—अन्डमान निकोबार द्वीप समूह स्थित है—

(अ) बगाल की खाड़ी मे

(ब) अरब सागर मे

(स) तिब्बत मे ।

६—गरमी मे अपने देश मे बहुत अधिक गरमी पड़ती है—

(अ) मैदानों में

(ब) पहाड़ों पर

(स) रेगिस्तानी इलाको मे ।

७—दक्षिण भारत का अधिकतर भाग—

(अ) मैदानी है

(ब) पठारी है

(स) पर्वतीय है ।

८—जिस स्थान पर दो नदियाँ एक साथ मिलती है उसे—

(अ) मोहाना कहते है

(ब) उद्गम कहते है

(स) संगम कहते है ।

९—कानपुर जिन कारखानो के लिए प्रसिद्ध है, वे है—

(अ) डीजल इंजन

(ब) सूती वस्त्र और चमडा

(स) सीमेंट और रबर ।

१०— कश्मीर के लोगो का मुख्य धंधा है—

(अ) दस्तकारी का काम

(ब) बडे-बडे कल कारखानों मे काम

(स) चाय की खेती करना ।

११—जम्मू और कश्मीर राज्य भारत के—

(अ) दक्षिण भाग मे स्थित है

(ब) मध्य भाग मे स्थित है

(स) उत्तरी भाग मे स्थित है।

१२—डल झील तथा शालीमार बाग है—

(अ) आगरा मे

(ब) श्री नगर मे

(स) उदयपुर मे।

१३—राजस्थान का अधिकतर भाग—

(अ) हरे भरे जंगलो से ढका है

(ब) बालू के टीलो का रेगिस्तान है

(स) ऊँचे-ऊँचे पहाड़ो से ढका है।

१४—केरला भारत के जिस भाग मे स्थित है, वह है—

(अ) दक्षिणी भाग

(ब) उत्तरी भाग

(स) मध्य भाग।

१५—केरला मे वर्ष भर

(अ) मौसम बदलता रहता है

(ब) बहुत जाड़ा पड़ता है

(स) मौसम एक सा रहता है।

१६—संसार मे सबसे अधिक वर्षा होती है—

(अ) काजी रंगा मे

(ब) चेरा पूंजी मे

(स) करांची मे।

१७—असम मे स्थित है—

(अ) वैष्णव देवी का प्रसिद्ध मन्दिर

(ब) विन्ध्यवासिनी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर

(स) कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मन्दिर।

१८—असम मे कुछ जातियो के लोग फसल काटने पर जो त्योहार मनाते है उसे—

(अ) ओणम कहते है

(ब) बिहू कहते है

(स) पोंगल कहते है ।

१९—असम के पहाड़ी ढालों पर जिसकी खेती अधिक की जाती है वह है—

(अ) चाय

(ब) सेव

(स) खजूर ।

२०—असम में अधिक मिलता है—

(अ) रबर

(ब) पेट्रोलियम

(स) केसर ।

२१—गोस्वामी तुलसीदास जी ने जिस पुस्तक में राम की कथा लिखी उसका नाम है—

(अ) रामायण

(ब) महाभारत

(स) रामचरित मानस ।

२२—राजा दशरथ राजा थे—

(अ) अयोध्या के

(ब) हस्तिनापुर के

(स) कपिल वस्तु के ।

२३—सीता स्वयंवर में धनुष को तोड़ा था—

(अ) राम ने

(ब) रावण ने

(स) सभी राजाओं ने मिलकर ।

२४—भरत के कहने पर भी राम अयोध्या लौटने को तैयार नहीं हुए क्योंकि—

(अ) वे भरत की परीक्षा लेना चाहते थे

(ब) वे वन मे विचरना चाहते थे

(स) वे अपने पिता की आज्ञा का पालन करना चाहते थे ।

२५—रावण सीता को हरकर इसलिये ले गया था कि—

(अ) राम ने ताड़का और सुबाहु का वध किया था

(ब) राम और लक्ष्मण ने उसकी बहन सम्पूर्णखा का अपमान किया था

(स) सीता स्वयंवर मे उसे पराजय मिली थी।

२६—महाभारत का युद्ध हुआ था—

(अ) राम और रावण के बीच

(ब) कौरवो और पाण्डवों के बींच

(स) अशोक और कलिंग सम्राट के बीच।

२७—गीता का उपदेश दिया था—

(अ) भगवान श्री कृष्ण ने

(ब) भगवान बुद्ध ने

(स) भगवान महावीर ने।

२८—गीता के उपदेश का सार है—

(अ) नियमित पूजा पाठ करो

(ब) बड़ों का कहना मानो

(स) अपने कर्त्तव्य का पालन करो।

२९—सिद्धार्थ का मन संसार में नहीं लगता था क्योंकि वे—

(अ) संसार के दु:ख से दु:खी थे

(ब) अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नहीं थे

(स) राहुल को बन्धन मानते थे।

३०—अशोक को महान कहने का कारण है—

(अ) कलिंग विजय

(ब) बौद्ध धर्म का प्रचार

(स) प्रजा की भलाई के लिए किये गये कार्य।

३१—कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने—

(अ) सन्यास ले लिया

(ब) युद्ध करना बन्द कर दिया

(स) प्रजा को सताना शुरू कर दिया।

३२– चन्द्र गुप्त ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की क्योंकि—

(अ) उसने शकों को हराया था

(ब) वह हिन्दू धर्म का अनुयायी था

(स) उसके दरबार मे नवरत्न थे ।

३३—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में जो चीनी यात्री भारत आया था उसका नाम था—

(अ) फाह्यान

(ब) इत्सिंग

(स) ह्वेनसांग ।

३४—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों मे सबसे प्रसिद्ध थे —

(अ) कालिदास

(ब) बराहमिहिर

(स) आर्य भट्ट ।

३५—हर्ष सबसे अधिक प्रसिद्ध है—

(अ) अपनी विजयो के लिए

(ब) अपने नाटको के लिए

(स) प्रयाग मेले मे अपने दान के लिए ।

३६– हर्ष के समय में शिक्षा का केन्द्र था —

(अ) तक्षशिला

(ब) नालन्दा

(स) विक्रमशिला ।

३७ —हर्ष की बहन का नाम था—

(अ) राज्य श्री

(ब) जय श्री

(स) पूर्ण श्री ।

३८ —सड़क के बाईं ओर चलने से -

(अ) मित्रो से मुलाकात हो जाती है

(ब) घर पहुँचने मे सुविधा होती है

(स) दूसरो से टकराने का भय नही रहता ।

३९—समाज के नियमो का पालन न करने से—

(अ) समाज बिगड़ जाता है।

(ब) समाज उन्नति करता है

(स) व्यक्ति की इज्जत बढ़ती है।

४०—तिरंगे झंडे को प्रणाम करने का अर्थ होता है—

(अ) राष्ट्र को प्रणाम करना

(ब) अपने को प्रणाम करना

(स) देश का अपमान करना।

रिक्त स्थानो की पूर्ति करो—

४१—जब हम पूर्व दिशा की ओर मुह करके खड़े होते है तो हमारी पीठ की ओर ... दिशा होती है।

४२—पृथ्वी के बीचो-बीच कल्पित रेखा को जिस पर पृथ्वी घूमती है ... कहते है।

४३—पृथ्वी का उत्तरी आधा गोला ... कहलाता है।

४४—पृथ्वी पर थल के बड़े-बड़े भागो को ... कहते है।

४५—महासागर पृथ्वी के बड़े ... भाग को कहते है।

४६—हमारे देश का मुख्य धंधा ... है।

४७—भारत की राजधानी ... है।

४८—जब ऊँचाई से नदी का पानी नीचे गिरता है तो उसे ... कहते है।

४९—रिहन्द नदी पर पिपरी नामक स्थान पर एक ... है जहाँ पर बिजली पैदा की जाती है।

५०—उत्तर प्रदेश की राजधानी ... है।

५१—श्रीनगर की राजधानी ... है।

५२—राजस्थान का मुख्य पशु ... है।

५३—केरल के सागर तट पर छिछले पानी की जो झीले है उन्हे ... कहते है।

५४—केरल की मुख्य भाषा ... है।

५५—असम भारत के ... भाग मे स्थित है।

५६—रावण को हराने के बाद राम ने ... को लंका का राजा बनाया।

५७—राम की कथा सबसे पहले मुनि ... ने संस्कृत मे लिखी थी।

५८—पाण्डु के पुत्र ... कहलाये।

५९—युधिष्ठिर ... राज्य सौंपकर सभी भाइयो और द्रोपदी के साथ तपस्या करने चले गये।

६०—वीणा के तारो को बहुत मत खीचो नही तो वे ... जायेंगे।

६१— ज्ञान प्राप्त करने के बाद सिद्धार्थ .... कहलाये।

६२— महात्मा बुद्ध की याद मे अशोक ने विभिन्न स्थानों पर .... बनवाये।

६३— कालीदास के प्रसिद्ध नाटक का नाम .... है।

६४— हर्ष के दरबार के सबसे प्रसिद्ध कवि .... थे।

६५— हमारे झण्डे की सफेद पट्टी के बीच में एक .... है।

नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दो।

६६— पृथ्वी पर कुल कितने महाद्वीप तथा महासागर है ?

....

६७— भारत का उत्तरी भाग कैसा है ?

....

६८— दोआब किसे कहते है ?

....

६९— डेल्टा क्या है ?

....

७०— उत्तर प्रदेश में डीजल बनाने का कारखाना कहाँ पर स्थित है ?

....

७१— अपने देश मे पहाडी ढालो पर खेती किस प्रकार से की जाती है ?

....

....

७२— आगरा क्यों प्रसिद्ध है ?

ताज महल के लिए

७३— राजस्थान में पानी की कमी को पूरा करने के लिए क्या व्यवस्था की जा रही है ?

....

७४ - केरल की मुख्य फसलें कौन-कौन सी है ?

....

७५ —'ओणम' क्या है ?

....

७६— असम में दलदल क्यों होते है ?

....

७७—असम की मुख्य नदी कौन सी है ?

७८—असम में लकडी के मकान भूमि से कुछ ऊँचाई पर क्यों बनाये जाते है ?

७९—जहाँ पर अधिक वर्षा होती है वहाँ घर की छते ढालदार क्यो बनायी जाती है ?

८०—भारत के किस राज्य मे रबर के पेड़ पाये जाते है ?

८१—सीता स्वयंवर की क्या शर्त थी ?

धनुष तोणने केलिए

८२—कैकेयी ने राजा दशरथ से कौन से दो वरदान माँगे थे ?

(क) राम को वनवास भेजने केलिए

(ख)

८३—महाभारत का युद्ध किस-किसके बीच हुआ था ?

८४—महात्मा बुद्ध की शिक्षायें क्या है ?

८५ अशोक ने अपनी प्रजा की भलाई के लिये कौन से कार्य किए ?

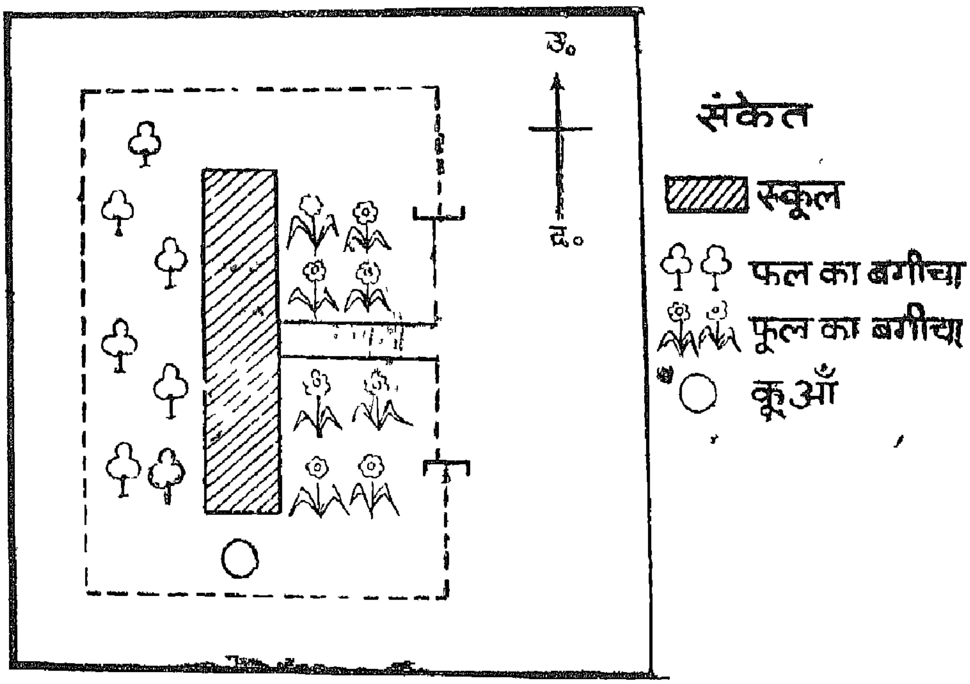
८६ अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु क्या किया ?

८७ फाह्यान ने भारत के विषय में क्या लिखा है ?

८८ हर्ष ने प्रजा की भलाई के लिये क्या कार्य किए ?

८९ टिकट लेते समय टिकट घर की खिड़की पर भीड़ क्यों नहीं लगानी चाहिए ?

९० राष्ट्रध्वज का प्रयोग किन अवसरों पर होता है ?



ऊपर दिये गये मानचित्र को देखकर यह बताओ कि—

(अ) मानचित्र में क्या-क्या दिखाया गया है ?

स्कूल बगीचा कुआँ

(ब) स्कूल किस स्थान पर है ?

(स) स्कूल का गेट किस दिशा में है ?

उत्तर पश्चिम

(द) फल का बगीचा स्कूल के किस दिशा में है ?

(स) कूआँ किस दिशा में है ?

उपलब्धि परीक्षा

विषय—सामाजिक अध्ययन

कक्षा—५

नाम श्री राजमती कुमारी : कक्षा (५)

विद्यालय का नाम स्कूल नवापुर बे०प्रा० पा०

स्थान नवापुरा जिला गाजीपुर

निर्देश :

(अ) निम्नलिखित प्रश्नो में प्रत्येक प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये है। इनमे से जो उत्तर तुम्हे सबसे सही लगता हो उसके सामने सही (✓) का निशान लगाओ।

१. उत्तरी भारत की प्रमुख नदी है—

✓ (क) नर्मदा

(ख) सिन्धु

(ग) गंगा।

२. हिमालय की सबसे ऊंची चोटी का नाम है—

(क) कांचन जंघा

(ख) नंदा देबी

(ग) एवरेस्ट। ✓

३. भारत के दक्षिण पश्चिम में अरब सागर तट के निकट की पहाड़ियो को कहते हैं—

(क) पूर्वी घाट

(ख) अरावली

(ग) पश्चिमी घाट।

४. अपने देश मे वर्षा की ऋतु है---

(क) मार्च से जून तक

(ख) जुलाई से अक्तूबर तक

(ग) नवम्बर से फरवरी तक ।

५ भारत मे जिन हवाओ से अधिक वर्षा होती है, उसका नाम है----

(क) दक्षिणी-पश्चिमी मानसून

(ख) उत्तरी-पूर्वी मानसून

(ग) उत्तरी-पश्चिमी मानसून ।

६. भारत मे सबसे अधिक वर्षा जिस स्थान पर होती है उसका नाम है----

(क) देहरादून

(ख) चेरापूँजी

(ग) त्रिपुरा ।

७. भारत के अधिक वर्षा वाले क्षेत्र मे जो हरे-भरे बन पाये जाते है, उन्हे----

(क) मानसूनी बन कहते है

(ख) सदाबहार बन कहते है

(ग) सुन्दर बन कहते है ।

८. मरुस्थलीय बन भारत के जिस राज्य मे पाये जाते है, उसका नाम है----

(क) कश्मीर

(ख) असम

(ग) राजस्थान ।

९. जिस प्रकार के बन मे काँटेदार वृक्ष होते है, वे है----

(क) सदाबहार बन

(ख) मरुस्थलीय बन

(ग) पतझड वाले बन ।

१०. हमारा राष्ट्रीय पक्षी है —

(क) मोर

(ख) तोता

(ग) हंस ।

११. भारत के जिस भाग में लाल मिट्टी पाई जाती है, वह है

(क) दक्षिण का मैदानी भाग

(ख) दक्षिण का पठारी भाग

✓(ग) उत्तर का मैदानी भाग ।

१२. भारत मे अधिकतर कपास की होती है---

(क) काली मिट्टी वाले क्षेत्र मे

(ख) लाल मिट्टी के क्षेत्र में

✓(ग) दोमट मिट्टी के क्षेत्र मे ।

१३ भारत जिस खनिज को विदेश भेजता है वह है—

✓(क) पेट्रोल

(ख) कच्चा लोहा

(ग) बाक्साइट ।

१४. पश्चिम बंगाल मे जूट के कारखाने अधिक है क्योंकि—

(क) यहाँ जूट की खेती की जाती है

✓(ख) यहाँ के लोग जूट का सामान अधिक पसन्द करते हैं

(ग) जूट द्वारा बनी चीजे उपयोगी होती है ।

१५ हिमाचल प्रदेश स्थित है—

(क) अरावली के पर्वतीय क्षेत्र मे

(ख) पश्चिमी घाट के पर्वतीय क्षेत्र मे

✓(ग) हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र मे ।

(आ) नीचे लिखे हुए वाक्यो के खाली स्थानो को कोष्ठको मे दिये हुए ठीक शब्दों से भरो ।

१ ...नहर...दक्षिण भारत के पठारी भाग मे सिचाई का मुख्य साधन है ।
(तालाब, कूएँ, नहर) ।

२ इस समय भारत में सबसे अधिक जल-विद्युत ...महाराष्ट्र...राज्य तैयार करता है ।
(महाराष्ट्र, राजस्थान, असम) ।

३. गेहूँ की खेती सबसे अधिक भारत के ...उत्तरी...क्षेत्र मे होती है ।
(उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी) ।

४ ....बनाने में मैंगनीज की आवश्यकता पड़ती है । (इस्पात, सोना, चाँदी) ।

५. हमारे देश मे अधिकतर कोयला · बिहार ··· ··· ·· राज्य मे पाया जाता है।
(राजस्थान, केरल, बिहार)

६. कागज··· ··· वनस्पति··· ···· ·· बनता है।
(खनिज से, प्राकृतिक वनस्पति से, मैंगनीज से)

७. ··· ···· बम्बई ····जरी के कपडो के लिए प्रसिद्ध है। (बम्बई, कानपुर, बनारस)

८. जमशेदपुर का प्रसिद्ध लोह-इस्पात कारखाना · उडीसा ··· ·· मे स्थित है।
(बंगाल उड़ीसा, बिहार)

९. कोणार्क का सूर्य मन्दिर राजस्थान ··में स्थित है। (उडीसा, मद्रास, राजस्थान)

१०, सूती वस्त्रो की सबसे अधिक मिले राजस्थान मे है। (राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र)

११. एशिया ससार का सबसे···· ··बड़ा··· ··· ····महाद्वीप है। (छोटा, बड़ा, नीचा)

१२. चीन की राजधानी ··केन्टन······है। (केन्टन, शाघाई, पेकिंग)

१३. संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा नगर···न्यूयार्क····है। (न्यूयार्क, वाशिंगटन, शिकागो)

१४. आस्ट्रेलिया ससार का सबसे ·· ··· बड़ा ··· ···· ···महाद्वीप है। (छोटा, बड़ा, नीचा)

(इ) नीचे सूची (अ) मे कुछ राज्यो के नाम दिये गये है। (ब) सूची मे उनसे सम्बन्धित राजधानियो के नाम है। प्रत्येक राज्यो के सामने दिये गये कोष्ठक मे (ब) सूची से सही उत्त· चुनकर उसकी सख्या लिखो।

(अ)		(ब)
पश्चिम बंगाल	(३)	१. बम्बई
उत्तर प्रदेश	(६)	२. शिलांग
उड़ीसा	( )	३. कलकत्ता
महाराष्ट्र	( )	४. जयपुर
मेघालय	( )	५. भुवनेश्वर
त्रिपुरा	( )	६. लखनऊ
राजस्थान	( )	७. मद्रास
विहार	( )	८. भोपाल
गुजरात	( )	९ अगरतला
तमिलनाडु	( )	१०. पटना
		११ गांधी नगर

५०३/

३. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर केवल एक वाक्य मे दो—

१. जाडे के दिनो मे उत्तरी भारत मे वर्षा किन हवाओ से होती है ?

....

२. कीकड़, बबूल, नागफनी आदि किस प्रकार के जलवायु में पाये जाने वाले वृक्ष है ?

....

३. पहाडी ढालों पर खेती किस प्रकार का खेत वनाकर की जाती है ?

....

४. खेतों मे गोबर सडी हुई वनस्पति आदि की खाद क्यो डालते है ?

इसलिए गोबर डाला जाता है कि खाद हो जाता है ....

५ बिजली किन-किन चीजो से पैदा की जाती है ?

विद्युत और मशीन से बिजली पैदा की जाती है ....

६. बंगाल के लोगो का मुख्य भोजन क्या है ?

बंगाल में चावल अधिकतर होती है इस लिए बंगाल के लोगो के मुख्य भोजन है

७. भारत के किस खान से सोना निकाला जाता है ?

भारत में से चाय की खेती असम में होती है ....

८. भारत मे चाय की खेती कहाँ पर होती है ?

....

९. अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर किन लोगो का तीर्थ स्थान है ?

अमृतसर ....

१०. भारत के कितने मुख्य प्राकृतिक भाग है ?

....

११. जापान हर क्षेत्र मे क्यो आगे बढा हुआ है ?

....

१२. सऊदी अरब की खनिज सम्पदा क्या है ?

....

१३. यूरोप एशिया के किस ओर स्थित है ?

....

१४. सोवियत संघ मे किस प्रकार के कल-कारखाने अधिक है ?

....

१५. कनाडा मे अधिक सर्दी क्यों पडती है ?

....

१६. 'पिरामिड' क्या है ?

१७. मिश्र को नील नदी का वरदान क्यों कहते है ?

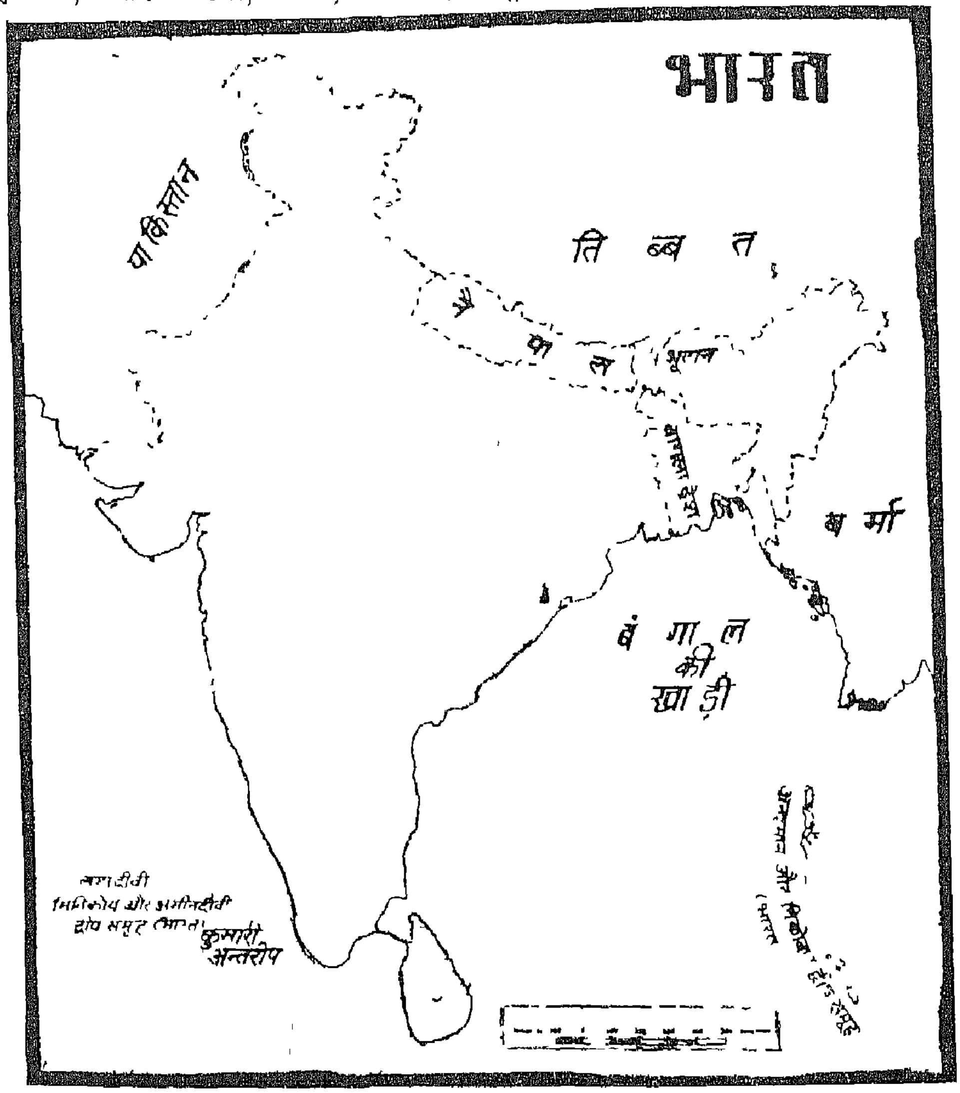
१८. संयुक्त राज्य अमेरिका मे किस प्रकार के उद्योग धन्धे है ?

१९. अमेजन नदी किस महाद्वीप मे है ?

२०. न्यूजीलैण्ड के लगभग आधे निवासी खेती क्यो करते है ?

भारत के मानचित्र मे निम्नलिखित को भरो-

हिमालय, अरावली गंगा, दिल्ली, कलकत्ता, जम्मू और काश्मीर, अण्डमान और निकोबार द्वीप।



(अ) निम्न प्रश्नो मे से प्रत्येक प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये है। इनमे से जो उत्तर सबसे सही लगता हो, उसके सामने सही (√) का निशान लगा दो----

१. भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक था----
(अ) राबर्ट क्लाइव
(ब) लार्ड कार्नवालिस
(स) लार्ड विलियम बेंटिक।

२. बाजीराव प्रथम की सबसे बड़ी अभिलाषा थी—
(अ) अंग्रेजो के व्यापार को समाप्त करना
(ब) मुगलो की सहायता करना
(स) स्वतन्त्र हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना।

३. लार्ड विलियम बेंटिंग का शासनकाल प्रसिद्ध है –
(अ) कम्पनी के राज्य विस्तार के लिये
(ब) जमीन की उचित व्यवस्था के लिये
(स) सामाजिक बुराइयो को दूर करने के लिये।

४. राजाराम मोहनराय ने जिस मत का प्रचार किया था उसे कहते है—
(अ) आर्य समाज
(ब) ब्रह्म समाज
(स) प्रार्थना समाज।

५. राजा रणजीत सिंह के नेतृत्व के कारण -
(अ) सिक्खो मे फूट पड़ गई
(ब) सिक्ख संगठित हो गये
(स) सिक्ख अंग्रेजो के दुश्मन हो गये।

६ प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का सूत्रपात किया था----
(अ) मंगल पाण्डे ने
(ब) तात्या टोपे ने
(स) रानी लक्ष्मी बाई ने।

७. प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख कारण था—
(अ) भारतीय नरेशो का आपसी मतभेद
(ब) भारतीय सैनिको की मनमानी
(स) अंग्रेजो की दो रंगी नीति।

८ 'उठो, जागो और सेवा कार्य मे लग जाओ' यह नारा दिया था—

(अ) महादेव गोविन्द रानाडे ने

(ब) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने

(स) स्वामी विवेकानन्द ने ।

९. भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये गाँधी जी ने जो रास्ता अपनाया था—

(अ) त्याग और तपस्या का

(ब) अहिंसा और सहयोग का

(स) खूनी क्रान्ति का ।

१०. भारत को स्वतन्त्रता मिली—

(अ) १८५७ ई० में

(ब) १७५७ ई में

(स) १९४७ ई० मे ।

११. स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री थे—

(अ) राजगोपाला चारी

(ब) डा० राजेन्द्रप्रसाद

(स) पं० जवाहरलाल नेहरू ।

१२. भारत से जाते-जाते अंग्रेज हमारे देश को —

(अ) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना गये

(ब) दो टुकडो मे विभाजित कर गये

(स) सैनिक दृष्टि से मजबूत बना गये ।

(१३) संसद का प्रमुख कार्य है –

(अ) देश के लिए कानून बनाना

(ब) देश मे चुनाव कराना

(स) नागरिको के अधिकारों की रक्षा करना ।

(१४) भारत के राष्ट्रपति का चुनाव होता है—

(अ) जनता द्वारा

(ब) संसद द्वारा

(स) विधान सभाओ तथा संसद के सदस्यः द्वारा ।

(१५) देश का सबसे बड़ा न्यायालय है—

(अ) जिला न्यायालय

(ब) उच्च न्यायालय

(स) उच्चतम न्यायालय।

(ब) नीचे लिखे हुये वाक्यों के खाली स्थानो को कोष्ठको मे दिये हुये ठीक शब्दो से भरो—

(१) शिवाजी के वंश का अन्तिम प्रभावशाली राजा .... था।
(शाहू, बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव प्रथम)

(२) हैदरअली को लोगो के .... की अच्छी परख थी। (शक्ति, हौसला, गुण-दोषो)

(३) राजाराम मोहनराय के समय मे बंगाल मे .... का प्रचलन था।
(सती प्रथा, छुआ-छूत, नर बलि)

(४) सिक्खो के बिखरे हुये टुकड़ों को पुनः एक सूत्र मे बाँधने का श्रेय .... को है।
(गुरु नानक, गुरु गोविन्द सिंह, रणजीत सिंह)

(५) प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का प्रारम्भ .... मे हुआ।
(१६५७ ई०, १७५७ ई०, १८५७ ई०)

(६) बिना .... की स्वीकृति के कोई कानून नहीं बन सकता।
(उपराष्ट्रपति, मन्त्रि परिषद, राष्ट्रपति)

(७) लोक-सभा के चुनाव मे सभी स्त्री-पुरुष जिनकी आयु .... की हो चुकी हो, मत दे सकते है। (१८ वर्ष, २१ वर्ष, २५ वर्ष)

(८) प्रधान मन्त्री .... के बहुमत दल का नेता होता है।
(लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा)

(९) देश का उच्चतम न्यायालय .... मे स्थित है। (दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास)

(१०) उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशो की नियुक्ति .... करता है।
(प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल)

(स) नीचे (अ) सूची मे कुछ व्यक्तियो के नाम दिये हैं। (ब) सूची मे उनसे सम्बन्धित कुछ कथन है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने कोष्ठक मे जो उत्तर ठीक हो उसकी संख्या लिखो—

(अ)		(ब)
(१) रानी लक्ष्मी बाई	( )	(१) ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।
(२) महादेव रानाडे	( )	(२) ने रामकृष्ण मिशन स्थापित किया।
(३) श्रीमती एनीबेसेन्ट	( )	(३) ने समाज के कमजोर वर्गों के लिये काम किया।
(४) स्वामी दयानन्द सरस्वती	( )	(४) ने १९१४ मे इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की।

(अ)		(ब)
(५) स्वामी विवेकानन्द	( )	(५) पंचवर्षीय योजनायें प्रारम्भ की।
(६) महात्मा गांधी	( )	(६) ने देश से बाहर 'आजाद हिन्द फौज' बनाई।
(७) सुभाष चन्द्र बोस	( )	(७) ने सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल स्थापित किया।
(८) भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद	( )	(८) ने वेदो का सन्देश सारे भारत मे फैलाया।
(९) पं० जवाहर लाल नेहरू	( )	(९ ने प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मे अपने प्राणो आहुति दी।
(१०) लालबहादुर शास्त्री	( )	(१०) बम और तमंचे लेकर आजादी की लड़ाई में कूद पडे।

(द) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

(१) ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना का क्या उद्देश्य था ?

सुगलों के समय में था रहे धन्य-धान्य और सोने चाँदी से भरा

(२) प्लासी के युद्ध का क्या परिणाम रहा ?

उ० प्लासी के युद्ध बुलाइव और सिराजुद्दौला के बीच हुआ था।

(३) छत्रसाल ने अपने राज्य का तिहाई भाग बाजीराव को क्यों दिया ?

(४) टीपू और अंग्रेजो के बीच हुए अन्तिम युद्ध का क्या परिणाम रहा ?

(५) राजाराम मोहन राय के समय में समाज में कौन-कौन सी बुराइयाँ थी ?

(६) महाराजा रणजीत सिंह मे कौन-कौन से गुण थे ?

(७) हिन्दुस्तानी सैनिको ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह क्यो किया ?

(८) १९७१ में भारत और पाकिस्तान के बीच हुये युद्ध का क्या परिणाम निकला ?

(९) संसद के दोनो भागो के क्या नाम है ?

(१०) उच्चतम न्यायालय के मुख्य कार्य क्या है ?

लब्धि परीक्षण

विषय — सामाजिक अध्ययन

कक्षा — ३

नाम ... लक्ष्मी देवी ...

विद्यालय का नाम ... मैदानी बे० गाड़ी गौरी प्रा० शाला दूरसंगोत ...

स्थान ... जिला ...

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के तीन-तीन उत्तर दिये गये है। इनमें से जो उत्तर सही हो उस पर सही (✓) का निशान लगाओ।

१. पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है —

(अ) पश्चिम से पूर्व की ओर

✓(ब) पूर्व से पश्चिम की ओर

(स) उत्तर से दक्षिण की ओर।

२. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह स्थित है —

✓(अ) बंगाल की खाडी मे

✓(ब) अरब सागर में

✓(स) भूमध्य सागर मे।

३. गरमी मे अपने देश मे बहुत अधिक गरमी पड़ती है—

(अ) मैदानों में

✓(ब) पहाडों पर

✓(स) रेगिस्तानी इलाको में।

४. दक्षिण भारत का अधिकतर भाग —

(अ) मैदानी है

✓(ब) पठारी है

(स) पर्वतीय है।

५. जिस स्थान पर दो नदियाँ एक साथ मिलती है उसे—

(अ) मोहाना कहते है

(ब) उद्गम कहते है

(स) सगम कहते है ।

६. कश्मीर के लोगो का मुख्य धंधा है—

(अ) दस्तकारी का काम

(ब) बड़े-बड़े कल कारखानों मे काम

(स) चाय की खेती करना ।

७. जम्मू और कश्मीर राज्य भारत के—

(अ) दक्षिण भाग मे स्थित है

(ब) मध्य भाग मे स्थित है

(स) उत्तरी भाग मे स्थित है ।

८. राजस्थान का अधिकतर भाग—

(अ) हरे भरे जंगलो से ढका है

(ब) बालू के टीलो से ढँका है

(स) ऊँचे-ऊँचे पहाड़ो से ढँका है ।

९. केरल भारत के जिस भाग मे स्थित है, वह है—

(अ) दक्षिणी भाग

(ब) उत्तरी भाग

(स) मध्य भाग ।

१०. केरल मे वर्ष भर

(अ) मौसम बदलता रहता है

(ब) बहुत जाड़ा पड़ता है

(स) मौसम एक सा रहता है ।

११. असम में स्थित है—

(अ) वैष्णव देवी का प्रसिद्ध मन्दिर

(ब) विन्ध्यवासिनी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर

(स) कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मन्दिर ।

१२. असम के पहाडी ढालों पर जिसकी खेती अधिक की जाती है वह है—

(अ) चाय

(ब) सेव

(स) खजूर।

१३. गीता के उपदेश का सार है—

(अ) नियमित पूजा पाठ करो

(ब) बडों का कहना मानो

(स) अपने कर्तव्य का पालन करो।

१४ सिद्धार्थ का मन संसार में नही लगता था क्योंकि वे—

(अ) संसार के दुःख से दुःखी थे

(ब) अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नही थे

(स) राहुल को बन्धन मानते थे।

१५. अशोक को महान कहने का कारण है—

(अ) कलिंग विजय

(ब) बौद्ध धर्म का प्रचार

(स) प्रजा की भलाई के लिए किये गये कार्य।

१६. कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने—

(अ) सन्यास ले लिया

(ब) युद्ध करना बन्द कर दिया

(स) प्रजा को सताना शुरू कर दिया।

१७. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय मे जो चीनी यात्री भारत आया था उसका नाम था—

(अ) फाह्यान

(ब) इत्सिंग

(स) ह्वेनसांग।

१८. हर्ष सबसे अधिक प्रसिद्ध है—
(अ) अपनी विजयों के लिए
(ब) अपने नाटको के लिए
(स) प्रयाग मेले मे अपने दान के लिए ।

१९. हर्ष के समय मे शिक्षा का केन्द्र था—
(अ) तक्षशिला
(ब) नालन्दा
(स) विक्रमशिला ।

२०. सड़क के बाईं ओर चलने से—
(अ) मित्रो से मुलाकात हो जाती है
(ब) घर पहुँचने मे सुविधा होती है
(स) दूसरों से टकराने का भय नहीं रहता ।

२१. समाज के नियमो का पालन न करने से—
(अ) समाज बिगड जाता है
(ब) समाज उन्नति करता है
(स) व्यक्ति की इज्जत बढती है ।

नीचे लिखे प्रश्नों मे खाली स्थानो को भरो—

२२. जब हम पूरब दिशा की ओर मुँह करके खडे होते हैं तो हमारी पीठ की ओर ……दिशा होती है ।

२३. हमारे देश का मुख्य धंधा ……खेती…… है ।

२४. भारत की राजधानी ……दिल्ली…… है ।

नीचे लिखे प्रश्नो का उत्तर दो—

२५. उत्तर प्रदेश में डीजल इंजन बनाने का कारखाना कहाँ पर स्थित है ?
……वाराणसी……

२६. आगरा क्यो प्रसिद्ध है ?
……ताज महल……

२७. सीता स्वयंबर की क्या शर्त थी ?
……शिव जी धनोसको तोडना……

२८. कैकेयी ने राजा दशरथ से कौन से दो बरदान माँगे थे ?

(क) भरत को राजगद्दी

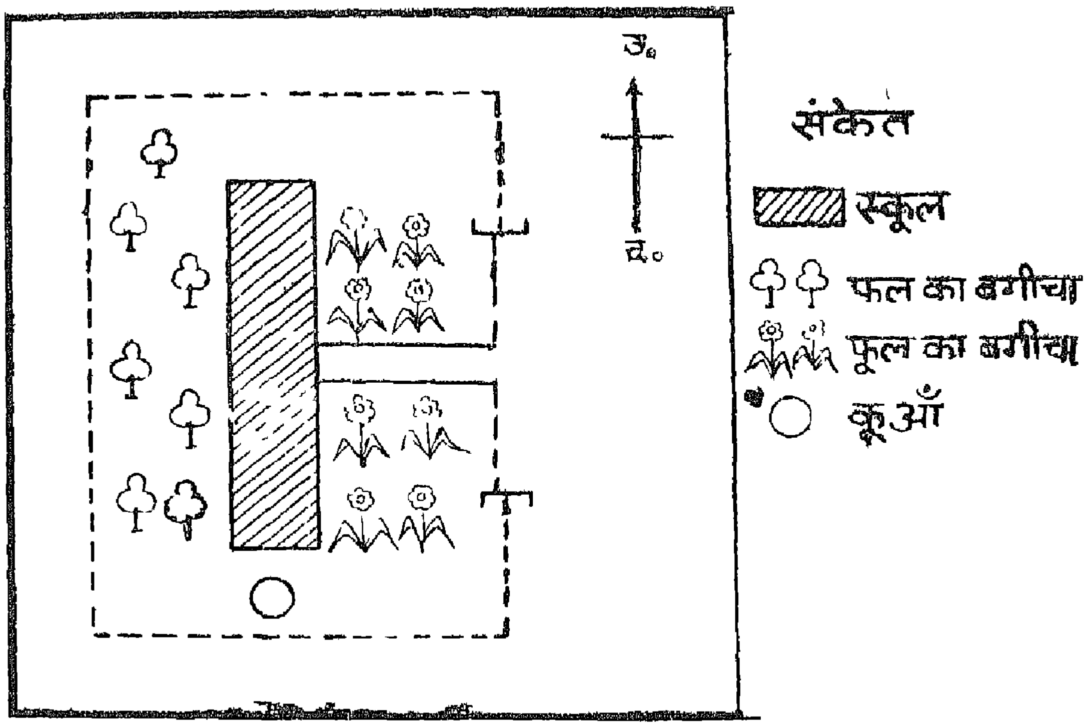
(ख)

२९. राष्ट्रध्वज का प्रयोग किन अवसरों पर होता है ?

स्वतंत्रता दिवस गणतंत्र

फल फूल स्कूल कुआँ

३०. नीचे दिये गये मानचित्र को देखकर यह बताओ कि—



(अ) मानचित्र में क्या-क्या दिखाया गया है ?

फल फूल स्कूल कुआँ

(ब) स्कूल किस स्थान पर है ?

बीच में है।

(स) स्कूल का गेट किस दिशा मे है ?

पूरब

(द) फल का बगीचा स्कूल के किस दिशा मे है ?

पश्चिम

(द) कूँआ किस दिशा मे है ?

दक्षिण

उपलब्धि परीक्षण

विषय—सामाजिक अध्ययन

कक्षा—५

नाम ...... किरन ...... सिंह ......
विद्यालय का नाम ...... क० जू० हा० स्कूल मैदेनी वाराणसी ......
स्थान ...... मैदेनी ...... जिला ...... वाराणसी ......

निर्देश :

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के तीन-तीन उत्तर दिये गये है। इनमें से जो उत्तर सही हो उस पर सही (√) का निशान लगाओ।

---

१. भारत मे सबसे अधिक वर्षा जिस स्थान पर होती है उसका नाम है—

(क) देहरादून
✓(ख) चेरापूँजी
(ग) त्रिपुरा।

२. जिस प्रकार के बन मे काँटेदार वृक्ष होते हे, वे है—

(क) सदाबहार बन
✓(ख) मरुस्थलीय बन
(ग) पतझड वाले बन

३. भारत मे अधिकतर कपास की होती है—

(क) काली मिट्टी वाले क्षेत्र मे
✓(ख) लाल मिट्टी के क्षेत्र मे
(ग) दोमट मिट्टी के क्षेत्र मे।

४. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक था—

(क) राबर्ट क्लाइव
(ख) लार्ड कार्नवालिस
✓(ग) लार्ड विलियम बेंटिक।

५. राजा रणजीत सिंह के नेतृत्व के कारण—
   (क) सिक्खों में फूट पड़ गई
   (ख) सिक्ख संगठित हो गये
   (ग) सिक्ख अंग्रेजों के दुश्मन हो गये।

६. प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का सूत्रपात किया था—
   (क) मंगल पाण्डे ने
   (ख) तांत्या टोपे ने
   (ग) रानी लक्ष्मीबाई ने।

७. भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये गांधी जी ने जो रास्ता अपनाया वह था—
   (क) त्याग और तपस्या का
   (ख) अहिंसा और सहयोग का
   (ग) खूनी क्रान्ति का।

८. स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री थे—
   (क) राजगोपालाचारी
   (ख) डा० राजेन्द्रप्रसाद
   (ग) पंडित जवाहरलाल नेहरू।

९. भारत से जाते-जाते अंग्रेज हमारे देश को
   (क) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना गये
   (ख) दो टुकड़ों में विभाजित कर गये
   (ग) सैनिक दृष्टि से मजबूत बना गये।

नीचे लिखे हुए वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठकों में दिये हुए ठीक शब्दों से भरो।

१०. गेहूं की खेती सबसे अधिक भारत के ...... दक्षिणी ...... क्षेत्र में होती है।
(उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी)।

११. हमारे देश में अधिकतर कोयला ...... राजस्थान ...... राज्य में पाया जाता है।
(राजस्थान, केरल, बिहार)

१२. सूती वस्त्रों की सबसे अधिक मिलें मध्यप्रदेश में है। (राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र)

१३. एशिया संसार का सबसे ...... बड़ा ...... महाद्वीप है। (छोटा, बड़ा, नीचा)

१४. चीन की राजधानी पेकिंग है। (केन्टन, शघाई, पेकिंग)

१५. संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा नगर वाशिंगटन है। (न्यूयार्क, वाशिंगटन, शिकागो)

१६. शिवाजी के वश का अन्तिम प्रभावशाली राजा शाहू था।
(शाहू, बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव प्रथम)

१७. प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम का प्रारम्भ १८५७ ई० मे हुआ।
(१६५७ ई०, १७५७ ई०, १८५७ ई०)

१८. प्रधान मंत्री लोकसभा के बहुमत दल का नेता होता है।
(लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा)

१९. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।
(प्रधान मत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल)

निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर केवल एक वाक्य मे दो—

२०. पहाड़ो ढालो पर खेती किस प्रकार का खेत बनाकर की जाती है ?

पहाड़ी ढालो पर खेती हल से जोती जाती है।

२१. बंगाल के लोगो का मुख्य भोजन क्या है ?

बंगाल के लोगो का मुख्य भोजन मछली चावल है।

२२. भारत मे चाय की खेती कहाँ पर होती है ?

भारत मे चाय की खेती आसाम मे होती है।

२३. यूरोप एशिया के किस ओर स्थित है ?

यूरोप एशिया दक्षिण की ओर स्थित है।

२४. अमेजन नदी किस महाद्वीप में है ?

अमेजन नदी अमेरिका महाद्वीप मे है।

२५. ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना का क्या उद्देश्य था ?

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना अंग्रेजो के राज करना

२६. संसद के दोनो भागो के क्या नाम है ?

संसद के दो लोक सभा राज सभा

२७. नीचे सूची (अ) में कुछ राज्यों के नाम दिये गये है। (ब) सूची में उनसे सम्बन्धित राजधानियों के नाम हैं। प्रत्येक राज्यों के सामने दिये गये कोष्ठक में (ब) सूची से सही उत्तर चुनकर उसकी संख्या लिखो।

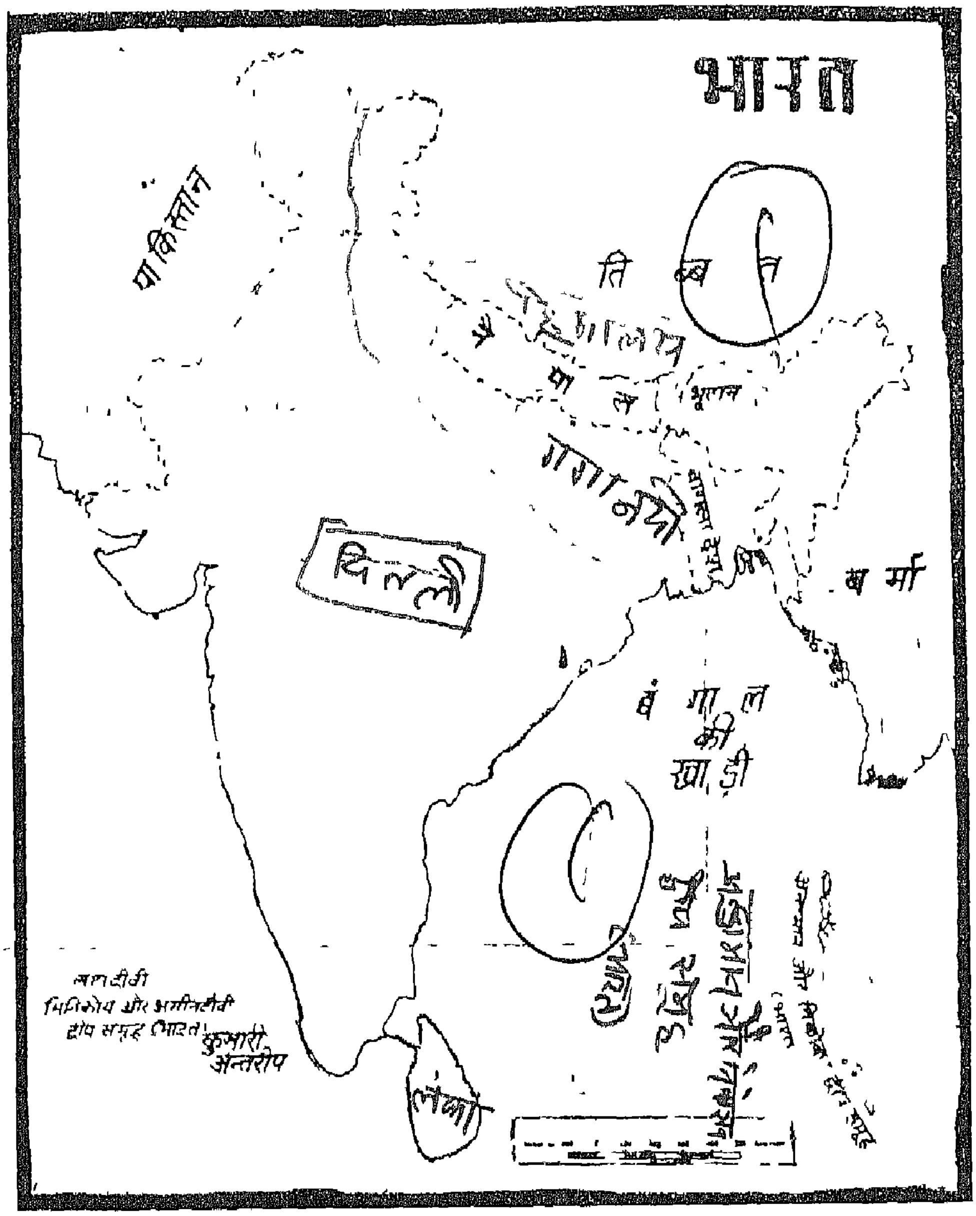
(अ)		(ब)
पश्चिम बंगाल	( )	१. बम्बई
उत्तर प्रदेश	( )	२. शिलांग
उड़ीसा	( )	३. कलकत्ता
महाराष्ट्र	( )	४ जयपुर
मेघालय	( )	५. भुवनेश्वर
त्रिपुरा	( )	६. लखनऊ
राजस्थान	( )	७. मद्रास
बिहार	( )	८. भोपाल
गुजरात	( )	९. अगरतला
तमिलनाडु	( )	१०. पटना
		११ गांधी नगर

२८. नीचे (अ) सूची मे कुछ व्यक्तियों के नाम दिये हैं। (ब) सूची मे उनसे सम्बन्धित कुछ कथन है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने कोष्ठक में जो उत्तर ठीक हो उसकी संख्या लिखो --

(अ)		(ब)
(१) रानी लक्ष्मी बाई	( )	(१) ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।
(२) महादेव रानाडे	( )	(२) ने रामकृष्ण मिशन स्थापित किया।
(३) श्रीमती एनीबेसेन्ट	( )	(३) ने समाज के कमजोर वर्गों के लिये काम किया
(४) स्वामी दयानन्द सरस्वती	( )	(४) ने १९१४ मे इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापनी की।
(५) स्वामी विवेकानन्द	( )	(५, पचवर्षीय योजनाये प्रारम्भ की।
(६) महात्मा गांधी	( )	(६) ने देश से बाहर 'आजाद हिन्द फौज' बनाई।
(७) सुभाष चन्द्र बोस	( )	(७) ने सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल स्थापित किया।
(८) भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद	( )	(८) ने वेदो का सन्देश सारे भारत मे फैलाया।
(९) पंडित जवाहर लाल नेहरू	( )	(९) ने प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में अपने प्राणो आहुति दी।
(१०) लालबहादुर शास्त्री	( )	(१०) बम और तमचे लेकर आजादी की लड़ाई मे कूद पड़े।

१९. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित को भरो—

हिमालय, अरावली, गंगा, दिल्ली, कलकत्ता, जम्मू और कश्मीर तथा अण्डमान और निकोबार द्वीप।



सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक

(Socio-Economic-Status Index)

परिचय :

नाम .... कक्षा ....

विद्यालय .... ग्राम/शहर .... जिला ....

जाति .... धर्म ....

जन्म स्थान .... शहर/गाँव ....

शहर में रहने की अवधि .... वर्ष लगभग ।

शोधकर्त्ता/निर्देशन कर्त्ता हेतु

Total Score
Category

हस्ताक्षर ....

दिनांक ....

निर्देश :— तुम्हारे परिवार और तुम्हारे विषय मे कुछ बाते इस सूचांक में पूछी गई है । प्रश्नों को ध्यान से पढो और सही-सही उत्तर दो। जहाँ कही दो उत्तर दिये है वहाँ सही उत्तर को घेर दो और जो उत्तर तुम पर लागू नही होता उसे काट दो । जहाँ कोई बात समझ मे न आवे परीक्षक से पूछ लो ।

(क) परिवार :

१. क्या तुम्हारे घर में बाबा, चाचा, बड़े भाई आदि सभी का खाना एक ही चौके-चूल्हे पर होता है?
   हाँ / नही

२. तुम्हारे परिवार मे कुल कितने लोग है ?

३. तुम्हारे कितने सगे भाई-बहन है ?

(ख) शिक्षा :

१. क्या तुम्हारे माता-पिता शिक्षित है ?

   (अ) माता : हाँ / नही

   (ब) पिता : हाँ / नही

   यदि हाँ, तो उनकी पढाई कहाँ तक हुई है ?

   (अ) माता : कक्षा .... डिग्री ....

   (ब) पिता : कक्षा .... डिग्री ....

२. तुम्हारे भाई-बहन किस कक्षा तक पढ चुके हैं या किस कक्षा में पढ़ रहे हैं।

१. कक्षा	५. कक्षा ... ...
२. कक्षा	६ कक्षा ... ...
३. कक्षा	७ कक्षा ... ...
४. कक्षा	८ कक्षा ... ...

३ तुम घर पर अपने माता-पिता, भाई-बहन और परिवार के लोगों से किस भाषा मे बातचीत करते हो ?

(अ) देहाती भाषा जैसे– भोजपुरी, अवधी आदि।

(ब) खडी बोली (हिन्दी)

(स) प्रान्तीय भाषाये जैसे– बंगला, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, मराठी आदि।

(द) अन्य ... ... ।

(ग) आय एवं आय के साधन :

१. तुम्हारे परिवार मे कितने लोग कमाते है ?
... ... लोग

२. तुम्हारे परिवार मे नीचे लिखे आय के साधनो मे से जो हों उनके सामने दिये गये चौकोर में सही (✓) का निशान लगा दो।

नौकरी ☐, खेती ☐, व्यवसाय ☐
दुकानदारी ☐, मजदूरी ☐, अन्य ☐

३. तुम्हारे माता-पिता पैसा कमाने के लिए क्या कार्य करते हैं ?

(अ) माता ... ...

(ब) पिता ... ...

४. यदि नौकरी करते हों, तो उनके पद का नाम लिख दो।

(अ) माता : पद ... ... वेतन ... ...

(ब) पिता : पद ... ... वेतन ... ...

५. तुम्हारे परिवार के पास कितनी खेती है ?
... ... बीघा

(घ) घर एवं घर के सामान :

१. तुम्हारे परिवार मे कितने हल की खेती होती है ? ... ... हल की

२. तुम्हारे घर में कितने गाय-भैंस है ? ... ...

३. तुम्हारा मकान जैसा हो उसके आगे छपे चौकोर में सही (✓) का चिन्ह लगा दो—

कई मंजिल वाला ☐, बडा बंगला ☐, एक मंजिल वाला ☐,
छोटा बंगला ☐, पक्का साधारण ☐, कच्चा खपरैल से छाया हुआ ☐,
कच्चा फूस से छाया ☐, झोपड़ी ☐

४. तुम्हारे मकान में कितने कमरे है ? ....२ छः........ कमरे

५, तुम कैसे मकान में रहते हो ?

अपने ☑, किराये के ☐

६. क्या तुम्हारे मकान मे बिजली है ? हाँ / नहीं

७. तुम्हारे घर मे नीचे लिखी चीजो मे से जो चीजें मौजूद हों उनके सामने दिये गये चौकोर में सही (√) का चिह्न लगा दो—

(क) कार ☐, ट्रैक्टर ☐, ट्रक ☐, जीप ☐, मोटर साइकिल ☑,
स्कूटर ☐, बैलगाड़ी ☐, रिक्शा ☐, साइकिल ☑

(ख) आटा चक्की ☐, आरा मशीन ☐; स्पेलर ☐, थ्रेसर ☐,
धन कुट्टी ☐, क्रासर ☐।

(ग) हीटर ☐, गैस का चूल्हा ☐, गीजर ☐, फ्रीज ☐।

(घ) रहट ☐, ट्यूब वेल ☐, पम्पिंगसेट ☐।

(च) ट्रांजिस्टर ☐, रेडियो ☑, टेलीविजन ☐ आदि।

८. तुम्हारे घर के बरतन कैसे हैं—

स्टीनलेस स्टील के ☑, फूल के ☐, ताँबे के ☐,
पीतल के ☐, एल्यूमीनियम के ☐।

९. तुम्हारे घर खाना किस चीज पर पकता है—

गोहरी या कन्डे पर ☐, लकड़ी के चूल्हे पर ☑, पत्थर के कोयले पर ☐,
लकड़ी के कोयले पर ☐, स्टोव पर ☑; गैस के चूल्हे पर ☐,
इलेक्ट्रिक चूल्हे पर ☐।

१०. तुम्हारे घर खाना / सब्जी आदि किस माध्यम (चीज) में पकता है—

तीसी के तेल मे ☐, सरसो के तेल में ☑, डालडा में ☑,
रिफाइन्ड तेल में ☐, शुद्ध घी में ☐।

११. नास्ते पर तुम इनमे से अक्सर जिन चीजो को खाते हो उनके आगे सही का चिन्ह लगा दो—

दूध-रोटी या डबल रोटी ☐, टोस्ट—चाय ☐, दलिया-दूध ☐,
फल-दूध ☐, अंडा-दूध ☐, रोटी --चाय ☑, खाली चाय ☐,
गुड़-भूजा ☐, नमकीन-चाय ☐।

१२. तुम्हारे पास कैसे वस्त्र हैं ?

सूती ☐, खादी के ☑, टेरीकॉट के ☑, टेरीन के ☐

सिल्कन के ☐, ऊनी ☑

१३. तुम्हारे पास कितने जोड़ी कपड़े है ?

दो से कम ☑, ३ से ५ जोड़ी तक ☐, ६ जोड़ी या अधिक ☐।

१४. तुम्हारे पास कितने जोड़ी जूते हैं ?

दो से कम ☑, ३ से ५ ☐, ६ जोड़ी ☐।

(च) अन्य

१. क्या तुम्हारे परिवार में कोई राजनैतिक नेता है ?

(जैसे मिनिस्टर, एम० पी०, एम० एल० ए०, नगर महापालिका सदस्य,

पंच, सरपंच आदि) हाँ/नहीं

२. यदि हाँ तो उनका पद और स्वयं से सम्बन्ध लिखिए। पद........................./ सम्बन्ध..........

३. यदि कोई कभी पहले राजनीतिक नेता रहा हो, तो उसका पद और स्वयं से सम्बन्ध लिखिए

पद........................./ सम्बन्ध..............

सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक

(Socio-Economic-Status Index)

परिचय :

ग्राम .... कक्षा ....

विद्यालय .... ग्राम / शहर .... जिला ....

जाति .... धर्म ....

जन्म स्थान .... ग्राम .... शहर .... जिला ....

शहर मे रहने की अवधि .... वर्ष लगभग।

सगे भाई बहनो की संख्या ....

घर एवं परिवार मे बोल-चाल की भाषा ....

शोधकर्त्ता / निर्देशन कर्त्ता हेतु

Total Score ....

Category

हस्ताक्षर ....

दिनांक ....

निर्देश :— तुम्हारे परिवार और तुम्हारे विषय में कुछ बातें इस सूचांक में पूछी गई हैं। प्रश्नों को ध्यान से पढ़ो और सही-सही उत्तर दो। जहाँ कहीं दो उत्तर दिये हैं वहाँ सही उत्तर को घेर दो और जो उत्तर तुम पर लागू नहीं होता उसे काट दो। जहाँ कोई बात समझ में न आवे परीक्षक से पूछ लो।

(क) परिवार :

१. क्या तुम्हारे घर मे बाबा, चाचा, बडे भाई आदि सभी का खाना एक ही चौके-चूल्हे पर होता है?
   हाँ / नही

२. तुम्हारे परिवार मे कुल कितने लोग है ? .... लोग

(ख) शिक्षा :

१. क्या तुम्हारे माता-पिता शिक्षित है ?

   (अ) माता : हाँ / नही

   (ब) पिता : हाँ / नही

   यदि हाँ, तो उनकी पढाई कहाँ तक हुई है ?

   (अ) माता : कक्षा .... डिग्री ....

   (ब) पिता : कक्षा .... डिग्री ....

२. तुम्हारे भाई-बहन किस कक्षा तक पढ़ चुके है या किस कक्षा मे पढ रहे हैं।

१. कक्षा	५. कक्षा ....
२. कक्षा	६. कक्षा ....
३. कक्षा	७. कक्षा ....
४. कक्षा	८. कक्षा ....

(ग) आय एवं आय के साधन :

१. तुम्हारे परिवार मे कितने लोग कमाते है ? .... लोग

२. तुम्हारे परिवार मे नीचे लिखे आय के साधनों में से जो हो उनके सामने दिये गये चौकोर में सही (√) का निशान लगा दो।

   नौकरी ☐, खेती ☐, व्यवसाय ☐

   दुकानदारी ☐, मजदूरी ☐, अन्य ☐

३. तुम्हारे माता-पिता पैसा कमाने के लिए कौन सा कार्य करते है ?

   अ) माता ....

   (ब) पिता ....

४. यदि नौकरी करते हों, तो उनके पद का नाम और वेतन लिख दो।

   (अ) माता : पद .... वेतन ....

   (ब) पिता : पद .... वेतन ....

५. तुम्हारे परिवार के पास कितनी खेती है ? .... बीघा

(घ) घर एवं घर के सामान :

१. तुम्हारे परिवार में कितने हल की खेती होती है ?... ... ...हल की

२. तुम्हारे घर में कितने गाय-भैंस हैं ? ... ...

३. तुम्हारा मकान जैसा हो उसके आगे छपे चौकोर में सही (√) का चिन्ह लगा दो—

कई मंजिल वाला ☐, बड़ा बंगला ☐, एक मंजिल वाला ☐,
छोटा बंगला ☐, पक्का साधारण ☐, कच्चा खपरैल से छाया हुआ ☐,
कच्चा फूस से छाया ☐, झोपड़ी ☐

४. तुम्हारे मकान में कितने कमरे है ? .. .. कमरे

५. तुम कैसे मकान में रहते हो ?

अपने मकान में ☐, किराये के मकान मे ☐

६. क्या तुम्हारे मकान मे बिजली है ? हाँ / नही

७. तुम्हारे घर मे नीचे लिखी चीजो मे से जो चीजे मौजूद हों उनके सामने दिये गये चौकोर में सही (√) का चिन्ह लगा दो —

(क) कार ☐, ट्रैक्टर ☐, ट्रक ☐, जीप ☐, मोटर साइकिल ☐,
स्कूटर ☐, बैलगाडी ☐, रिक्शा ☐, साइकिल ☐,

(ख) आटा चक्की ☐, आरा मशीन ☐, स्पेलर ☐,
थ्रेसर ☐, धन कुट्टी ☐, क्रासर ☐।

(ग) हीटर ☐, गैस का चूल्हा ☐, गीजर ☐, फ्रीज ☐।

(घ) रहट ☐, ट्यूब वेल ☐, पम्पिंगसेट ☐।

(च) ट्रांजिस्टर ☐, रेडियो ☐, टेलीविजन ☐।

८. तुम्हारे घर के बरतन कैसे है—

स्टीनलेस स्टील के ☐, फूल के ☐, ताँबे के ☐,
पीतल के ☐, एल्यूमीनियम के ☐।

९. तुम्हारे घर खाना किस चीज पर पकता है—

गोहरी या कन्डे पर ☐, लकड़ी के चूल्हे पर ☐, पत्थर के कोयले पर ☐,
लकड़ी के कोयले पर ☐, स्टोव पर ☐, गैस के चूल्हे पर ☐,
इलेक्ट्रिक चूल्हे पर ☐।

१०. तुम्हारे घर खाना / सब्जी आदि किस माध्यम (चीज) मे पकता है —

तीसी के तेल मे ☐ , सरसों के तेल मे ☐ , डालडा मे ☐ ,
रिफाइन्ड तेल मे ☐ , शुद्ध घी मे ☐ ।

११. नास्ते पर तुम इनमे से अक्सर जिन चीजों को खाते हो उनके आगे सही का चिन्ह लगा दो—

दूध-रोटी या डबल रोटी ☐ , टोस्ट–चाय ☐ , दलिया-दूध ☐ ,
फल-दूध ☐ , अंडा ☐ , रोटी–चाय ☐ , खाली चाय ☐ ,
गुड-भूजा ☐ , नमकीन-चाय ☐ ।

१२. तुम्हारे पास कैसे वस्त्र है ?

सूती ☐ , खादी के ☐ , टेरीकॉट के ☐ , टेरीन के ☐
सिल्क के ☐ , ऊनी ☐ ।

१३. तुम्हारे पास कितने जोड़ी कपडे है ?

दो से कम ☐ , ३ से ५ जोड़ी तक ☐ , ६ जोडी या अधिक ☐ ।

१४ तुम्हारे पास कितने जोडी जूते है ?

दो से कम ☐ , ३ से ५ जोडी ☐ , ६ जोडी या अधिक ☐ ।

(च) अन्य —

१. क्या तुम्हारे परिवार मे कोई राजनैतिक नेता है ?
(जैसे मिनिस्टर, एम० पी०, एम० एल० ए०, नगर महापालिका सदस्य, पंच, सरपंच आदि) हॉ/नही

२. यदि हाँ तो उनका पद और स्वयं से सम्बन्ध लिखो । पद ··· ··· ··· ··· ···/ सम्बन्ध · ···

३. यदि कोई कभी पहले राजनैतिक नेता रहा हो, तो उसका पद और स्वय से सम्बन्ध लिखिए ।
पद····· ··· ··· ··· ····/ सम्बन्ध··· ··· ··· ····

गोपनीय

सामान्य मानसिक योग्यता

की

अशाब्दिक परीक्षा

NON-VERBAL GROUP TEST
OF

GENERAL MENTAL ABILITY

BY

M. C. JOSHI & R. B. TRIPATHI

BANARAS HINDU UNIVERSITY,

VARANASI.

इन्हें भरो :—

१. नाम ____________________ अनुक्रमांक ____________________

२. पिता का नाम ____________________ व्यवसाय तथा मासिक आय ____________________

३. कक्षा ____________________ वर्ग ____________________

४. विद्यालय का नाम ____

५. जन्म तिथि ____________________ आज की तिथि ____________ आयु ______

	प्राप्तांक
परीक्षा एक	....
परीक्षा दो	....
परीक्षा तीन	....
परीक्षा चार	....
योग	....

परीक्षक